आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
अप्रैल–2024, RNI-50756
वर्ष-33, अंक-401 मूल्य 60/-

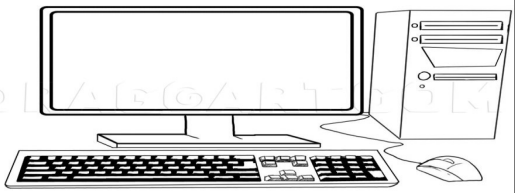

अपनी बात...

प्रिय समस्त,

इधर व्यस्तताओं का दौर बहुत बढ़ गया है। किन्तु प्रतिबद्धताएं तो निभानी ही हैं।

श्री ओमप्रकाश कुक्की की बूंदी में ऐतिहासिक, प्रागैतिहासिक खोजों, उनके द्वारा किए गए काम से इतना प्रभावित हुआ कि मैंने भी अपनी अवस्था (63 वर्ष) का ध्यान नहीं किया और आनन फानन में बूंदी पहुंच गया। "पागल हो गए हो क्या?" पत्नियां अमूमन तौर पर, इस अवस्था में इन्हीं शब्दों से अपने प्रेम का इजहार करती हैं। हमारी स्थिति अपवाद वाली नहीं है। जो इसे जोर जोर से पढ़ेंगे वो खुद को अपवाद वाले वर्ग का ही प्रमाणित करने का प्रयास करेंगे। खैर, मैंने सर ऊपर उठाकर देखा तो पत्नी सर पर खड़ी थीं और मुझे वुडलैंड का जूता पहनते हुए देख रही थीं। "क्यों? इसमें पागल होने जैसी क्या बात है? जूता ही तो पहन रहा हूं।"

"बूंदी में सूखे पहाड़ों पर जा रहे हो, इन भारी जूतों की बजाय भईया (छोटे बेटे को वह इसी तरह बुलाती है) के स्पोर्ट्स शूज़ पहन जाओ, हल्के भी रहेंगे और फिसलेंगे भी नहीं।"

बात सही लगी और वही जूते पहन कर यहां आया हूं। बूंदी में कल और आज दोपहर गूगल 39 डिग्री सेल्सियस तापमान बता रहा था पर रेवा नदी के गरदड़ा स्थान पर तपती चट्टानों में तापमान 42 डिग्री से कम न रहा होगा। दो दिन में बूंदी की गर्मी ने मुझे झुलसा दिया है और मेरे अंदर जो हीरानंद वात्स्यायन वाली एक्सप्लोरेटिव आत्मा थी उसका दाह संस्कार कर चुकी है, आज की यात्रा। बूंदी से 35 किलोमीटर दूर मुझे ओमप्रकाश अपनी मोटरसाइकिल पर बैठा कर ले गए।

हमारी यात्रा प्रातः साढ़े आठ बजे शुरू हुई।

ओमप्रकाश जी ने एक स्थान पर रुक कर, बूंदी के समोसे और कचौरी के कॉम्बिनेशन का मजा चखाया।

एक दो स्थानों पर रुकते, चाय पानी पीते हुए गरदड़ा पहुंचे। ओमप्रकाश पिछले 40 वर्षों से बूंदी के अघोषित प्रमुख गाइड हैं, अति व्यस्त।

गरदड़ा पहुंच कर ओमप्रकाश ने नदी के दूसरी पार जो जगह दिखाई वह लगभग ढाई सौ मीटर की ढलान उतर कर, फिर नदी को पार करके सतह से 30–40 फीट ऊपर थी। उस जगह को देख कर तो मेरे प्राण ही सूख गए। दिल्ली की भाषा में कहूं तो मतलब यह हुआ कि लगभग 20 मंजिल की तो ढलान थी जिसके पत्थरों पर निगाह रख के नदी तक पहुंचना था। फिर लगभग छिछली नदी के पत्थरों को पार करके दूसरी तरफ पहुंचना था, फिर लगभग दो मंजिल, पत्थरों की चढ़ाई करनी थी। और, नदी के उस पार से फिर 20 मंजिल की चढ़ाई करके मोटरसाइकिल तक आना...

उफ्फ! मित्रगण, मैं किसी तरह जान जोखिम में डाल कर इस काम को पूरा कर पाया, आप प्रयास मत करिएगा।

रॉक पेंटिंग को देखने केलिए उन पथरीली गुफानुमा स्थानों पर लेट और रेंग के जाना पड़ा यह मैं ही जानता हूं।

ओमप्रकाश मेरे से 6 वर्ष बड़े हैं पर उनके उत्साह का मुकाबला मैं नहीं कर सकता। वे और साइट दिखलाना चाहते थे पर मेरी जिज्ञासा उड़न छू हो चुकी थी। मुझे बूंदी की यात्रा मात्र इसलिए करनी पड़ी कि मैं ओमप्रकाश के इस क्षेत्र में किए गए कार्य को एप्रिशिएट कर सकूं, जान सकूं कि कितने परिश्रम और विषम परिस्थितियों में वे अपने अंदर पत्थरों के प्रति प्रेम को पाले हुए हैं।

वास्तव में देखा जाए तो ओमप्रकाश भारतीय संस्कृति और इतिहास के उन्नयन में इतना बड़ा योगदान दे रहे हैं कि उसे शब्दों में बयान करना कठिन है। गरदड़ा से लौटने में एक घंटे का समय लगा। मैं ही जानता हूं कि उनकी मोटरसाइकिल की तपती सीट पर मैं कैसे सर्किट हाउस पहुंच पाया। सब कुछ भस्म हो गया था। कमरे में पहुंच कर एसी चला कर, नहाने घुस गया। शरीर के हर अंग से खारा पसीना बह रहा था। मस्तक से आंखों के कोरो में पहुंचता पसीना, आंखों को झुलसाए दे रहा था। नहाने से कुछ सुकून मिला।

बूंदी की गर्मी पर दो पंक्तियां नहाते समय बनीं ;

मुझसे बेइंतहा प्यार करता है
आइना मुझे पहचानने से इंकार करता है...

ओमप्रकाश कुक्की पर बीच बीच में और प्रस्फुटन होता रहेगा।

सादर,

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304
पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।
प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

अप्रैल-2024

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	23 मार्च : सुरेन्द्र सुकुमार, गोविंद व्यास, प्रेम जनमेजय	समाचार	6
3	समाचार : कोबरा में साहित्यकारों का सम्मान	समाचार	9
4	जीह्वा कमाल की	गोवर्धन दास बिन्नाणी	13
5	दो लघुकथाएं	यशोधरा भटनागर	13
6	पर उपदेश कुशल बहुतेरे	शकुन त्रिवेदी	14
7	चमकता जूता	अरुण धर्मावत	15
8	आज़ादी के आंदोलन में कस्तूरबा...	आकांक्षा यादव	16
9	ग़ज़ल	डॉ अखिलेश जायसवाल	18
10	सबका रखते ध्यान प्रभु श्री रामजी	गोवर्धन दास बिन्नाणी	19
11	(उपन्यास) सुर न सधे क्या गाउँ मैं –2	रामानुज अनुज	22
12	कथा : उल्का नहीं तोता	संजय कुमार सिंह	29
13	कथा : कजरी	सतीश बब्बा	34
14	कहानी : सर! आपके आशीर्वाद का फल है	रमेश मनोहरा	36
15	प्रकृति....नव संवत्सर	गौरीशंकर वैश्य	40
16	व्यंग्य : जल है तो कल है	विनोद कुमार विक्की	46
17	कविता	संजय जांगिड़	49
18	कविता	सोनल मंजू श्री ओमर	49
19	भागो नहीं दुनिया को बदलो : राहुल सांकृत्यायन	कृष्ण कुमार यादव	51
20	बाल कहानी : सोना समझ गयी	प्रिया देवांगन 'प्रियू'	57
21	अनुकरणीय भगवान श्री राम	पद्मा अग्रवाल	60
22	कहानी : चौखट	रामेश्वर महादेव वाढेकर	64
23	लघुकथा : भ्रष्टाचार	अशोक दर्द	68

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

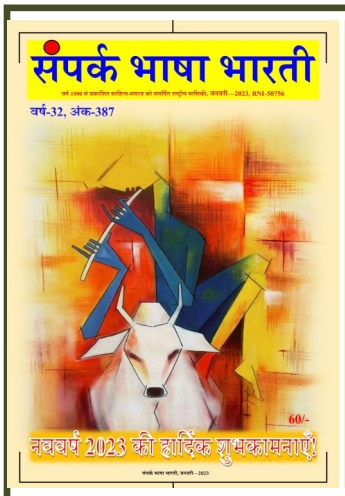

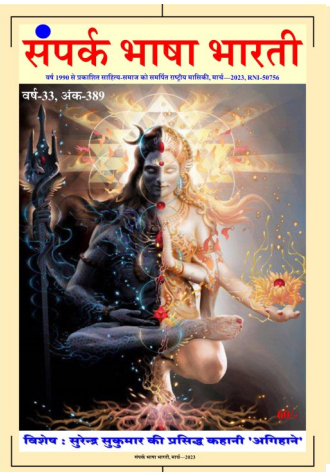

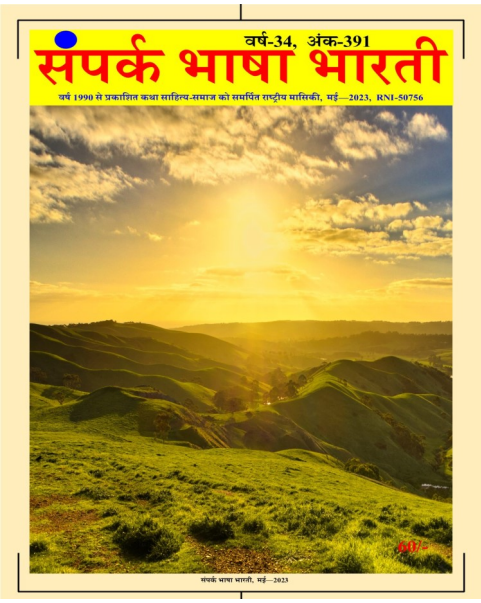

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

23 मार्च को दो विशेष आयोजन: सुरेन्द्र सुकुमार-गोविंद व्यास/प्रेम जनमेजय हीरक जयंती

सुरेन्द्र सुकुमार जी अपनी पुत्री के पास गुरुग्राम आए हुए हैं। उनकी दिली इच्छा थी कि वे गोविंद व्यास जी (गोपाल प्रसाद व्यास जी के सुपुत्र) से मिल कर उनके स्वास्थ्य की जानकारी ले लें।

क्रमशः दूसरे और तीसरे नंबर की उनकी इच्छा थी कि वे त्रिलोकदीप से मिलते हुए चित्रा मुद्गल भाभी जी से मिलने मयूर विहार जाते। त्रिलोकदीप जी भी चित्रा जी से मिलने को उत्सुक थे।

पर हुआ ऐसा कि त्रिलोकदीप जी शाम को प्रेम जनमेजय के कार्यक्रम केलिए ही निकलना चाहते थे। उन्होंने सुझाव दिया कि सुरेन्द्र शाम को प्रेम जनमेजय के कार्यक्रम में आ जाएँ तो वहीं चित्रा जी से भी मुलाक़ात हो जाएगी।

सुरेन्द्र सुकुमार देर रात तक दिल्ली रुकना नहीं चाहते थे।

जब उन्हें इस प्रस्ताव की जानकारी दी तो उन्हों ने चित्रा जी से दरियाफ्त की। चित्रा जी ने स्वास्थ्य की बात कह कर प्रेम के आयोजन में न जाने की बात कही और उन्हें भी सुझाव दिया कि वे उनसे मिलने आने का कष्ट न करें क्योंकि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

इस के बाद यह तय पाया गया कि सुरेन्द्र सुकुमार को ब्रह्मदेव शर्मा जी प्रातः ही गुरुग्राम से अपने घर लेकर आएंगे। और वहाँ से वे 12.30 बजे गोविंद व्यास जी के आवास बी-52, गुलमोहर पार्क पहुंचेंगे।

इन दो कार्यक्रमों के चलते मैंने सोचा कि गोविंद व्यास जी से मुलाक़ात के बाद हम दो बजे दोपहर तक घर लौट आएंगे और फिर शाम को ही प्रेम जी के आयोजन केलिए निकलेंगे।

पर, सारा कार्यक्रम गड्डमड्ड हो गया।

गोविंद व्यास जी अस्वस्थ चल रहे हैं, 80 वर्ष के हो चुके हैं। शरीर में शर्करा बहुत बनने की वजह से समस्या है। बता रहे थे सांस फूलने लगती है। अधिक श्रम नहीं कर सकते हैं। एक अटेंडेंट (1100 रुपए प्रतिदिन) रात भर केलिए आता है जो उन्हें दवा देता है, स्नान इत्यादि करा देता है।

गोविंद व्यास जी की संतानें आस्ट्रेलिया में रहती हैं।

गोविंद व्यास जी की भी स्थिति ठीक डॉक्टर शेरजंग गर्ग जी वाली हो चली है।

गोविंद व्यास जी से तय मुलाक़ात के बाद ब्रह्मदेव जी का आग्रह रहा कि उनके निवास पर चल कर भोजन भी किया जाय। अगर उनका यह अनुरोध स्वीकार किया जाता तो निश्चित रूप से शाम को प्रेम जी के आयोजन में पहुंचना संदेहास्पद हो जाता।

सुकुमार जी और ब्रह्मदेव जी के अनुरोध के आगे बेबस होना पड़ा।
गुलमोहर पार्क से फ्रीडम-फाइटर्स एन्क्लेव श्री शर्मा जी के आवास पर पहुंचे, हम लोगों के साथ ही सुकुमार जी के बाल-सखा विनोद क्वात्रा जी भी मौजूद थे।
ब्रह्मदेव जी के यहाँ बहुत ही सुरुचिपूर्ण भोजन प्राप्त कर के मैं लगभग 6 बजे शाम घर के पास पहुंचा।
परंतु, ऐसे में यदि घर पहुंचता तो निश्चित मानिए मैं दूसरे आयोजन में जाने लायक न बचता। पर क्या करता? कार तो घर में खड़ी थी। और

प्रेम जी को दिया जानेवाला पुष्प गुच्छ भी...
फिर निर्णय लिया और घर नहीं गया, घर के पास पहुंच कर दूसरा ऑटो किया और प्रेम जी के आयोजन स्थल पर ठीक 7 बजे शाम इंडिया हैबिटेट सेंटर पहुँच गया।

(2)

प्रवेश द्वार के अंदर ही प्रेम जी और उनकी पत्नी आशा जी का शूट चल रहा था। अतिथि भी पहुँचने लगे थे।
शीघ्र ही श्री उपेंद्र रैना, बलराम अग्रवाल, महेश दर्पण, सुरेश ऋतुपर्ण, हरीश नवल जी का साथ मिल गया। इस आयोजन में आने का बहुत बड़ा लाभ या उपलब्धि रही श्री सुरेश ऋतुपर्ण जी से आत्मीय मुलाक़ात। फिर, श्री राम सरन जोशी जी से 1985 के बाद पहली मुलाक़ात। मैं जब जोशी जी से पहली बार पंजाब भवन, चंडीगढ़ में मिला था तो वे नई दुनिया की तरफ से पंजाब चुनाव कवर करने आए थे और मैं, शिखरवार्ता की तरफ से। इस आत्मीय मुलाक़ात और फोन के आदान प्रदान के बाद श्री राहुल देव जी से मिलना हुआ। राहुल देव माया पत्रिका के दिल्ली ब्यूरो प्रमुख हो कर आए थे किन्तु मैं उनसे पूर्व ही श्री भूपेंद्र कुमार स्नेही जी के समय में माया को छोड़ चुका था। मेरे साथ उपेंद्र रैना जी पूरे समय मौजूद रहे। मैंने उपेंद्र जी के पिता जी श्री मोहन निराश जी जो कि आकाशवाणी नई दिल्ली में विदेश प्रसारण सेवा के निदेशक थे केलिए नियमित कार्यक्रम किया करता था। मैं उन्हीं दिनों आकाशवाणी से हिन्दी समाचार भी पढ़ा करता था। राहुल देव जी समक्ष ही जब उन्होंने अपने पिता जी के साथ मेरे एसोसिएशन के बात की तो संजय निरूपम जी का भी जिक्र उठा। दिल्ली के संघर्ष के दिनों में मैं उन्हें श्री मोहन निराश जी के पास ले कर गया था जिन्हों ने उन्हें 75 रुपये प्रति सप्ताह हिन्दी अनुवाद का कार्य दिया था....

राहुल देव जी ने पूछा और जानना चाहा कि क्या संजय निरूपम ने उस का कुछ प्रतिकार किया?

मेरा उत्तर रहा, मुझे प्रतिकार मांगने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

श्री प्रेम जनमेजय जी का यह साहित्यिक आयोजन एक साहित्यिक पर्व सरीखा रहा। इंडिया नेट बुक्स के डॉक्टर संजीव, ममता कालिया, प्रताप सहगल, अरुण माहेश्वरी, प्रभात कुमार, सुभाष चंदर, ज्ञान चतुर्वेदी सहित तमाम साहित्यकार इस आयोजन का हिस्सा रहे।

प्रेम जी के पुत्र, पौत्र और पौत्रियों ने इस आयोजन को संगीतमय कर के अविस्मरणीय बना दिया। डॉक्टर संजीव ने "प्रेम तुम जियो हजारों साल साल के दिन हों पचास हज़ार" गा कर सब को विभोर कर दिया।

इस आयोजन के बाद घर लौटने में रात के लगभग 11 बज गए।

अविस्मरणीय और अभूतपूर्व आयोजन के लिए प्रेम जनमेजय जी को

अशेष शुभकामनायें.....

अपना वाहन न लेजाने के दो लाभ आज आपको साझा कर रहा हूं।

पहला, यदि गोविंद व्यास जी के आवास पर कार से गया होता तो निश्चित मानिए मैं ब्रह्मदेव शर्मा जी का आतिथ्य हरगिज़ न स्वीकार कर पाता और एक आत्मीय स्नेहयुक्त अवसर और परिचय से वंचित रह जाता।

सुकुमार जी ने भी गुरुग्राम पहुंच कर ब्रह्मदेव जी के आतिथ्य पर आभार प्रकट करते हुए कहा "ब्रह्मदेव ने हक़ अदा कर दिया।"

दूसरा, प्रेम जी के आयोजन में तो और फायदा हुआ, यदि अपने वाहन से गया होता तो भोजनोपरान्त मैं तत्काल ही घर केलिए निकल लिया होता किंतु उपेंद्र रैना जी के साथ सरलता पूर्वक भोजन के बाद निकला तो कार तक पहुंचने और उसे पार्किंग से निकालने की जल्दी नहीं थी सो राहुल देव से आत्मिक मुलाकात भी हुई और चर्चा तथा फोटो भी।

बाहर निकले तो सुरेश ऋतुपर्ण जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्हों ने अपनी कार में हमें साथ लिया, उपेंद्र और मुझे जोरबाग मेट्रो पर पहुंचाया और कार में सफर के दौरान आकाशवाणी के युव वाणी के गठन पर बहुत सी बातें शेयर की।

चलते समय उन्हों ने अपने कार्यालय, केके बिड़ला फाउंडेशन पर भी निमंत्रित किया, यह कहते हुए कि वहां बैठ कर और चर्चा की जाएगी।

निश्चय मानिए यह स्नेह तभी प्राप्त हुआ जब अपना वाहन हमारे पास नहीं था...

"कोबरा, चित्रकूट में किया गया साहित्यकारों का सम्मान"

सतीश "बब्बा"

शोभा देवी स्मृति पुस्तकालय कोबरा द्वारा आयोजित साहित्य सम्मान वितरण समारोह के तहत शोभा देवी मिश्रा की प्रथम पुण्यतिथि पर 22 मार्च 2024 को एक वृहद कार्यक्रम ग्राम कोबरा अपभ्रंश कौबरा (चित्रकूट) में आयोजित किया गया; जिसमें देश के विभिन्न प्रांतों से एवं देश के कोने - कोने से आए 51 साहित्यकारों ने भाग लिया।

समारोह की सभा का शुभारंभ नियत समय 10 बजे सुबह से शुरू हुआ। जिसमें सभा की अध्यक्षता प्रयागराज (इलाहाबाद) की धरती से आईं प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कहानीकार/ कवियित्री श्रीमती जया मोहन ने किया।

मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा सिरसा से आईं वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती डॉ शील कौशिक ने दायित्व संभाला और विशिष्ट अतिथि के रूप में अजमेर राजस्थान से पधारीं आईं साहित्यकार एवं कवियित्री श्रीमती अनीता गंगाधर को सुशोभित किया गया।

सभा का संचालन प्रयागराज से आए वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार/ साहित्यांजलि प्रभा के संपादक डॉ भगवान प्रसाद उपाध्याय ने किया।

मंच की शोभा सुधाकांत मिश्र बेलाला चाकघाट (रीवा) म प्र, डॉ मेजर शक्ति राज कौशिक सिरसा, हरियाणा एवं गंगाधर शर्मा हिंदुस्तान अजमेर राजस्थान, डॉ राम लखन चौरसिया प्रसिद्ध साहित्यकार लेखक जो प्रयागराज से हैं, एवं प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कहानीकार प्रतापगढ़ से आए प्रेमकुमार त्रिपाठी ने शोभा बढ़ाया।

सभा के प्रथम सर्ग में कहानी संग्रह मेरी शोभा लेखक सतीश बब्बा, कहानी/ कविता संग्रह घर पर मां थी लेखक सतीश बब्बा की दसवीं एवं ग्यारहवीं पुस्तक का विमोचन और कहानी संग्रह बुक्का बुआ लेखक प्रेमकुमार त्रिपाठी इन सभी पुस्तकों का विमोचन किया गया।

उपस्थित साहित्यकारों के आगमन पर आयोजक/ व्यवस्थापक सतीश बब्बा (सतीश चन्द्र मिश्र) ने साहित्यकारों के आगमन पर स्वागत करते हुए चंद शब्दों में कहा कि, "मेरे पास जो आंसुओ का सागर था वह मेरी शोभा के जाने से सूख गया है और जो चंद आंसुओं के कतरे बचे हैं उन्हें मैं प्रेमाश्रु कहूं या और कुछ आप सभी को सादर समर्पित करता हूं और मेरे पास कुछ है ही नहीं!"

सभा को राम लखन चौरसिया बागीश और गंगाधर शर्मा हिंदुस्तान अजमेर सहित कई साहित्यकारों ने संबोधित किया और आयोजन की सराहना किया।

नाश्ता के बाद फिर सभा में जया मोहन को उनकी कहानी संग्रह जीवन के सात सुर उनकी कृति पर शोभा देवी स्मृति पुस्तकालय के प्रतीक चिन्ह, अंग वस्त्र और सम्मान पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया, प्रेम कुमार त्रिपाठी प्रतापगढ़ को उनकी कहानी संग्रह बुक्का बुआ और डॉ शील कौशिक, डॉ राम लखन चौरसिया बागीश कानपुर से पधारे डॉ सुभाष चंद्रा एवं नीलाक्षी जी तथा 27 साहित्यकारों को उनकी कृतियों पर पुरस्कृत किया गया।

इस सम्मान समारोह में देश भर से आए 51 साहित्यकारों ने भाग लिया।

सतीश बब्बा के आभार व्यक्त करने के बाद भोजनावकाश हुआ और पुनः 2 बजे समारोह सभा हुई जिसमें वरिष्ठ साहित्यकार डॉ भगवान प्रसाद उपाध्याय को भी अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह तथा सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

एक छोटा सा सीमित कविता पाठ भी हुआ और सतीश बब्बा (सतीश चन्द्र मिश्र) द्वारा आए हुए साहित्यकारों का आभार व्यक्त किया गया और इसी के साथ सभा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

जिसमें वरिष्ठ साहित्यकार जो दूर से आए थे वे वहीं सभास्थल पर ही रुके।

रात में इंटर कॉलेज मानिकपुर के शिक्षक/ कवि कैलाश मिश्र आए और कवि सम्मेलन आयोजित किया गया साहित्यकारों में डा. शील कौशिक, डॉ मेजर कौशिक, अनीता गंगाधर और गंगाधर शर्मा हिंदुस्तान तथा कैलाश मिश्र एवं सतीश बब्बा आदि ने अपनी - अपनी कविताएं पढ़ीं जिसमें अधिकतर कविता मां पर थीं। जिसे सुनकर सभाकक्ष में उपस्थित श्रोताओं की आंखों से आंसू छलक - छलक आए।

सभी का स्वागत स्वागताध्यक्ष ग्राम प्रधान पप्पी देवी ने किया और रात्रि भोजन और विश्राम भी उन्होंने अपने निवास पर ही कराया।

शोभा देवी स्मृति पुस्तकालय द्वारा आयोजित साहित्य सम्मान समारोह पूर्णतया सफल रहा और ऐसा आयोजन कोबरा गांव के इतिहास में पहली बार हुआ और यादगार, सराहनीय रहा।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

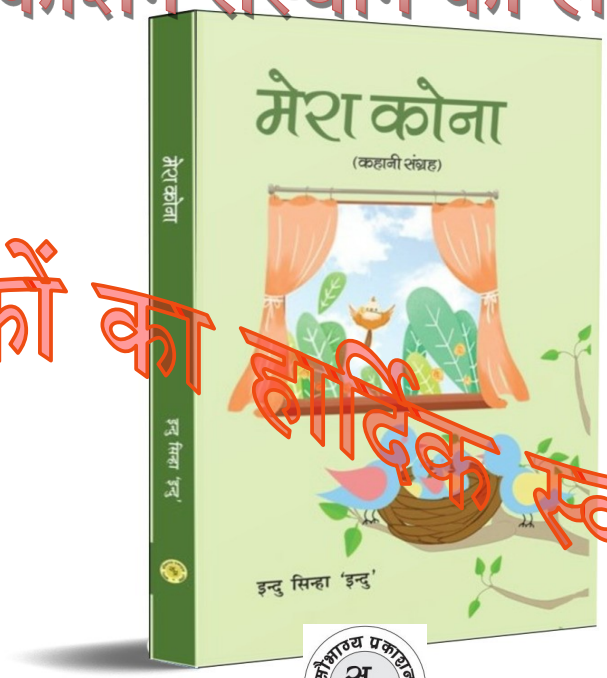

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)

Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'

ISBN : 978-81-958985-1-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250/-

Genre : Prose /गद्य

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-9-4**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 208
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

जीह्वा कमाल की

जैसा आप सभी प्रबुद्ध पाठक जानते ही हैं कि खट्टा हो या मीठा या फिर चटपटा। जब छोटे बच्चे के मुँह में चखायेंगे तो जो प्रतिक्रिया परिलक्षित होगी वही प्रतिक्रिया जवान व्यक्ति ही नहीं व्यक्त करेगा बल्कि वही प्रतिक्रिया बूढ़े व्यक्ति से भी देखने को मिलेगी। जिसका मतलब यह है कि जीभ का आवेश जीवन के आखरी क्षण तक रहता है यानि जीह्वा जो है वह हमेशा जवान ही रहती है भले ही उम्र बढ़ने के साथ शरीर के अन्य अंग शिथिल पड़ने लगते हों लेकिन ऐसा जीह्वा के साथ नहीं होता।

इसी कारण के चलते जीह्वा के रंग ढ़ंग से बिमारी का पता हर उम्र में लगाया जा सकता है। इसलिये ही आप सभी ने पाया होगा कि साधारणतया बहुत कम एलोपैथिक डॉ. लेकिन हर आयुर्वेदाचार्य या होमियोपैथिक तो हर उम्र के रोगी की जीभ अवश्य ही देखते हैं। आपके ध्याननार्थ अब संक्षेप में जीह्वा से किन किन बीमारियों का पता लगता है यहाँ उल्लेख कर दे रहा हूँ :

1) स्वस्थ्य इंसान की जीभ का रंग हमेशा गुलाबी होता है।

2) जीभ में पीलापन हमेशा बुखार या पेट से जुड़ी समस्या को दर्शाता है।

3) यदि जीह्वा का रंग सफेद है तो यह फंगल संक्रमण का अन्देशा जाहिर करता है।

4) बैक्टीरिया इत्यादि के ज्यादा जमाव के कारण जीभ काली पड़ने लगती है।

5) इसी तरह सामान से ज्यादा समतल जीभ का होना शरीर में आयरन, विटामिन व फोलिक एसिड की कमी को बताता है।

उपरोक्त सभी तथ्यों के मद्देनजर जिस किसी ने भी कहा है कि ये जो "जीभ" है। इसे चिरकाल जवानी प्राप्त हुई है से आप सभी भी। अब इतना सब जानने के बाद पूर्णतया सहमत होंगें। लगता है इन्ही सब कारणों के चलते ही महान संत कबीर दासजी ने हम सभी को समझाते हुये कहा -

जिभ्या जिन बस मे करि। तिन बस कियो जहान
नहि तो अवगुन उपजै। कहि सब संत सुजान।

भावार्थ :- जिसने अपने जिहवा को नियंत्रित कर लिया है वह वस्तुतः संसार को जीत लिया है। अन्यथा अनेक अवगुण और पाप पैदा होते हैं- ऐसा ज्ञानी संतों का विचार है।

गोवर्धन दास बिन्नाणी "राजा बाबू"

लघुकथा- 1 रोटी

सलोनी गोल-गोल रोटी फूल कर कुप्पा हो रही थी। चांदी की थाली में जो परोसी जाएगी।सही भी था! सब्जी, दाल , रायता, गुलाब जामुन न जाने अपने कितने साथियों के साथ रोटी थाली में सज गई। हँसते मुस्कुराते वह चमचमाती चांदी की थाली हट्टे- खट्टे, सूटेड- बूटेड रौबीले आदमी के सामने पहुँची।

चेहरे पर सलबल लिए आदमी मोबाइल फोन में घुसा,बड़े सलीके से सलाद चबा रहा था।

"ओह गॉड टिल नाऊ यू हेव नॉट कंप्लीटेड दिस प्रोजेक्ट? (ओह! आपने यह प्रोजेक्ट अभी तक पूरा नहीं किया?)"

भुनभुनाकर थाली एक ओर सरका दी। सहमी रोटी, भरी चांदी की थाली को तक रही थी।

लघुकथा -2 रेखाएँ

सेवा सदन! शहर से दूर ,अतीत से दूर, वर्तमान को संजोए। सघन वृक्ष तले फूलों का हार पहने बुजुर्ग नवदंपति। समय के थपेड़ों की रेखाएँ दोनों के चेहरे पर विराजित बतिया रही थीं।

"ऐ गहरी बड़ी रेखा तू बाऊजी के चेहरे पर कब खिंची थी?"

"तभी आ गई थी न, जब बेटे की पढ़ाई के लिए बाऊजी ऑफिस में ओवरटाइम करते थे। रात- रात भर जाग कर नौकरी कर बेटे की कॉलेज की फीस भरी ।"

दूसरी दुखियारी रेखा भी सोचते हुए बोली-जब सावित्री बा बाऊजी से दूर चली गई थी ....और उसके बाद मेरे साथ ही एक के बाद एक न जाने कितनी छोटी-बड़ी रेखाएँ बाबूजी के चेहरे पर खिंचती चली गईं।"

"मैं गहरी काली रेखा तब खिंची जब बेटे ने और बहू ने उन्हें "सेवासदन" का रास्ता दिखला दिया था ...।"

"और तू बता तू कब अम्मा के चेहरे पर खिंची?"

"मैं क्या बताऊँ, अम्मा जी की कहानी भी बाऊजी की कहानी से अलग कहाँ है?"

"अम्मा के पति क्या गुज़रे, अम्मा जी रानी नौकरानी बन गईं, तब मैं उनके चेहरे पर गहरी रेखा बन उभरी थी।"

"फिर धीरे-धीरे भूखे पेट, बहू- बेटे की चिकचिक झेलती रहीं। चाहे जो भी हो, है तो अपना ही खून। अपना बेटा, जिसके बीमार होने पर चौबीस घंटे, दिन- रात पैर पर खड़े रहे उन्होंने मैया से मन्नत माँगी थी।" और इन्हीं सब में रेखाओं का मकड़जाल बनता चला गया...

"हम रेखाएँ भी...जीवन के आँधी- तूफानों को झट उकेर देती हैं।"

"क्या करें? यहहमारा भी दुर्भाग्य ही है।"

तभी बुजुर्ग नवदंपति के पोपले मुँह की खिलखिलाहट सुन, सभी रेखाएँ चौंक गईं। दोनों चेहरों पर छाये असीम सुख में सभी रेखाएँ धुँधली हो गईं।

यशोधरा भटनागर

पर उपदेश कुशल बहुतेरे...

शकुन त्रिवेदी

कौनो तरीका हैहमउ ने बच्चा पाले हते, एक-दू नही पूरे चार -चार बच्चा। चकरघिन्नी की तरह नच के रह जाती थी पूरे दिन किंतु का मजाल बच्चा भीगे में परों रहे। पुरानी धोती फाड़ - फाड़ कर लगोंटी पहनाती, मोटी - मोटी गद्दी सिलती। रात भर उठ -उठ कर बदलती। कबहु हमने जा शिकायत नाई करी कि हमाई नींद पूरी नाई होत है। बुलबेउ में शरम लगत थी कि कोई का कहयै कि जे अनोखी अम्मा बनी है। लेकिन आज -कल की बहुअन के चोचले ही अलग है...

बोलते -बोलते श्यामा देवी चुप हो गई।

बर्तन साफ करती लख्खी बोली -" भाभी ठीक ई बोल रही हो। चार अक्षर पढ़ कर अब सबई अंग्रेज बन गई है, काम तो करबो ही नही चहती, सब कछु बाजार से आययै। बच्चा की मालिश के लहे, तेल, काजल और न जाने का का

कहां हम सब सरसो के तेल से रगड़ -रगड़ कर बच्चन की मालिश करती और घर को बनो काजल लगाती। बच्चा कित्ते हष्ट -पुष्ट रहत हते। लेकिन आजकल के डाक्टर काजल न लगाओ, मालिश न करो बोल -बोल के बहु - बेटा के दिमाग खराब कर दए। अब छोटी सी उम्र में बच्चा चश्मा लगाए के घूम रहे है। जरा से गिरे नही कि हाथ पैर में प्लास्टर चढ़ाए के बैठ गए। हियन हम सब और हमाये लरका - बच्चा कित्ते बार अमियां और अमरूद तोड़न के चक्कर में पेड़ से गिरे रहें लेकिन का मजाल हाथ -पाय टूट जाए।

"जई तो हम कहती है लख्खी कि किताबें तो सबने पढ़ लईं लेकिन बुद्धि नाई आई। " जे लरका - बच्चा जा नाई समझत की जा कछु बाजार में बिक रहो है तुम्हाई जेब खाली करान के लहे और बच्चन को शारीरिक रूप से कमजोर करन की खातिर...

कहते हुए श्यामा देवी चुप कर गई।

श्यामा देवी को चुप देख लख्खी ने फिर से बहु पुराण छोड़ दिया बोली आजकल की बहुएं कष्ट नाई करो चाहती। बार - बार बच्चन की लंगोटी बदलन न परै तो बाजार वालों कागज को पेंट पहनाए दिए। लख्खी की बात सुन चुप बैठी श्यामा देवी फिर बोल पड़ी -" ठीक कही तुमने अब देखो मनोरम की बहुरिया सारे समय छह मास के बच्चे को, का कहत है बाये ओह हां दायपर (डायपर) पहनाए के रखत है। बू पेंट जब उतारो जात है तब बच्चा के आगे से लैकर पिचुन (पुट्ठे) तक पूरो शरीर लाल हुए जात है। फिर बू लाल शरीर को ठीक करन के लहे क्रीम लगाई जैयै। पैसऊ बर्बाद और बच्चा कित्तो कष्ट पाए रहो है सो अलग। अयसो आराम किस काम को?

एक लंबी सांस खीच कर श्यामा देवी चुप कर गई।

आज मनोरम और उसकी बहू जरूरी सामान खरीदने बाजार जा रहे थे क्योंकि एक -दो दिन में उन्हे वापस बैंगलोर जाना था। ऐसा नहीं की वहां कुछ मिलता नही था किंतु फिर भी कुछ वस्तुएं ऐसी थी जो वहां उपलब्ध नही होती थी।

मनोरम अपनी मां से बोला -"मां मैं गोलू और गुड़िया को तुम्हारे पास छोड़कर जा रहा हूं तुम थोड़ा सम्हाल लेना। वैसे गुड़िया (6 वर्ष की बच्ची) तुम्हारी मदद करेगी।

श्यामा देवी खुश होते हुए बोली -" तुम बच्चन की चिंता न करो हम देख लिए।"

गोलू अपनी दादी की गोद का अभ्यस्त नही था ऊपर से सूसू -पॉटी ने उस नन्ही सी जान को परेशान करके रख दिया। उधर श्यामा देवी भी उसकी साफ -सफाई करते -करते त्रस्त हो गई थी।

बड़ी मुश्किल से गोलू सोया था। उसको सोता देख श्यामा देवी गुड़िया से बोली -" गुड़िया, जरा ऊ दायपर जाए पहनाए देओ, सुखों रहयै तो ठीक से सोए पाएयै j हमऊ तनिक आराम कर लिए। गोलू की सेवा करत-करत तो हमाइ कमर टेढ़ी हुए गई।

छह वर्ष की गुड़िया को रह -रह कर अपनी कक्षा का पाठ याद आ रहा था जिसमे ये कहावत थी - "पर उपदेश कुशल बहुतेरे "।

अरुण धर्मावत

चमकता जूता

कितनी आलसी थी मैं, खास कर स्कूल शूज़ पर पॉलिश करना तो मानो एवरेस्ट फतह करना था। स्कूल यूनिफॉर्म तो बेचारी मम्मी धो कर प्रेस कर देती थी। लेकिन मुझसे तो लाल रिबन भी धोए नहीं जाते थे। चोटी बनाते समय मम्मी डाँट कर कहती "इंदु इतनी बड़ी हो गई लेकिन जरा भी ख्याल नहीं रखती अपना" तो खींसे निपोर कर बोल देती "अपन तो ऐसे ही हैं जी फिर मम्मी सलामत तो अपने को क्या फ़िकर।" हल्की सी चपत लगा का मम्मी भी मुस्कुरा पड़ती।

लेकिन उस दिन जब स्कूल डायरी में नोट डाला गया और फ़रमान सुनाया गया इस पर अपने पापा के साइन करा कर लाना।

अरे क्या बताएं नोट पढ़कर तो हमें दिन में ही तारे नजर आने लगे ऊपर से पापा हुजूर के साइन बाप रे .... पापा की डांट से ज्यादा हमें उनके लेक्चर को याद करके सिहरन होने लगी। लेकिन करते भी क्या उस जमाने में पापा बनके फर्जी साइन करने का दिव्य ज्ञान जो हमें प्राप्त नहीं हुआ था। कानों में मानसिक रुई डाल कर शाम की चाय के समय पापा हुजूर के दरबार में पेश हुए और डायरी दिखाई। चश्में के पीछे मोटी मोटी आँखों से हमें घूरते हुए भृकुटियां चढ़ाते पापा का प्रवचन आरंभ हुआ .... "ये क्या है ....क्या है ये, पढ़ाई लिखाई में कमजोर होती तो इतना बुरा नहीं लगता लेकिन साफ सफाई की शिकायत ? हे भगवान कैसी लड़की है तू ... नाखून कटे हुए नहीं, जूतों पे पॉलिश की जगह डस्टर को गीला करके जूते साफ किए तूने ? अरे तुझे पता भी है व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान उसके जूतों से होती है। देखो इंदु आज तो मैं साइन कर रहा हूँ लेकिन आइंदा ऐसी शिकायत नहीं आनी चाहिए समझी तुम।

उस दिन की बात न जाने कब हमारे भीतर बैठ गई कि व्यक्तित्व की पहचान उसके शूज़ से होती है।

लेकिन पापा आप गलत थे ..... हाँ आप गलत थे आपको नहीं पता था कि चमकते जूतों के पीछे भी बदरंग और कुत्सित व्यक्तित्व होते हैं। आपकी बात पे ही भरोसा करके मैं चमकते जूतों वाले सर के घर ट्यूशन लेने जाने लगी और उस दिन जब उनकी मिसेज घर पे नहीं थी तो वो चमकते जूतों वाला व्यक्ति दानव बन कर मुझ पर टूट पड़ा था। उसने मुझे धमकी देकर कहा था देखो मैंने तुम्हारा वीडियो भी बना लिया है अगर किसी को बताया तो ये वीडियो.....!

आज इतने बरस बीत जाने के बाद भी मैं भूल नहीं पाई कि चमकते जूतों में जरूरी नहीं उज्ज्वल व्यक्तिव ही रहता हो। मन की डायरी पे लिखे इस मुड़े पन्ने को मैं कभी नहीं भूल पाऊंगी ... कभी नहीं।

आजादी के आन्दोलन में गाँधी जी की हमसफ़र कस्तूरबा

जयंती (11 अप्रैल) पर विशेष

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास, वाराणसी

कहते हैं हर पुरुष की सफलता के पीछे एक नारी का हाथ होता है। एक तरफ वह घर की जिम्मेदारियां उठाकर पुरुष को छोटी-छोटी बातों से मुक्त रखती है, वहीं वह एक निष्पक्ष सलाहकार के साथ-साथ हर गतिविधि को संबल देती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नाम से भला कौन अपरिचित होगा। पर जिस महिला ने उन्हें जीवन भर संबल दिया और यहाँ तक पहुँचाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, वह गाँधी जी की धर्मपत्नी कस्तूरबा गाँधी थीं। महात्मा गांधी की पत्नी होने के अलावा कस्तूरबा गांधी की अपनी पहचान भी थी। वो एक समाज सेविका भी थीं। कस्तूरबा को पढ़ना और लिखना नहीं सिखाया गया था, लेकिन युवा अवस्था में ही उन्होंने पारिवारिक बंधनों को छोड़कर अपना सारा ध्यान व पूरा जोर देश की आज़ादी के लिए लगा दिया था।

गुजरात में 11 अप्रैल, 1869 को जन्मीं कस्तूरबा का 14 साल की आयु में ही मोहनदास करमचंद गाँधी जी के साथ बाल विवाह हो गया था। वे आयु में गांधी जी से 6 मास बड़ी थीं। वास्तव में 7 साल की अवस्था में 6 साल के मोहनदास के साथ उनकी सगाई कर दी गई और 13 साल की आयु में उन दोनों का विवाह हो गया। जिस उम्र में बच्चे शरारतें करते और दूसरों पर निर्भर रहते हैं, उस उम्र में कस्तूरबा ने पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन आरंभ कर दिया। कस्तूरबा गांधी ने अपने जीवन में कभी औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन वे ज़िंदगी भर शिक्षा के लिए जिज्ञासु रही और चीजों को तेजी से समझ लेती थीं। वह गाँधी जी के धार्मिक एवं देशसेवा के महाव्रतों में सदैव उनके साथ रहीं। उनके गंभीर और स्थिर स्वभाव के चलते उन्हें सभी 'बा' कहकर पुकारने लगे। गाँधी जी के अनेक उपवासों में बा प्राय: उनके साथ रहीं और उनकी जिम्मेदारियों का निर्वाह करती रहीं। गाँधी जी के उपवास के समय कस्तूरबा गाँधी भी एक समय का ही भोजन करती थीं। आजादी की जंग में जब भी गाँधी जी गिरफ्तार हुए, सारा दारोमदार कस्तूरबा बा के कन्धों पर ही पड़ा। यदि इतने सब के बीच गाँधी जी स्वस्थ रहे और नियमित दिनचर्या का पालन करते रहे तो इसके पीछे कस्तूरबा बा थीं, जो उनकी हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखतीं और हर तकलीफ अपने ऊपर लेतीं। तभी तो गाँधी जी ने कस्तूरबा बा को अपनी माँ समान बताया था, जो उनका बच्चों जैसा ख्याल रखतीं।

विवाह के बाद कस्तूरबा और मोहनदास 1888 ई. तक लगभग साथ-साथ ही रहे किंतु गाँधी जी के इंग्लैंड प्रवास के बाद से लगभग अगले 12 वर्ष तक दोनों प्राय: अलग-अलग से रहे। कस्तूरबा ने जब पहली बार साल 1888 में बेटे को जन्म दिया तब महात्मा गांधी देश में नहीं थे। वो इंग्लैंड में पढ़ाई कर रहे थे। कस्तूरबा ने अकेले ही अपने बेटे हीरालाल को पालपोस कर बड़ा किया। इंग्लैंड प्रवास से लौटने के बाद शीघ्र ही गाँधी जी को अफ्रीका चला जाना पड़ा। जब 1896 में वे भारत आए तब कस्तूरबा बा को अपने साथ ले गए। तब से बा गाँधी जी के पद का अनुगमन करती रहीं। उन्होंने उनकी तरह ही अपने जीवन को सादा बना लिया था। 1904-1911 तक वह डरबन स्थित गाँधी जी के फिनिक्स आश्रम में काफी सक्रिय रहीं।

सामाजिक स्वतंत्रता के लिए कस्तूरबा गांधी की लड़ाई भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष से बहुत पहले शुरू हुई। महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान उन्होंने इसकी शुरूआत की। दक्षिण अफ्रीका में एक वाकया कस्तूरबा बा की जीवटता और संस्कारों का परिचायक है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दयनीय स्थिति के खिलाफ प्रदर्शन आयोजित करने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया व 3 महीने कैद की सजा सुनाई गई। वस्तुत: दक्षिण अफ्रीका में 1913 में एक ऐसा कानून पास हुआ जिसके अनुसार ईसाई मत के अनुसार किए गए और विवाह विभाग के अधिकारी के यहाँ दर्ज किए गए विवाह के अतिरिक्त अन्य विवाहों की मान्यता अग्राह्य की गई थी। गाँधी जी ने इस कानून को रद कराने का बहुत प्रयास किया पर जब वे सफल न हुए तब उन्होंने सत्याग्रह करने का निश्चय किया और उसमें सम्मिलित होने के लिये स्त्रियों का भी आह्वान किया। पर इस बात की चर्चा उन्होंने अन्य स्त्रियों से तो की किंतु बा से नहीं की। वे नहीं चाहते थे कि बा उनके कहने से सत्याग्रहियों में जायँ और फिर बाद में कठिनाइयों में पड़कर विषम परिस्थिति उपस्थित करें। जब कस्तूरबा बा ने देखा कि गाँधी जी ने उनसे सत्याग्रह में भाग लेने की कोई चर्चा नहीं की तो बड़ी दु:खी हुई और फिर स्वेच्छया सत्याग्रह में सम्मिलित हुई और तीन अन्य महिलाओं के साथ जेल गईं। जेल में जो भोजन मिला वह अखाद्य था। धर्म के संस्कार बा में गहरे पैठे हुए थे। वे किसी भी अवस्था में मांस और शराब लेकर मानुस देह भ्रष्ट करने को तैयार न थीं। कठिन बीमारी की अवस्था में भी उन्होंने मांस का शोरबा पीना अस्वीकार कर दिया और आजीवन इस बात पर दृढ़ रहीं। जेल में उन्होंने फलाहार करने का निश्चय किया। किंतु जब उनके इस अनुरोध पर कोई ध्यान नहीं दिया गया तो उन्होंने उपवास करना आरंभ कर दिया। अंतत: पाँचवें दिन अधिकारियों को झुकना पड़ा। किंतु जो फल दिए गए वह पूरे भोजन के लिये पर्याप्त न थे। अत: कस्तूरबा बा को तीन महीने जेल में आधे पेट भोजन पर रहना पड़ा। जब वे जेल से छूटीं तो उनका शरीर ढांचा मात्र रह गया था, पर उनके हौसले में कोई कमी

नहीं थी।

भारत लौटने के बाद भी वे गाँधी जी के साथ काफी सक्रिय रहीं। चंपारन के सत्याग्रह के समय बा तिहरवा ग्राम में रहकर गाँवों में घूमती और दवा वितरण करती रहीं। उनके इस काम में निलहे गोरों को राजनीति की बू आई। उन्होंने बा की अनुपस्थिति में उनकी झोपड़ी जलवा दी। बा की उस झोपड़ी में बच्चे पढ़ते थे। अपनी यह पाठशाला एक दिन के लिए भी बंद करना उन्हें पसंद न था अत: उन्होंने सारी रात जागकर घास का एक दूसरा झोपड़ा खड़ा किया। इसी प्रकार खेड़ा सत्याग्रह के समय बा स्त्रियों में घूम घूमकर उन्हें उत्साहित करती रहीं। 1922 में जब गाँधी जी को गिरफ्तार कर छह साल की सजा हुई, उस समय कस्तूरबा गाँधी ने महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के विरोध में विदेशी कपड़ों के त्याग के लिए लोगों का आह्वान किया। गाँधी जी का संदेश लोगों तक पहुँचाने के लिए वे गुजरात के गाँवों में दिन भर घूमती फिरीं। 1930 में दांडी कूच और धरासणा के धावे के दिनों में गाँधी जी के जेल जाने पर कस्तूरबा बा एक प्रकार से उनके अभाव की पूर्ति करती रहीं। वे पुलिस के अत्याचारों से पीड़ित जनता की सहायता करती, धैर्य बँधाती फिरीं। 1932 और 1933 का अधिकांश समय तो उनका जेल में ही बीता। इसी प्रकार जब 1932 में हरिजनों के प्रश्न को लेकर बापू ने यरवदा जेल में आमरण उपवास आरंभ किया उस समय बा साबरमती जेल में थीं। उस समय वे बहुत बेचौन हो उठीं और उन्हें तभी चैन मिला जब वे यरवदा जेल भेजी गईं।

गाँधी जी के अंग्रेजों भारत छोडो आन्दोलन के दौरान 9 अगस्त, 1942 को गाँधी जी के गिरफ्तार हो जाने पर बा ने, शिवाजी पार्क (बंबई) में, जहाँ स्वयं गाँधी जी भाषण देने वाले थे, सभा में भाषण करने का निश्चय किया किंतु पार्क के द्वार पर ही अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दो दिन बाद वे पूना के आगा खाँ महल में भेज दी गईं, जहाँ गाँधी जी पहले से गिरफ्तार कर भेजे चुके थे। उस समय वे अस्वस्थ थीं। 15 अगस्त को जब यकायक गाँधी जी के निजी सचिव महादेव देसाई ने महाप्रयाण किया तो वे बार-बार यही कहती रहीं महादेव क्यों गया, मैं क्यों नहीं? बाद में महादेव देसाई का चितास्थान उनके लिए शंकर-महादेव का मंदिर सा बन गया। वे नित्य वहाँ जाती, समाधि की प्रदक्षिणा कर उसे नमस्कार करतीं। वे उस पर दीप भी जलवातीं। यह उनके लिए सिर्फ दीया नहीं था, बल्कि इसमें वह आने वाली आजादी की लौ भी देख रही थीं। कस्तूरबा बा की दिली तमन्ना देश को आजाद देखने की थी, पर गिरफ्तारी के बाद उनका जो स्वास्थ्य बिगड़ा वह फिर अंतत: उन्हें मौत की तरफ ले गया और 22 फरवरी, 1944 को वे सदा के लिए सो गयीं। इतिहास ने अक्सर कस्तूरबा गांधी को उनके पति मोहनदास करमचंद गांधी की परछाई की तरह ही बयां किया है, लेकिन देश की भलाई और संघर्ष के दिनों में कस्तूरबा की भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता है।

ग़ज़ल

थोड़ी सी सपाटबयानी फिर से वही कहानी
था एक वीर राजा और उसकी एक रानी ॥1॥

उजले लिबास में थे लिपटे वे काले चेहरे
दहशतजदा आँखो में उसकी रात की कहानी ॥2॥

काश ! देख पाती आँखें कभी आसमानी मंजर
कैसे दिखेगी कहकशां, है धूल, धुआँ, पानी ॥3॥

कैसे कहूँ मैं उनको जम्हूरियत का सरपरस्त
उनकी जहाँ है चौखट, झुक कर मिली पेशानी ॥4॥

हम हैं कि गर्दिशों में भी, रखते अना का मान
रोटी जो तुमने फेंकी, हमको नहीं है खानी ॥5॥

कुछ भी नहीं है उसको रूहानियत का इल्म
महरूम हर तरफ से, कहता है दुनिया फानी ॥6॥

जी चाहता बना दूँ हर मक़तलों पे मक़तब
रख दूँ निसाब में ही मेरे अश्कों की रवानी ॥7॥

यूँ ही नहीं मिली थी वह मंजिले मकसूद
बस एक शबेवस्ल थी और खाक बरसों छानी ॥8॥

अहले सुबह जगाते मुझे रोज मेरे पुरखे
वे खुश हैं फ़कत इससे कि हैं याद मुंहजबानी ॥9॥

वह रोज टेकता था मत्था कई दरों पर
लेकर गया है ऊपर बस माथे की निशानी ॥10॥

पहुंच नहीं हैं पाती कई सर्द आह चीखें
है पास खड़ी मौत, बड़ी दूर राजधानी ॥11॥

हे रब ! मेरे दुश्मन को शिफा अता करें
मेरे खिलाफ उसने की है गलतबयानी ॥12॥

डा० अखिलेश जायसवाल
9931846992

सबका रखते ध्यान प्रभु श्रीरामजी!!!

यदि आपकी सर्वशक्तिमान प्रभु के प्रति अटूट आस्था है और आप समर्पित हैं तो आप यह मान कर चलें कि आपको मनोवांछित फल वे अवश्यमेव प्रदान करेंगे।इस तरह की अनेकों सत्य घटनाओं से इतिहास भरा पड़ा है। यह अलग बात है कि बीते सालों में कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों ने आआम सनातनी को भ्रमित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जिसके परिणाम स्वरूप एक बड़ा भाग असमंजस में आ गया लेकिन अनेकों ऐसे भी हैं जो अड़िग रहे, सर्वशक्तिमान प्रभु पर अटूट भरोसा रखा तो उन्हें मनोवाञ्छित लाभ भी मिला है। मैं स्वयं इसका साक्षी हूँ। आज तक अभी तक मुझे सर्वशक्तिमान प्रभु सभी तरह की विपदाओं से अपने आप निजात दिलवा रहे हैं। इसी कड़ी में मैं परमश्रद्धेय स्वामीजी श्री रामसुखदासजी महाराज के एक कथन का उल्लेख करना चाहूँगा जिसमें उन्होनें बताया था कि "वस्तुसे, व्यक्तिसे, परिस्थितिसे, घटनासे, अवस्थासे, जो सुख चाहता है, आराम चाहता है, लाभ चाहता है, उसको पराधीन होना ही पड़ेगा, बच नहीं सकता, चाहे ब्रह्मा हो, इन्द्र हो, कोई भी हो। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि भगवान् भी बच नहीं सकते। जो दूसरेसे कुछ भी चाहता है, वह पराधीन होगा ही।" इसीलिये यही समझाना है कि यदि हम सर्वशक्तिमान प्रभु पर भरोसा रख, सब कुछ उन पर छोड़ देंगे तो सारी व्यवस्था को उन्हें सम्भालना पड़ेगा। अब जैसा ऊपर बताया, इतिहास में उपरोक्त वर्णित तथ्यों को साबित करती अनेक घटनाओं, जैसे - "कैसे सन्त नामदेव जी की ज़िद के आगे प्रभु विठ्ठल वाला वाकया हो या शबरी की श्रद्धा आगे प्रभु श्रीराम जी वाला वाकया या फिर भक्त नरसी वाला सुप्रसिद्ध नानीबाई का मायरा वाला वाकया," सभी इस बात की पुष्टि करते हैं कि प्रभु के प्रति समर्पित होकर सच्चे मन से याद करें तो वे हमारी व्यथा का समुचित निराकरण करेंगें ही। एक बात और यदि कोई समर्पित हो उनकी परिक्षा भी लेना चाहें तो प्रभु निराश भी नहीं करते और अन्यथा भी नहीं लेते।

आज परीक्षा वाले वाकये से जूड़ी, कर्मयोगी सन्त मलूकदास जी से सम्बन्धित एक ऐतिहासिक सच्ची घटना आप सभी के ध्याननार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ लेकिन इस घटना को जानने के पहले यह जान लें कि शुरू में संत मलूकदासजी नास्तिक थे। इनके जीवन में एक ऐसी अत्यन्त रोचक घटना घटी जिसने इनके जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन ही नहीं कर दिया बल्कि इन्हें नास्तिक से आस्तिक बना दिया। और उस घटना का इन पर इतना असर हुआ कि इन्होनें निम्न दोहा गढ़ा जो कालान्तर में इतना ज्यादा लोकप्रिय हो चुका है कि दूर दूर तक जिनका पढ़ाई लिखाई से नाता नहीं उन किसान-मजदूरों से भी यह आज आसानी से सुना जा सकता है -

'अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।'

उपरोक्त दोहे के कारण हम सभी न केवल कर्मयोगी संत मलूकदासजी को याद करते हैं बल्कि यों मानिये की उनकी याद अपने आप आ ही जाती है हालाँकि इस दोहे के साथ साथ उनकी अन्य रचनायें आज भी काफी प्रसिद्ध हैं। और उन रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि इनकी परमात्मा के अस्तित्व में प्रबल आस्था थी साथ ही साथ वे सतत नाम स्मरण को विशेष महत्त्व देते थे।

उपरोक्त दोहे का विश्लेषण भी अनेक साहित्यकारों ने समय समय पर अपने अपने हिसाब से किया है और सभी के विचारों में अनेक विभिन्नतायें स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। लेकिन आइये अब कर्मयोगी संत मलूकदासजी से सम्बन्धित उस अत्यन्त रोचक घटना को जान लें जिसके चलते ही उन्होनें इस दोहे को गढ़ा। और वह रोचक घटना इस प्रकार है—कहा जाता है कि कर्मयोगी संत मलूकदासजी आस्तिक नहीं थे। लेकिन एक बार गाँव मे होने वाली एक राम कथा में, गाँव कि परिपाटी अनुसार कम से कम एक दिन वाली उपस्थिति देने ये भी पहुँच गये और उस समय व्यास पीठ से उपस्थित श्रोताओं को प्रभु श्रीरामजी कि महिमा बताते हुए कहा गया कि "प्रभु ही संसार में एक मात्र ऐसे दाता हैं जो भूखों को तो अन्न देते हैं और नंगों को वस्त्र एवं आश्रयहीनों को आश्रय भी। " इतना सुन कर्मयोगी संत मलूकदासजी विचलित हो गए और बिना समय गवांये उन्होंने व्यास पीठ पर विराजमान महात्मा से क्षमा माँगते हुए अपनी बात रखते हुए कहा

कि महात्मन! यदि मैं बिना कोई काम किए चुपचाप बैठकर प्रभु रामजी का नाम लूं, तब भी क्या प्रभु रामजी भोजन दे देंगे ?'

व्यास पीठ पर विराजमान महात्मा ने उन्हें आश्वस्त किया कि निसंकोच देंगे। उसके बाद फिर उन्होंने पूछा और कहा कि यदि मैं घनघोर जंगल में एकदम अकेला बैठ जाऊं, तब भी ?

वापस व्यास पीठ पर विराजमान महात्मा ने दृढ़तापूर्वक उन्हें समझा दिया की हर हालत में प्रभु रामजी भोजन देंगे, चाहे कैसे भी दें।

इतना सुनने के बाद उन्होनें निश्चय किया कि प्रभु रामजी की दानशीलता की परीक्षा ले लेनी चाहिये। यह सोच वे दूसरे दिन सबेरे सबेरे ही घनघोर जंगल के भीतर एक घने पेड़ के ऊपर चढ़ अपना डेरा जमा लिया। दिन ढला और सूर्य भगवान पश्चिम की पहाड़ियों के ओट में चले गये। इसके बाद धीरे धीरे वहाँ ऐसा अंधेरा छाया जिसके कारण जो थोड़ा बहुत दिखायी दे रहा था वह भी लुप्त हो गया , हाँ जानवरों कि आवाज सुनायी पड़ रही थी। इस तरह भूखे-प्यासे सारी रात निकल गयी। सुबह होते ही फिर आशा जागी और दूसरे पहर सन्नाटे में उन्हें अनेक घोड़ों की टापों की आवाज जब कानों में पड़ी तब सतर्क होकर सावधानी बरतते हुये बैठ गये। कुछ देर में ही उनकी तरफ ही कुछ राजकीय अधिकारी घोड़ों पर बैठे धीरे धीरे आ रहे थे। वे उस पेड़ कि छाँव में घोड़ों से उतर, वहीं भोजन कर लेने की सोची। इसलिये ज्योंही उनमें से एक अधिकारी ने थैले से भोजन का डिब्बा निकाल जमीन पर रखा, शेर की जबर्दस्त दहाड़ सुनाई पड़ी। जिसके चलते घोड़े बिदककर भाग गए। इस घटना से सारे अधिकारी स्तब्ध हो कर बिना कोई आवाज किये एक दूसरे से आँखों के माध्यम से ही सलाह कर , उस जगह को छोड़ना ही उचित समझा और वे वहाँ से भाग गये । इस पूरी घटना को कर्मयोगी संत मलूकदासजी पेड़ पर बैठे बैठे देख रहे थे। अब मलूकदासजी की आँखें शेर को खोज ही रहीं थीं तभी उन्होनें देखा शेर तो दहाड़ता हुआ दूसरी तरफ जा रहा है। अब वो आश्चर्यचकित हो नीचे पड़े भोजन को देखते हुये सोचने लगे कि प्रभु श्रीरामजी ने उनकी सुन ली है अन्यथा भोजन यहाँ कैसे पहुँचता। अब वो सोचने लगे इस भोजन को प्रभु मेरे मुँह में कैसे डालेंगे? थोड़ी देर बाद जैसे ही तीसरा पहर शुरू हुआ फिर उसने घोड़ों की टापों की आवाज सुनी और पाया की डाकुओं का एक बड़ा दल उसके पेड़ की तरफ तेजी से चला आ रहा है। जैसे ही डाकुओं का दल पेड़ के पास पहुँचा तब वे लोग वहाँ रखे चांदी के बर्तनों में विभिन्न व्यंजनों के रूप में पड़े हुए भोजन को देख ठिठक गए। चूँकि वे भूखे तो थे ही, सो डाकुओं के सरदार ने अपने साथियों से कहा - देखो भगवान की लीला, हमें भूखा पा इस निर्जन वन में सुंदर डिब्बों में भोजन भेज दिया। इसलिये सबसे पहले प्रभु के भेजे इस प्रसाद को पा फिरआगे बढ़ेंगे। तभी एक शकी स्वभाव वाले साथी ने सरदार को आगाह करते हुये निवेदन किया कि इस सुनसान जंगल में इतने सजे-धजे तरीके से सुंदर बर्तनों में भोजन का मिलना मुझे यह सोचने पर मजबूर किया है कि भोजन को जाँच लेना चाहिये यानि कहीं इसमें विष तो मिला हुआ नहीं है। तभी एक अन्य साथी ने कहा यदि यह बात है तब तो भोजन लाने वाला आसपास ही कहीं छिपा होगा।यह सब सुन सरदार ने सभी को सब तरफ तलाश करने को कहा। तलाशी अभियान के दौरान एक डाकू की नजर पेड़ पर शान्त बैठे मलूकदासजी पर पड़ी और उसने तुरन्त सरदार को सूचना दे दी। सरदार ने सिर उठाकर उनको देखा तो उसकी आँखों मे खून उतर आया यानि आंखें अंगारों की तरह लाल हो गईं। उसने कड़कती आवाज में उनसे कहा,- दुष्ट ! भोजन में विष मिलाकर तू ऊपर जा कर बैठ गया है। चल तुरन्त ही नीचे उतर।

सरदार की कड़कती आवाज सुनते ही मलूकदासजी बहुत डर तो अवश्य गये फिर भी उतरे नहीं बल्कि पेड़ पर बैठे बैठे धैर्य के साथ बोले, व्यर्थ दोष क्यों मढ़ते हो? विश्वास करो भोजन में विष नहीं है। इतना सुनते ही सरदार ने आदेश दिया - पहले तीन-चार साथी पेड़ पर चढ़ इसके मुँह में भोजन ठूँसो तभी झूठ-सच का पता चल पायेगा। इसके बाद तुरन्त ही तीन-चार डाकू भोजन का डिब्बा उठा पेड़ पर चढ़ गये और अपने हथियारों के जोर से मलूकदासजी को खाने के लिए विवश कर दिया यानि एक कौर उनके मुँह में ठूँस दिया। मलूकदासजी को भूख तो लगी हुयी थी इसलिये उन्होनें भी छक कर आराम से भोजन करने के बाद ही पेड़ से नीचे उतरे और सभी डाकुओं को सारी बात सही सही बयाँ कर दी। डाकुओं ने उनकी बात ध्यानपूर्वक सुनने के बाद आपसी सलाह कर उन्हें छोड़ दिया।

इस तरह उन्होनें सर्वशक्तिमान प्रभु की माया का अनुभव कर सोचा कि व्यास पीठ पर विराजमान महात्मा ने एकदम ठीक ही कहा था कि "हर हालत में प्रभु रामजी भोजन देंगे , चाहे कैसे भी दें" क्योंकि उन्हें बलात भोजन कराया गया, भूखा मरने के लिये नहीं छोड़ा। इस घटना से उनके जीवन मे आमूल- चूल परिवर्तन हो गया और वे सर्वशक्तिमान ईश्वर के पक्के भक्त बन गये। गाँव पहुँचने के बाद सभी को पूरी घटना से तो अवगत कराया ही साथ ही साथ उसी समय उपरोक्त दोहा भी गढ़ सबको सुना दिया। उपरोक्त घटना से एक बात तो स्पष्ट हो रही है कि शुद्ध कर्म, वचन व मन से यदि हम सबके साथ व्यवहार करते हैं तो सर्वशक्तिमान प्रभु निश्चित ही हमारे साथ सबसे ज्यादा प्रेमपूर्ण भाव रखते हुये सब कष्टों से उबार लेंगे, भले ही हम उन्हें भजें या न भजें। कुल मिलाकर हमें अपने मन में कभी भी किसी का अहित करने की मंशा नहीं रखनी है | यदि ऐसा हम कर पाते हैं तो हम भी मलूकदास जी की तरह प्रभु की परीक्षा ले सकते हैं और प्रभु भी इसका बुरा नहीं मानेंगे बल्कि वे सत्कर्मों का सम्मान करते हुये स्वयं परीक्षा देने अवश्य उपस्थित होंगे क्योंकि वे छोटे-बड़े की भावना ही नहीं रखते हैं। आप सभी के ध्याननार्थ बता दूँ कि ऐसा पढ़ने में आता है कि औरंगजेब जैसा पशुवत मनुष्य भी उनको बहुत मानता था, सम्मान देता था, क्योंकि मलूकदासजी ने स्वाध्याय, सत्संग व भ्रमण से व्यावहारिक ज्ञान अर्जित किया। उनके उपदेश हृदय में समा जाते थे। यही कारण है कि उपरोक्त दोहे के साथ साथ उनकी अन्य रचनायें आज भी प्रसिद्ध हैं।

गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू' बीकानेर /मुम्बई

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-9-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 188

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सुर न सधे क्या गाऊँ मैं (दो)

रामानुज अनुज

आगरा से वृंदावन की दूरी दस कोस से ज्यादा बनती है। वह वृंदावन भी जाये तो क्यों जाए? कौन है उसका वहाँ? पिता तो अब रहे नहीं। लेकिन कोई अज्ञात शक्ति के चुम्बकीय असर में खिंचा, रोता-विलखता हुआ वह वृंदावन जाने वाली सड़क पर भाग रहा था। वह जमुना के तट तक पहुँचते-पहुँचते बेदम होकर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। आखिरकार बारह बरस का लड़का दुखों का पहाड़ सिर में लादे हुये कितनी दूर तक भागे? जमुना के पार नाव में बैठे नाविक ने बालक बैजू को गिरते हुए देखा। वह नाव लेकर फौरन उस किनारे पर गया। बेहोश पड़े बैजू को वह नाव में लिटाकर जमुना पार किया, फिर उसे कंधे में लादकर अपने गाँव के कच्चे झोपड़ीनुमा घर में ले आया। नाविक की दस-बारह साल एक लड़की थी, जिसे वह गौरी कहता था।

पिता को घर लाये लड़के को देखकर गौरी के मन में अनेक सवाल आये। उसके पूछने के पहले ही नाविक ने उसे सारा वृतांत कह सुनाया। सुनकर गौरी बोली, 'यह बड़े कुल का लगता है।'

'हाँ, होगा, पहले नमक-हल्दी डालकर एक कटोरी पानी गर्म करके ले आ, इसके माथे पर कोई नुकीला पत्थर लग गया है, खून के धब्बे हटाकर हल्दी का लेप लगाना जरूरी है, पीड़ा कम हो जायेगी।'

'इतना काम तो मैं कर दूँगी।' गौरी ने पिता से कहा।

'कर दो, लेकिन सावधानी से, आँखों तक पानी न जाए। तब तक मैं गाय दुह लूँ।'

नाविक गाय दुहने चला गया। वह पतीली में हल्दी-नमक मिला गर्म पानी ले आयी और बैजू का सिर गोद में रखकर माथे के सूखे धब्बों को गीली कपड़े से हटाने लगी। साथ ही अनेक विचार भी कोमल मन को परेशान किये जा रहे थे।

'कितना मासूम और सुंदर चेहरा है इसका, गोरा, गोल-मटोल, जैसे कहीं का राजकुमार हो। जरूर यह किसी बड़े कुल-खानादान का होगा, ऐसे रूप-रंग का कोई लड़का नाविकों की बस्ती में नहीं होता है। यह कहाँ का रहने वाला है? कहाँ जाने के लिए तेज भाग रहा था? इत्यादि-इत्यादि।'

वह बच्ची ही तो थी, दस-बाहर साल की कोई समझदारी की उम्र होती है? कितना कपड़ा गीला करे, उसे कैसे अंदाज़ा हो? कपड़ा अधिक गीला था, जल का थोड़ा हिस्सा आँख में चला ही गया। नमकीन पानी आँख में जाते ही वह तिलमिलाकर बैठ गया। उसे होश में आया देखकर गौरी खुश हुई, उसने पूछा, 'तुम्हें पत्थर किसने मारा?'

बैजू आँखों को हथेलियों से मलते हुये बैठे रहे, वह पुनः बोली, 'पीड़ा कुछ कम हुई?'

आँखें खोलकर कुछ पलों तक वे गौरी को निर्निमेष देखते रहे फिर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोले, 'कहाँ चली गई थी तुम? गाँव वाले कितने झूठे हैं, कह दिए कि कलावती मर गयी।'

गौरी समझ गई, यह मुझे कलावती समझ रहा है, होगी कोई इसकी हमजोली, साथ खेलने वाली या फिर इसकी बहन? इसे पूरी तरह से अभी होश नहीं आया है अतः मुझे शांत रहना चाहिए, यह जो समझ रहा है, अभी वही ठीक है।

'क्या टुकुर-टुकुर ताकते हुये पुतलियाँ नचा रही है, ला न तम्बूरा, बजा न जोर-जोर से, सच, गाने के लिए आज बहुत जी छटपटा रहा है।' बैजू पुनः बोले।

गौरी उठकर चली गई। बैजू समझे वह तम्बूरा लेने गई है, वे गुनगुनाते हुये प्रतीक्षित बैठे रहे। गौरी परछी तरफ चली गई, जहाँ गाय का खूंटा था। पिता दूध दुह चुके थे अब गाय को चारा डाल रहे थे। खेत-मेड़ से गाय के लिये चारा गौरी ही लाया करती थी। गौरी ने पिता से बताया कि उसे अभी ठीक से होश नहीं आया है, वह मुझे कलावती समझ रहा है और मुझे तम्बूरा लाने के लिए कह रहा है।

पिता बोले, तुम दूध ले जाकर गर्म करो, हाँ चुटकी भर हल्दी मिलाना मत भूलना।'

'किसलिए बापू!'

'उसे देना है, हल्दी वाला दूध पीने से शरीर की पीड़ा जाती है।'

दूध लेकर गौरी भीतर चली गई और दूध गर्म करने लगी। नाविक, बैजू के पास आकर बैठ गया और उससे बात करने का प्रयास करने लगा, परन्तु व्यर्थ। वह कोई जवाब नहीं दे रहा था, बस ऊपर की ओर ताकता हुआ गुमसुम बैठा रहा। नाविक भीतर जाकर बेटी से कहा, 'मैं नदी तरफ जा रहा हूँ, नाव खुली छोड़ आया हूँ। जल्दी आऊँगा, तब तक उसे दूध पिला देना।'

नाविक चला गया, गौरी गिलास में दूध भरकर बैजू के पास आयी और दूध पीने को बोली।

'नहीं पियूँगा।'

'पी लो, दर्द कम हो जायेगा।'

'तुम झूठी हो, तम्बूरा लेने गई थी न।'

'दूध पी लो अगर सच सुनना हो तो।'

एक साँस में उसने गिलास खाली कर दिया, फिर गौरी से बोला, 'बताओ।'

'तम्बूरा खराब हो गया, अब नहीं बजता है।'

बैजू बड़ी देर तक सोचते रहे जैसे कोई बहुत बड़ा नुकसान हो गया हो। फिर वे लम्बी साँस लेकर गौरी को समझाते हुये बोले, 'जाने दो, मन छोटा मत करो, हम बाबा से कहकर नया मंगाएंगे। अभी तुम ताली बजाना, मैं गा रहा हूँ।'

वे लम्बी तान उठाकर गाने लगे, 'भगवान! भगवान, धरूँ ध्यान नित तेरा।'

ताल-बेताल ताली बजाते हुये वह मंत्रमुग्ध हुई बैजू को सुनती रही। वह पहली बार ऐसा गायन सुन रही थी, उसे यह नहीं मालुम था कि संगीत जादू करता है। सुरों में ऐसा खिंचाव था कि चल रही साँसों को चलने से, बदलियों को बरसने से, शाम को ढलने से, सूरज को प्रकाश फैलाने से रोक दे। आत्मविभोर हुई गौरी पलकों के आंदोलन के बगैर बैजू को अनवरत निहारे जा रही थी।

'ऐसे क्या देख रही हो।'

वह यथार्थ में लौटते हुये बोली, 'मैं ताली नहीं बजा पा रही थी।

'बस इतनी सी बात। इस बार नये डिजाइन का तम्बूरा दूँगा, जो छूते ही बोल उठेगा, 'सा रे ग म प ध नि!'

कहने का अंदाज ऐसा था कि गौरी का समूचा जिस्म हिल उठा। उसके मुँह से अनायास दो शब्द निकले, 'वाह वाह' जिनका वह मतलब नहीं

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

जानती थी, न यह समझ थी कि किन अवसरों में वाह-वाह कहा जाता था। गौरी पशोपेश में थी, वह उसका नाम तक नहीं पूछ सकती थी। क्योंकि वह उसे कलावती समझ रहा है और कलावती को नाम-निवास सब कुछ पता होना चाहिए। बात चल ही रही थी कि नाविक लौट आया। खाने में उसने खिचड़ी बनायी, सभी ने स्वाद लेकर खाया। रात्रि आई, उनका बिस्तर गौरी ने बाहर के कमरे पर लगाया और दूसरे कमरे में सोने चली गई। मध्य रात्रि के बाद का वक्त, बैजू ने साफ सुना, उसके पिता सिरहाने खड़े होकर कह रहे हैं, 'बेटा बैजू! राधा-कृष्ण की नगरी वृंदावन चला जा, वहाँ तुझे परम शांति मिलेगी।'

बैजू उठकर खड़े हो गए। कहीं कुछ नहीं, उसके पिता की शक्ल अदृश्य हो गई थी। उन्हें एक-एक घटना याद आ गई। परिस्थितियाँ पल भर में बचपन को सयाना कर देती हैं, वे रोये नहीं, चीखे-चिल्लाए नहीं, बल्कि किसी सुलझे हुये सयाने की तरह सोचने लगे, 'मेरा यहाँ रहना ठीक नहीं है। ये लोग कितने नेक हैं। और वह, जिसे मैं कलावती समझ रहा था, वह उसकी हमशक्ल हो सकती है। मेरी कला इतनी लापरवाह नहीं थी कि तम्बूरा खराब कर डाले। इसे तो तालियाँ से ताल देने का इल्म नहीं है, जबकि कला तालियों से ताल तो देती ही थी, मुँह से तबले के बोल भी निकालती थी। मुझे यहाँ से शीघ्र चले जाना चाहिए। खबर फैलते देर नहीं लगती है। यदि बादशाह को पता चलेगा कि मुझे इस घर ने शरण दी है तो वह कुछ भी नुकसान करवा सकता है। सैनिकों के द्वारा हत्या करा सकता है, घर में आग लगवा सकता है। न-न, यह अत्यंत अनुचित होगा। मुझे यहाँ से फौरन चले जाना चाहिए।'

बैजू उठे और दूसरे कमरे में सोए गौरी और उसके पिता को प्रणाम कर दबे पाँव घर से निकल गये।

सुबह हुई, सूर्य का प्रकाश छिटका। तब गौरी से उसके पिता ने कहा, 'दिन चढ़ आया, वह लड़का सोकर उठा नहीं, जा देख तो।'

बैजू जहाँ रात सोये थे, वह गई, बिस्तर खाली पाकर वह जोर से बोली, 'बापू! बिस्तर में वह नहीं है, मुझे लगता है, वह यहाँ से चला गया है।'

नाविक भी कमरे में आकर देखा, गौरी की बात उसे सही लगी, वह बोला, 'लड़का बहुत समझदार था। उसके रहने से हमारे ऊपर विपत्ति आ सकती थी।'

गौरी, 'कैसे?'

नाविक, 'अपनी विरादरी वाले बादशाह के सिपाहियों को बता देते। हमसे उसके विषय में पूछताछ होती। हम क्या बताते? किसी अनजाने को घर में शरण देना भी जुर्म है। हम नाहक फँस जाते।'

प्यार के लिए क्षणभर का मिलन भी बहुत होता था। गौरी को बैजू से प्यार हो गया था। जब वह गाय के लिए चारा लेने जाती थी, तब एकांत में रोते हुये कहती, 'मुझसे बताकर तो जाते। हर दिशा में जंगल है, पग-पग में हिंसक वन्य जीव हैं। रात के अँधियारे में तुम कहाँ चले गए?'

फिर वह ऊपर मुँह करके कहती, 'बापू कहता है, तू हर जगह है, यदि यह सत्य है तो उसकी हर तरह से हिफाज़त करना।'

□□□

लगातार तीन दिन तक लगातार चलने के बाद बैजू वृंदावन पहुँचे। कुटिया में दाखिल हुए, पिता की धोती, खड़ाऊँ, टूटा चश्मा और दो-चार बर्तन, इतनी ही गृहस्थी थी उनकी। बैजू के पिता केवल एक धोती से गुजर करते थे, कोई भी ऋतु हो कैसा भी मौसम रहे। अभी तक खुद को सहेजे हुए लम्बी दूरी तय कर यहाँ तक पहुँचने वाले बैजू, कुटी में रखी चीजें देखकर संयम तोड़ बैठे। सिर पर धरा दुख का

पर्वत डोल गया। मुँह से बड़ी चीख निकली, वे पिता की खड़ाऊँ में सिर पटककर रोने-छटपटाने लगे।

दुःख की यह छटपटाहट पूरे निधिवन में सुनाई पड़ी, विश्राम की अवस्था में लेटे स्वामी हरिदास के कानों तक जब बैजू के रुदन की ध्वनि पड़ी तो तुरन्त पाँव में खड़ाऊँ डालकर राधेश्याम, राधेश्याम का जाप करते हुये आवाज की दिशा में चल पड़े। उन्हें बैजू की कुटी तक पहुँचने में अधिक समय नहीं लगा।

बैजू लगातार रोते हुए कहे जा रहे थे, 'बाबा! मुझे छोड़कर किस संसार में चले गए। माई और कलावती तो छोड़कर पहले ही चली गई। सिर्फ तुम ही बचे थे, मेरा सम्बल, अब मेरा कोई नहीं है, कहाँ जाऊँ? क्या करूँ? मैं अनाथ हो गया। रुदन में इतनी करुणा थी कि पत्थर पिघकर पानी जैसा बह चले।

बाबा, आप ही मेरे सब कुछ थे, समस्त संसारी नाते तुम्हीं से जुड़े थे। कौन मुझे सही रास्ता बतायेगा? कौन मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुंचाएगा? मुझपर आसमान टूट पड़ा है।

स्वामी हरिदास, (ध्यान और धारणा की शक्ति से पूर, तपस्वी, योगी, महान संगीताचार्य या जो भी उपमाएं हों, उनके व्यक्तित्व निरूपण में न्यून पड़ेंगी) को बालक बैजू असाधारण लगा, वे गम्भीर वाणी में बोले, 'बालक! शांत मन से अपना दुख मुझसे कहो।'

बैजू ने आँखें ऊँची की, सामने स्वामी जी को पाकर वे उनके पैरों से लिपट कर विलखते हुये कहने लगे, 'मेरे पिता को और साथ के साधुओं को बादशाह ने मृत्युदंड दिया है। हाय! मेरी दुनिया वीरान हो गई, मैं किसके सहारे जिऊँ?'

स्वामी जी बोले, 'शांति-शांति, राधेश्याम।'

बैजू, 'तानसेन ने कैसा कायदा बनाया है, उसके महल के पास से गुजरने वाली गली से कोई भजन-कीर्तन करता हुआ न जाये। महाराज, यह तो घोर अन्याय है। महाराज, तानसेन ने मुझे बर्बाद कर दिया।'

स्वामी जी, 'शांति-शांति, राधेश्याम।'

स्वामी हरिदास के पैरों में सिर पटकते हुए बैजू बोले, 'महाराज! मुझे तानसेन और बादशाह से पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेना है। बिना प्रतिशोध लिए मुझे शांति नहीं मिलेगी।'

करुणा और क्रोध से भरी आँखें लिए हुये बैजू स्वामी हरिदास के सामने उठकर खड़े हो गये। स्वामी जी को उसकी आँखों में अथाह दुख और प्रतिशोध की जलती हुई आग दिखाई दी। संत हृदय स्वामी हरिदास उस ताप को झेल नहीं सके। संत हृदय द्रवित हो गया। बैजू को गले लगाते हुए वे बोले, 'वत्स! तुम्हारी अकेले की यात्रा आज से खत्म हुई। अब आगे की यात्रा संगीत के साथ करो। मैं तुम्हें संगीत का ऐसा दिव्यास्त्र दूँगा जिससे तुम अपने पिता की मौत का बदला ले सकोगे।'

बैजू खुशी से, 'सच महाराज!'

'बिल्कुल सच।'

दुख की बदलियाँ छट गई। अंधकार के जगह प्रकाश हो गया। बैजू को रास्ता दिखाई पड़ने लगा। ऐसी होती है गुरु की महिमा, वह हैरान भी हुआ और खुश भी। गालों में ठहरी अश्रु बूँदों को कुर्ते की आस्तीन से साफ करते हुए बैजू, गुरु के विशाल आभामंडल के दर्शन

कर रहे थे। स्वामी जी के बोल पुनः कानों में सुनाई पड़े, 'तुम्हें बारह साल तक कठिन तपस्या करनी पड़ेगी तभी संगीत सिद्ध होगा।'
बैजू, 'मैं बारह जन्म देने को तैयार हूँ। मैं हर तरह की तपस्या करूँगा। कैसा भी दुख आये, जिस सीमा का आये, हँसी-खुशी से झेल लूँगा। परन्तु मुझे उस अस्त्र की प्राप्ति जरूर होनी चाहिए जिससे मैं अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध ले सकूँ।'
स्वामी हरिदास, 'अवश्य।'
बैजू, 'मैं आपका शिष्य हुआ, आज से और अभी से आपकी आज्ञा का पालन करना मेरा प्रथम कर्तव्य होगा।'
यह कहते हुए बैजू, स्वामी हरिदास के चरणों में कटे हुए पेड़ की भांति गिर पड़े। स्वामी जी बैजू को उठाकर पुनः गले लगाते हुए आर्शीवचन कहे, 'विजयी भव।'
स्वामी हरिदास, बैजू को अपनी कुटिया में ले आये। स्वामी जी की कुटी जमुना के नजदीक बनी थी। यहाँ से जमुना का जल साफ दिखाई पड़ता था।

□□□

स्वामी हरिदास, भक्त कवि, शास्त्रीय संगीतकार तथा कृष्णोपासक सखी संप्रदाय के प्रवर्तक थे। इन्हें ललिता सखी का अवतार माना जाता है। वे वैष्णव भक्त थे तथा उच्च कोटि के संगीतज्ञ भी थे। वे शास्त्रीय संगीत के अद्भुत ज्ञाता एवम् चतुष् ध्रुपदशैली के रचयिता हैं। प्रभात बेला में स्वामी जी बिस्तर छोड़ दिया करते थे, तदनु नित्य की क्रियाएं, जमुना-जल में स्नान, पूजा, ध्यान फिर पद्मासन में बैठकर 'ओम' मंत्र का जाप करते थे। गुरु की तरह बैजू भी सभी क्रियाएं करने लगे थे। ध्यान से निवृत्त होकर स्वामी हरिदास स्वरचित पदों में से किसी एक पद का नित्य गायन करते। गाते समय वे भक्ति भाव में इतने तन्मय हो जाते थे की तन-मन की सुधि नहीं रहती थी।
बैजू उनके निकट बैठकर उन्हें गाते हुए देखते-सुनते, ततपश्चात वे बैजू को राग विद्या का दोपहर तक अभ्यास कराते। दोपहर भोजन पश्चात अल्प विश्राम, फिर शाम उतरने के पहले तक राग साधना, जो बैजू को सुबह बताए अनुसार करना होता था। स्वामी हरिदास नित्य एक राग के विषय में बैजू को समझाया करते थे।
समय के साथ राग साधना चलती रही। एक रात्रि अचानक स्वामी जी की नींद खुली। बैजू की कोठरी से रुदन की ध्वनि कानों में सुनाई पड़ी। वे उठे और बैजू की कोठरी के बाहर खड़े होकर आवाज लगाए, 'बैजू!' रोने की आवाज बन्द हो गयी। हल्की सिसकियां अब भी वे सुन रहे थे। पुनः आवाज लगाई, 'बैजू।'
उत्तर देने की बजाय बैजू उठकर आये और उनके चरणों के पास बैठ गये।स्वामी जी ने उन्हें समझाया, 'वत्स! इन दुखों को राग-जल में घोल डालो, चमत्कार होगा, चमत्कार। सिद्धि को प्राप्त करने के लिए साधक आँसुओं को अपने इष्ट को समर्पित कर देता हैं। ये आँसू मुझे दे दो, तुम सिर्फ एक मन से राग साधना करो। तुम्हारा कल्याण होगा।'
वे बहुत कोशिश के बाद भी माता-पिता और प्रेयसी कलावती की जुदाई का गम नहीं भुला पा रहे थे। रात के एकांत में वे अक्सर रोते हुये बिहान करते थे। आज स्वामी जी के समझाने पर उन्होंने मन-ही-मन

संकल्प लिया कि, 'अब किसी की याद में मन को दुखी नहीं करूँगा। मन की एकाग्रता किसी भी हालत में भंग नहीं होने दूँगा। पूरी क्षमता के साथ संगीत सीखने में मन लगाऊँगा।'

मन की एकाग्रता का तत्काल प्रभाव दिखाई पड़ा। अब जो नियम-कायदे एक बार स्वामी जी बता देते थे। बिना चूक के बैजू कंठस्थ कर लेते। गला तो कुदरत ने अवर्णनीय दिया ही था। कोयल की मधुर बोली से लेकर सिंह गर्जना तक की ध्वनि उसके शरीर के अज्ञात कोठरी में सुरक्षित थी। आवश्यकतानुसार वे बाहर निकालते थे। स्वामी जी, स्वयं आश्चर्य करते। उन्होंने एक तानपूरा दिया था, जिसे बैजू बहुत सम्हाल के रखते थे सिर्फ अभ्यास के समय उसे बजाते थे। भोजन और साफ-सफाई का काम और गुरु की हर तरह से सेवा-कार्य बैजू करने लगे थे। धीरे-वक्त बीतता गया। बारह साल कैसे बीत गया, यह पता ही नहीं चला, हाँ, संसार में बहुत बदलाव हुए। पुरानी आबादी उजड़ गयी, उनकी जगह नई बन गई। बालक जवान हो गए, जवान बूढ़े हो गये और बूढ़े मर गये। बैजू जवान हो चला था, कंधे चौड़े हो गये थे, छाती, घने काले बालों से ढँक गयी थी। सिर के बाल बारह साल में बढ़कर कमर तक आ पहुँचे, दाढ़ी के काले बालों ने चेहरे को ढँक दिया। स्वर्गीय पिता और गुरु की तरह बैजू भी सिर्फ कोपीन और एक धोती के सहारे शरीर को परदा देते थे। बैजू के सुर सध गये थे। वे राग विद्या में अब पारंगत थे। स्वर जादू करते थे, अलाप और तान इतने मोहक कि वन के पशु-पक्षी समस्त क्रियाएं भूलकर स्थिर खड़े हो जाते थे। एक समां बंध जाती थी, इस दायरे में जो भी पड़ता था वह जड़वत होकर रह जाता था। जिस तरह से सोनार सोने को तपाकर-गलाकर आभूषण बनाता है। उसी तरह से बैजू नाम के कच्चे सोने में मौजूद कचड़े को गलाकर बारह साल में गुरु ने खरा आभूषण बना दिया था। अब वे राग दीपक गाकर तेल के दीप जला सकते थे, राग मेघ, मेघ मल्हार, या गौड़ मल्हार गाकर वर्षा करा सकते थे, राग बहार गाकर फूल खिला सकते थे और यहाँ तक कि राग मालकौंस गाकर पत्थर भी पिघला सकते थे। संध्या काल का समय, पखेरू अपने-अपने बसेरों में आश्रय लेकर अपनी बोली में बोल-बतियाने लगे थे। नित्य की सांध्य कालीन पूजा-अर्चना से निवृत होकर स्वामी हरिदास कुटिया के बाहर चहलकदमी कर रहे थे। कंदील के लाल-पीली, उठती-गिरती लौ से कुटिया प्रकाशित थी। बैजू रात्रि के भोजन व्यवस्था में लगे थे, तभी स्वामी जी की आवाज सुनाई पड़ी, वे बैजू को बुला रहे थे। फौरन बैजू कुटिया से बाहर निकलकर गुरु के सम्मुख सिर झुकाकर बोले, 'जी आज्ञा कीजिये।'

स्वामी हरिदास हँसकर बोले, 'वत्स! भगवान ने जितना मुझे दिया था, वह मैंने तुमको दे दिया। अब तुम गायन के क्षेत्र में गंधर्व हो। अब मेरे पास सिखाने-बताने को कुछ नहीं बचा है।'

बैजू गुरु के चरणों में गिर पड़े, कृतज्ञता के आँसू आँखों से निकलकर पाँव धोने लगे। स्वामी, बैजू को उठाकर गले लगाते हुए बोले, 'वत्स! तुम-सा शिष्य मेरे जीवन में कभी नहीं आया। मुझे सभी के नाम याद नहीं, लेकिन जो भी मेरे समीप संगीत सीखने की चाह लेकर आया है, बिना किसी भेद-भाव के शिक्षा दी है। तुम्हारे मन में कोई प्रश्न हो तो कहो।'

बैजू, 'तानसेन के अलावा भी आपने संगीत की शिक्षा दी है। वे गुणी जन कहाँ हैं?'

स्वामी जी, 'तानसेन सम्राट के दरबारी गायक हैं, वे अपने राजा की खुशी के लिए गाते हैं। इसीलिए उनका दूर-दूर तक नाम है, अन्य ऐसा नहीं किए, वे भगवान को संगीत समर्पित कर दिए, अतः वे भगवान के हो गये। उनके लिए धन-दौलत, नाम-शोहरत का मूल्य तुच्छ है। वे भगवान को छोड़कर किसी के आगे नहीं गाते हैं, इसलिए वे गुमनाम हैं।'

बैजू, 'संगीत में ऐसा कौन-सा तत्व है जो सम्पूर्ण जगत को प्रभावित करता है?'

स्वामी जी, 'गायकों के स्वरों की शक्ति, जब आध्यात्म जगत की महाशक्ति से मिलती है तब बहुत बड़ी ऊर्जा निकलती है, जिसके प्रभाव से ऐसा कम्पन पैदा होता है जो जड़-चेतन को सम्मोहित कर लेता है। संगीत केवल विद्या नहीं, महाशक्ति है। मन-मस्तिष्क की तृप्ति के लिए संसार में बहुत से संसाधन हैं लेकिन भावनाओं की तृप्ति केवल संगीत से होती है। संगीत के दम पर प्राकृतिक शक्तियों का भी मार्ग बदला जा सकता है। नाद ब्रह्म जीवित-अजीवित, स्थावर, जंगम सभी को प्रभावित करता है। ध्यान रहे संगीत मनोरंजन का विषय नहीं है, यह परमात्मा के घर को जाता हुआ एक रास्ता है और इस मार्ग पर चलने वाले से दुनिया से कैसा परिचय?'

स्वामी हरिदास कुटिया के अंदर आकर तख्त पर बैठ गये। बैजू उनके पीने के लिए जल ले आये। हाथ से जल के पात्र को स्पर्श करते हुए स्वामी जी पुनः बोले, 'और कोई प्रश्न?'

बैजू, 'कोई प्रश्न शेष नहीं है गुरुदेव।'

स्वामी हरिदास (हँसते हुए), 'मुझे गुरु दक्षिणा चाहिए।'

अत्यंत विनम्र भाव से नतमस्तक होकर बैजू बोले, 'मैं आपका दास हूँ, सेवक हूँ, मुझसे सब कुछ आपसे प्राप्त है। हुक्म कीजिये, बैजू अपना सिर काट देगा।'

स्वामी जी, 'तुम्हारी गुरु भक्ति पर रत्ती भर मुझे संदेह नहीं है, तुम मुझे वचन दो कि राग विद्या से किसी को शारीरिक हानि नहीं पहुँचाऊँगा।'

बैजू, गुरु के वचन सुनकर स्तब्ध रह गये, लहू का तेज जाता हुआ महसूस हुआ, उन्होंने सोचा, तानसेन से प्रतिशोध अब कैसे लूँगा? फिर भी वे मनोभावों को छिपाते हुये गुरु को वचन दिए कि गायन के बल से किसी को शारीरिक नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। स्वामी हरिदास से क्या छिपा रह सकता है? वे बोले, 'किसी भी नायक के लिए पराजय से बढ़कर कोई हानि नहीं होती है, संगीत के मुकाबले में तानसेन के लिए पराजय मृत्यु-तुल्य तकलीफ़देह होगी, उसका दम्भ टूटेगा। तानसेन मेरा शिष्य है, उसे परिशुद्ध रखना मेरा कर्तव्य भी है।

जारी....

उल्का नहीं...तोता!

(कहानी)

मुझे लगा यह आदमी मुझसे अपनी उदासी और बेचैनी छुपा रहा है या फिर अपने केन्द्र से टूट कर गिरा उल्का पिण्ड है। जो अपनी परिधि से बाहर जाता हुआ लक्ष्य-भ्रष्ट हो गया है।। । कि जब जिस आवेग या दबाव से टूटा खुद पर उसका काबू नहीं रह गया। कहना चाहिए अगर ऐसा नहीं होता। तो राम बाबू की कहानी कुछ दूसरी होती।

... मगर मुश्किल यह थी कि खुद राम बाबू को ऐसा लग रहा था कि उनकी जिंदगी किसी बड़े महत्तर मिशन के लिए काम आयी है।यह एक प्रकार का आध्यात्मिक भाव था। जो आगे की तल्खियों और तुर्शियों को कम किए जा रहा था... । जैस तेज रफ्तार से चलती।। । आग उगलती मशीन की अतड़ियों में वाटर-पम्प लगा हो।

राम बाबू से मेरी मुलाकात इत्तफाकन हुई कही जाएगी। मैं एक -दो हफ्ते के लिए इस छोटे से पहाड़ी शहर में आया हुआ था। होटल की बजाय अपने एक मित्र के घर टिका हुआ था। वैसे तो मेरा यह दोस्त समय निकाल कर साथ होने का प्रयास करता ताकि मैं अकेलापन नहीं महसूस करूँ। मगर नौकरी और पारिवारिक झमेलों के बीच उसके लिए रोज समय निकालना मुमकिन नहीं था । और न मैं ऐसा चाहता था। सो मना कप दिया। सवेरे मैं नाश्ता-पानी करने के बाद। डायरी। कैमरा और मोबाइल आदि लेकर खुद ही निकल पड़ता।शहर के जिस-तिस हिस्से में घूमता। तस्वीरें उतारता।। आसपास के लोगों से बातचीत करता और डिटेल्स जमा करता।

... । थक जाता तो कहीं सुस्ता कर खाना-पानी करता। दफ्तर से फोन आता। तो एडीटर से बात करता... । लोकल अखबार पढ़ता। । । फिर चाय -सिगरेट के बाद शुरु हो जाता।। शहर क्या था।। । किसी यक्ष्माग्रस्त मरीज सा दबा-सिकुड़ा।। । काँखता।। । खाँसता।। । पुरानी पथरीली सड़कें।। । कुछ बदरंग दुकाने।। । दो-चार फैक्ट्रियाँ।। । । पुरानी शैली के घर-मकान।। । प्राचीन काल के बचे-खुचे खण्डहर।। । मंदिर और गढ़ी।। । मेरा संबंध इन्हीं कलाओं के अध्ययन से था ताकि मैं इतिहास और स्मृति की तह में जा सकूँ। एक अजीब प्रकार का तनाव और दुश्वारी थी।। । जो अब मैं काम के बीच महसूस कर रहा था। एडीटर लगातार मुझे फोन कर रहा था।। कभी-कभी मैं सोचता। तो एक-एक बात से मानो हजार सवाल पैदा होते।मुझे लगता मैं पत्थरों में दबे जिन्दा बुतों के बीच से चल रहा हूँमुझे देखकर बुझी हुई आवाजों में वे फुसफुसाते।। । " हमें मुक्त करो।। । चलो निकालो यहाँ से... । हम भी वक्त को साथ चलना चाहते हैं।। । तुम हमें छोड़ कर उसी तरह कहीं चले। तो नहीं जाओगे....?"

कभी-कभी मेरा दोस्त तो हैरान और परेशान हो जाता कि आखिर ऐसा क्या है इन खण्डहरों में? मैं उसे क्या समझाता। हजारों सालों की एक दुनिया। हजारों कहानियाँ। घटनाएँ। इतिहास।। । क्या नहीं है इन खण्डहरों में? समय ने इन्हें बेदर्दी से उजाड़ दिया है।। । इनकी पहचान धुँधली कर दी है... । कभी कितना जीवंत और रौशन रहा होगा यह पूरा लोक...!

मैं पूरब की पहाड़ियों से निकल कर सड़क किनारे चाय पी रहा था।

राम भरोसे टाइप दुकान में।। । यहीं राम बाबू मिले। ऐसे महापुरुष ऐसी ही जगहों पर अचनक मिलते हैं। खोजे से तो उनकी परछाईं नहीं मिलती। दुकानदार ने उन्हें चाय देने से साफ मना कर दिया था। कह रहा था झिड़क कर। " पहले पिछला हिसाब क्लियर कीजिए। नहीं तो नहीं मिलेगी चाय-बिस्किट।। । "

निहायत शर्मिंदगी से वे दाँत निपोड़े जा रहे थे। " सब हो जाएगा। पैसे आने दो। बहुत जल्दी मैं तुम्हारा हिसाब कर दूँगा। ला। चाय ला।।"

" कह दिया नहीं। तो नहीं।"उसने उपेक्षा से भर कर कहा और दूसरे ग्राहकों की ओर चाय बढ़ाने लगा।

" मैं भागने वाला नहीं हूँ।" उन्होंने प्रतिवाद किया।

" वह तो मैं भी समझा।"दुकानदार ने व्यंग करते हुए कहा। " न पैसे होंगे और न आप देंगे।"

लोग बेशर्मी से हँस रहे थे। इस बीच एक अप्रत्याशित घटना घटी। छोटा लड़का राजू उन्हें चाय दे गया। पर उस खूसट अधेड़ ने लपक कर चाय छीन कर कप उड़ेल दिया और लड़के को एक चाँटा जड़ दिया। " साले! बाप की दुकान है।"

मुझे कुछ अटपटा लगा। मैंने बिगड़ कर कहा। " तुम चाय दो उन्हें।। । पैसे मैं दूँगा।" दुकान में सन्नाटा खिच गया। मैं कुछ दर कसे रहा अपने को। " इतना जंगली व्यवहार करते हो? नहीं। देना है। नहीं दो। चाय फेंकी क्यों?"

उसने पैंतरा बदल कर कहा। "साब पुराना ग्राहक हैं। इसलिए थोड़ा हँसी- मजाक चलता है।। । वैसे हैं बहुत फेमस आदमी। "

लोगों ने भी गिरगिट की तरह रंग बदल लिया। राम बाबू तो जैसे एक कप चाय में निहाल हो गए। चाय पीने के बाद बातचीत होने लगी।उन्होंने नाम-पता पूछने के बाद कहा। "।। । तो आप जर्नलिस्ट हैं?"

" जी।" मैंने संक्षेप में सब कुछ बताया और कहा। " आप पुराने शहरी हैं।। । आज आप मेरी मदद कर दें। तो अच्छा रहा।। । " मेरी व्यावहारिक बुद्धि सक्रिय हो गयी या मन के किसी कोने से अनजाने यह अचेतन -राग फूटा। बातचीत और लिबास से मुझे वे प्रभावित कर रहे थे। लगता था जैसे दैव-दुर्योग से उनकी परिस्थितियाँ कुछ मुश्किल हो गयी होंगी।

हम लोग एक पहाड़ी किले की तरफ बढ़ रहे थे। मैंने इधर-उधर की बातें करते हुए पूछा। " वैसे आप करते क्या थे?"

उन्हें शायद इसी प्रश्न का इन्तजार था। लगा। अब वे अपनी असफलता की लम्बी दास्तान कहेंगे। पर यह क्या।। । उन्होंने जो कुछ बताया और जिस तरीके से बताया। उससे मेरे मन में क्षोभ हो आया। मैं समझ रहा था कि वे इसी शहर के होंगे।। । पत्नी बीमार होगी और लड़की की शादी की चिंता सता रही होगी।। । पोंशन में कुछ लफड़ा चल रहा होगा।। ।

।। । पर उनसे पता चला वे किसी दूसरे प्रदेश के हैं। जिला-जबार दूसरा है उनका।गाँव में अच्छी-खासी जमीन-जायदाद है बल्कि कहा जाए थी। जब उधर गए ही नहीं लौट कर तो क्या कहा जाए। उन दिनों का ॅलेज में पढ़ते थे। अचानक क्या हुआ कि उनके जीवन में एक तूफान उठा(नहीं उन्होंने कहा था कि महत्वपूर्ण मोड़ आया) और उन्होंने अपने को एक अभियान पर लगा पाया।आज जो लोगों में धर्म। संस्कृति और जाति के प्रति लोगों में इतनी जागरुकता देखी जा रही है।

उनके पीछे उन जैसे लोगों का ही त्याग और बलिदान है- " समस्त विश्व धर्म-चक्र परिवर्त्तन का यह लक्ष्य लाखों-लाख कोटि योनियों का अकेला मुक्ति मार्ग है।" उनको शब्दों से दर्प और अभिमान के स्फुल्लिंग झड़ रहे थे। जैसे समस्त ग्रह-नक्षत्र और तारा-मंडल उनके दिव्य भाल पर आकर टिक गए हों।।

" और अब?" मैंने चेन पुलिंग की।

" अब थक गए हैं।। " किंचित स्वर में उतार आया।

" तो बाल-बच्चे तो होंगे?"

" नहीं जी।" राम बाबू ने मुस्कूरा कर कहा।

" तो आपने शादी नहीं की?

" नहीं भाई।"

हम पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। जोर ज्यादा लग रहा था। थकान हो रही थी।हाँफते हुए बोले। " फुर्सत ही नहीं मिली।का ॅलेज में एक लड़की के प्रति आकर्षण था। लेकिन बाद में तुच्छ लगा।"

मैं चौंका। मन हुआ कि कहूँ। " किसी का प्रेम तुच्छ नहीं होता।इसका मलाल तो जरूर रहा होगा। अब आप महानता-बोध से अपनी आत्मा के कष्ट को कितना भी छिपाओ। पर छिपना वाला नहीं। मैंने कितने कार्यकर्त्ताओं। का ॅमरेडों। फ्रीलांसरों। साधु और महात्माओं को पछताते और रोते पाया है।उन्हें आखिर में इस बात का अहसास होता है कि किसी विचारधारा के चक्कर में पड़ कर उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी तबाह कर ली।। वहाँ कम्यून में कौन होता है देखने वाला।। । सब बोझ समझते हौं आप जैसों को।। " मगर संभाल गया अपने आवेग को। लगा कुछ भी हो अपनी आत्मा के एकांत में इस बेघर-बार जिंदगी के बारे में कुछ न कुछ जरूर सोचते होंगे!

।। । काफी देर तक रामबाबू के साथ खण्डहरों में दम तोड़ती कलाओं।। । बीते जमाने के सपनों।। । इतिहास की स्मृतियों और वर्त्तमान की उदासियों के बीच कैमरा फ्लैश करता रहा।। । रामबाबू ने समय के झरोखों से झाँकती कई कहानियों का उल्लेख किया।। । कई छूट गए तथ्यों की ओर इशारा किया।। । और बताया कि इतिहास हारे हुए लोगों के प्रति न्याय नहीं करता।। । वे लगातार कुछ न कुछ हिंदी और अँग्रेजी में बोले जा रहे थे। जैसे शहर की जन्म-पत्री कोई उनके हाथ में देकर चला गया हो। भाषा पर असाधारण अधिकार था। जो उनकी दीन-हीन जीवन से मेल नहीं खाता था।

सूरज बादलों की ओट से बहुत दूर लाल भर रह गया था। उसकी तपिश ठंढी पड़ने लगी थी। परछाइयाँ लम्बी होने लगी थीं।। परिंदे वापसी की उड़ान भर रहे थे। तिलस्मी धुँधलका घिर रहा था। हम लोग एक पहाड़ी टीले पर आकर बैठ गए।

मैंने अपना थैला खोला। खाने-पीने की कुछ रेडीमेड चीजों के साथ बीयर की बोतल निकाली।मेरा काम राम बाबू के सहयोग से लगभग पूरा हो चुका था।मैं प्लास्टिक के गिलास में ढालने लगा। " लीजिए थकान मिटाइए।"

" नहीं। मैं शराब नहीं पीता।। " वे एकदम से बिदक गए। जैसे तेज जहरीली चीज हो। जिसे छूकर वे भ्रष्ट हो जाते।

मुझे फिर उनके स्वभाव पर हँसी आयी। मन हुआ कहूँ। " अगर शराब हेय और हानिकर है। तो बीड़ी क्या है। जो वे लगातार धूक रहे हैं।। " पर छोड़ दिया।

" लीजिए नमकीन और बिस्किट ही लीजिए।" मैंने ससम्मान उनकी ओर बढ़ाते हुए एक अप्रत्याशित सवाल किया। " तो अब आप करेंगे क्या।। मेरा मतलब है आजीविका के लिए कुछ तो करना होगा?"

" कहीं इस्कूल-उस्कूल में रखवा देंगे।" उन्होंने टालते हुए कहा और फिर कहीं खो गए।

मैंने उनके इस अलक्षित लोक के पट को खोलते हुए कहा। " तो यही है आप के किये का प्रतिदान? लोग ऊँची कुर्सी तोड़ें और आप।। ?"

" क्या मतलब है आपका?" वे अकबकाए।

" आपने खुद के साथ धोखा किया है। अपनी आत्मा के साथ अन्याय।। । शायद इस सदी का सबसे बड़ा अपराध।। । " मैंने गिलास खाली करते हुए कहा। " जिंदगी पान-फूल या परसाद नहीं। कि किसी विचार। संस्था या शिविर के चरणों में चढ़ा दिया जाए।। । कि ऊपर लोग मजा करें। सिंहासन बत्तीसी पर झूलें और नीचे आप एक कप चाय के लिए थेथरई करें।"

" ऐं।।। क्या बोल रहे हैं आप?" राम बाबू बौखलाए।

" कैसा उत्थान? कैसा उत्सर्ग? कैसा परिवर्त्तन? कैसा प्रचार-प्रसार? कौन सा मीशन?"मेरे अंदर कुछ विस्फोट कर गया था। " आप गलत राह पर चलते गए।। । कभी पलट कर आत्म-निरीक्षण तो करते।। । आपकी जिंदगी का अपने लिए मतलब? यह समय नहीं है कि आप शुतुरमुर्ग बनें " सचमुच मेरी साँस तेज हो गयी थी।

राम बाबू असहज हो गए। मुझे लगा था आपसी बातचीत के इसी सबसे संवेदनशील मोड़ पर हम उनके वहम को मार गिराएँगे।। ।। इस तरह के सम्मोहन और स्वांग में भरम कर न जाने कितने लोग अपनी आत्मा की राह भूल जाते है। मुझे उम्मीद थी कि इस अचानक के विपरीत आघात से वे टूट कर कहेंगे। " हाँ प्रकाश बाबू! मेरी आँखें खुल गयीं।"

लेकिन नहीं। सख्त लहजे में उन्होंने कहा। " यह आपका सोचना हो सकता है। आप लोग प्रोफेशनल लोग हैं। तो सोचेंगे भी उसी तरह। " उनके चेहरे पर अज्ञात किस्म की अज्ञानता का लुटा-पिटा दर्प अब भी था। " आज के युवाओं मे जब घर-परिवार के लिए सेक्रीफाइज करने

की भावना नहीं रही। तो वह राष्ट्र-समाज और धर्म-कर्म के लिए क्या करेगा?" फिर उन्होंने व्यंग किया। " क्या मैं नहीं समझता कि आपके इस काम के पीछे महत्वाकांक्षा क्या है? अरे भाई किसी अखबार या टी। वी में इसे बेचेंगे आप।।। फीचर लिख कर।।।। फिल्म बनाकर खूब माल बटोरेंगे। अन्यथा इतनी जहमत उठाने क्यों आते?"

" हाँ क्यो नहीं?" मैं फटा। " मुझे बेचना ही चाहिए। मैंने परिश्रम किया है। लिखा है। क्या आप चाहते हैं कि किसी इन्दर दास को दे दूँ?"

" यह इन्दर दास कौन है?" वे अकचकाए।

" वही जो आपको काम पर लगाकर खुद ऊँची कुर्सी पर बैठ कर राज-योग भोगता है।" मुझे सचमुच चढ़ रही थी।

" देखिए आप बकवास कर रहे हैं।" उनका चेहरा विद्रूप हो गया। " मैं किसी इन्दर दास को नहीं जानता।हमारे समय में नहीं था ऐसा कोई।। आपके समय में है। इसलिअ। धर्म। इतिहास। तप-त्याग सब बिकाऊ हैं। पैसा। प्रशंसा और पद यही लक्ष्य हो गए हैं आपके।। " उनकी वाणी मारक हो उठी। " आप लोग सफलता के उजाले में भटक गए हैं।। यही आपका अँधेरा है। आत्म-चिन्तन कर आप जरा सोचिए।। जब सारे लोग आप जैसे हो जाएँ। तो इस संसार का उद्धार कैसे होगा? कौन से प्रतिमान बनाएँगे आप? होगा कोई मोक्ष का मार्ग किसी के लिए?" वे संस्कृत का कोई श्लोक पढ़ने लगे। जो मेरे पल्ले नहीं पड़ा।

हमारी बातचीत अब खतरनाक मोड़ पर आ गयी थी। " देखिए राम बाबू मैं भगत सिंह। खुदीराम बनने के लिए किसी को रोक नहीं रहा।।।। और उनके प्रति कोई अवमानना है मन में।।। पर एक देशना है अप्प दीपो भव। पर अंधा क्या दिखावे दूसरे को राह।। रघुवीर सहाय ने एक कविता लिखी है आप जौसे लोगों के लिए।। अगर कहीं मैं तोता होता तो क्या होता।।। तोता होता।।। "

" आप कहना क्या चाहते हैं?"रंज होकर कहा उन्होंने।

"यही कि आप लोगों के पास न अपना स्वचिंतन होता है और न स्व-चेतना।।। " मैं अब अपने रंग पर था।

" आप तो नास्तिक लगते हैं।।। "देर बाद एक सूत्र उनके हाथ आया।

" और आप आस्तिक!" मैंने तड़प कर कहा। " ईश्वर भी आपको क्षमा नहीं करेंगे। आप लोगों के पास अपना कोई विचार होता ही नहीं। आप अपना सब कुछ पहले ही बंधक रख देते हैं। अन्यथा भटकाव किसके जीवन में नहीं आता। गलतियाँ किससे नहीं होतीं।।।। मुश्किलें किसके जीवन में गतिरोध पैदा नहीं करतीं।।। पर लोग निकलते हैं।।। फिर उस अनुभव का। उस आत्म-विचलन का सत्य समझ में आता है। आप अपनी आत्-कथा लिख कर दूसरे का मार्ग-दर्शन कर सकते थे। पर आप तो।।। "

राम बाबू उठ गए। " बहुत हो गया आपका प्रलाप।।। क्षुद्र मानव-दर्शन का उद्बोध!शराब पीकर नशे में अंट-बंट बके जा रहे हैं।।। आपसे भला क्या मुँह लगना।।। ईश्वर आपको सद्बुद्धि दें।"

" और आपको रोजी-रोटी। " मैंने उनकी बातों को उन पर उलटाया।पर मुझे राम बाबू सेघृणा नहीं। बल्कि गहरी सहानुभूति हुई। उनका तोता कुछ भी सोचने से लाचार था। वह अपनी उड़ान और गति भूल चुका था। मैं काफी देर तक उनको जाते देखता रहा। लगता वे पहाड़ी से लुढ़क रहे हैं। सूरज उनके सर पर डूब रहा था। लगातार सिमटता हुआ जब टिक्का भर रह गया। तो मैंने बोतल मारी पत्थर पर कड़ाक। मैं अपना गुस्सा निकाल रहा था। निश्चित रूप से रामबाबू पर नहीं। इन्दर दास पर।।।।

संजय कुमार सिंह

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता
जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

''कजरी''

कहानी -

जब जब फागुन का महीना आता है तो, बहुत कुछ लाता है। अबके फागुन से मेरे बचपन वाला फागुन कुछ और हुआ करता था। मदमस्त महीना, चारों तरफ मादकता, मस्ती ही मस्ती! शिवरात्रि में शिवपूजन, हम सुबह ही आम की बौरें, धतूरा, मंदार और बेर तथा जवा की बालें, बेलपत्र लेने निकल जाते थे,अपनी बाल मंडली के साथ! पूरा महीना फाग महोत्सव, फाग ढोलक और होली इकट्ठा करने वाले देर रात तक गाते गीत, खुशी ही खुशी! चारों तरफ प्रेम - भाईचारा और मिलने पर एक दूसरे को गले लगाना, छोटे - बड़े का नाता में शिष्टाचार युक्त बातें करना। दिनभर खेतों से चना उखाड़ कर खाना और शैतान चौकड़ी नाम से पुकारते बड़ों का प्यार पाना और सरसों के फूल से गोरी के गालों की तुलना करना; क्या दिन थे वो!

अबके फागुन क्या आता है, किसानों की नींद हराम कर देता है। आकाश में बादलों का समूह दिन में रात सा अंधेरा कर देते हैं। गर्जना से दिल कांप जाता है। बड़े - बड़े बर्फ जिसे ओले कहते हैं गिरते हैं।

इस साल तो और गजब हो गया, जिस दिन से फागुन लगा; उसी दिन से ओले गिरने शुरू हो गए हैं। और फसलें चौपट हो गईं और फिर रोज - रोज की तेजाब बारिश बची खुची फसलों को नष्ट करने में तुली है।

अब फाग, फागुन के गीत कहीं भी सुनाई नहीं पड़ते हैं। फागुनी रंग बेरंग हो गए हैं। अबकी होली गांव में आए शराब ठेके तक सीमित हो कर रह गई है। और एक दूसरे की बुराईयों के शिवाय और कोई भाईचारा नहीं बचा है। प्रकृति का सौंदर्य बिगड़ रहा है या कहें कि, बिगड़ चुका है।

चारों तरफ नीरसता ही नीरसता नजर आ रही है। आज गांव में किसान रो रहा है और जीने की आशा छोड़ चुका है और अब आत्महत्या कर रहा है।

आज फिर से बैंक वाले आए थे। पिछले साल के फागुन में भी आए थे। और शिवलाल को बुरा - भला कहे थे और शिवलाल को भी और किसानों के साथ पकड़ कर ले गए थे। पति के अपमान से शिवलाल की घरवाली बेहोश हो गई थी। तब दलाल की बनावटी हमदर्दी से शिवलाल को छोड़ा था। और फिर उस हृदीय दुख से शिवलाल की पत्नी मर गई थी।

बहुत से लोग बैंक वालों के भय से एक बार रात में खाना खाने घर आते हैं। कहां से पाएं पैसे अभी खाद बीज से महाजन का पैसा चढ़ा था कि, भगवान ने फसलों को भी नष्ट कर दिया।

शिवलाल की बेटी जवान हो गई थी। अभी तक गांव में बहन - बेटी सुरक्षित थीं लेकिन शाराब का ठेका आ जाने से कुछ माहौल बिगड़ा है। फिर भी गांव में रिश्ते बचे हैं। यही नेताओं और कार्यकर्ताओं, सरकारी कर्मचारियों की निगाह में जब यह चढ़ जाती हैं तब अनर्थ होता है। सरकारें नेताओं की तिजोरी और दौलत वालों की तिजोरी भरती हैं और गरीब तो पैदा ही धक्के खाने को हुआ है।

शिवलाल की बेटी कजरी सौंदर्य और सादगी की प्रतिमूर्ति थी। जिसे देखकर कोई भी मोहित हो सकता था। वह गरीबी में पली ब्रह्मा की अनुपम कृति थी। लेकिन गांव में वह किसी की बेटी थी, किसी की पोती थी और किसी की बहन थी।

आगंतुक बैंक मैनेजर और फील्ड आफीसर दोनों जवान थे साथ का अधियर चपरासी उनसे कम नहीं था। गांव खाली हो गया था; सभी के दरवाजे बंद हो गए थे। शिवलाल भी घर में नहीं था; शिवलाल की बेटी कजरी थी। जो जवानी को लुकाए - छिपाए अपने बाप की इज्जत फटे - पुराने कुर्ता - सलवार और दुपट्टे में ढककर सुरक्षित रखने की पूरी कोशिश कर रही थी।

दौलतमंद एक फार्म भरकर करोड़ों रुपए लोन ले लेते हैं। और फिर डिफाल्टर घोषित होकर कर्ज माफ भी करवा लेते हैं और किसान, किसान अपनी जमीन के सभी कागजात लेकर महीनों दौड़ते हैं और जब कहीं पर्सेंटेज, हिस्सा बैंक कर्मचारी दलालों से चिरौरी - मिन्नत से तय कर पाते हैं, तब कहीं पूरी जमीन गिरवी रखकर, मैनेजर, फील्ड आफीसर और दलाल का हिस्सा देकर हजारों में लोन पाता है और चंद रुपए लेकर घर आता है।

किसान जिस फसल के दम पर लोन लेता है, रात - रात भर जाग - जागकर, छुट्टा मवेशी और जंगली जानवरों से जानलेवा कीटों से अपनी और अपने फसलों की रक्षा किया करता है उस फसल को फागुन के ओले, तेजाबी बारिश नष्ट कर देती है। तब वही किसान अपराधियों की तरह बैंक वालों से डरकर भागता है। क्योंकि वह

अपना मान सम्मान, खेत गिरवी रखने के बावजूद भी वह सुरक्षित नहीं है।

बैंक कर्मचारी वसूली करने आते हैं और ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं जैसे उनका व्यक्तिगत पैसे किसान लिए हों। और जब किसान कहता है कि, "मेरी जमीन आप या सरकार ले लो!"

वह कर्मचारी कहता है कि, "सरकार जमीन नहीं खरीद करती, पैसे दो!"

सरकार ने जमीन की कीमत रखी है और वह उसे नहीं खरीदती तो फिर किसान जेल जाकर पैसे पैदा कर सकता है क्या?

हजारों करोड़, लाखों करोड़ रुपए सरकार बड़े - बड़े सेठियों के माफ कर देती है। जबकि पूरे देश के किसानों का कर्ज मात्र चंद करोड़ रुपए ही होंगे लेकिन उन धरती से जुड़े गरीब किसानों का कर्ज सरकार माफ नहीं करती। और नेता अपने सभी भाषणों में किसान हितों की बात करते हैं।

हां तो बैंककर्मी गांव को सूनसान पाकर शिवलाल के घर के सामने ठहर गए और शिवलाल के घर में घुस गए क्योंकि वहां दरवाजा नहीं था, टटिया लगी थी।

सुंदर - सलोना जिस्म जो हाथ से बनाई किसी सुंदर गुड़िया सी शिवलाल की बेटी कजरी उन बैंक कर्मचारियों देखकर छुईमुई सी सिकुड़ गई थी। और अपने फटे कुर्ता सलवार में लिपटी हाथों से अपने चेहरे को छिपाने लगी।

मैंनेजर ने कड़ककर पूछा, "शिवलाल कहां गया?"

बिटिया कजरी ने कांपती जबान से कहा, "पता नहीं, मुझसे बता कर नहीं गए हैं!"

बैंक वालों ने एक दूसरे को देखा और चपरासी ने कहा, "सर, यह झूठ बोलती है, पूरा गांव ही बदमाश है, कोई पैसा देना नहीं चाहते हैं!"

एक फील्ड आफीसर ने मैंनेजर के इशारे को समझा और चपरासी को टटिया की ओर भेज दिया। सभी आस्वस्त थे, कोई आने वाला नहीं था।

कजरी को जबरन पकड़कर उसके साथ बारी बारी से सभी ने मुंह काला किया।

गांव में एक बैंक दलाल सोबती लाल रहता था। सोबती लाल के घर जाकर बैंक वालों ने खोवा खाया और चले गए।

आखिर कजरी ने जहर खाकर अपना जीवन समाप्त कर दिया।

शिवलाल को कुछ बच्चों ने, जो वहीं सामने खेल रहे थे और यह सभी तमाशा देख रहे थे; उन्होंने बताया कि, कजरी दीदी को बैंक वाले मार रहे थे और कपड़े फाड़ रहे थे!"

कुछ लोगों के कहने पर शिवलाल कलेक्टर साहब से शिकायत करने गया तो, अमीन, तहसीलदार और बैंक वालों ने उसे डिफाल्टर कहकर उसके विरुद्ध कलेक्टर को खूब पढ़ाया और कलेक्टर ने शिवलाल की एक नहीं सुनी और शिवलाल को चौदह दिन के लिए जेल भेज दिया।

शिवलाल का सबकुछ इस फागुन ने लील लिया था। पिछले साल के फागुन में पत्नी बैंक वालों की धमकी सुनकर घबराहट में बीमार होकर मर गई थी। और इस साल के फागुन ने बेटी कजरी, इज्जत; सब कुछ तो लील लिया है।

पहले वसूली का एक महीना जून का हुआ करता था। अब तो बारहों महीने वसूली जारी रहती है। समझ में नहीं आता कि हम स्वतंत्र हैं या कि, गुलाम!

कजरी ने तो गिनती के चंद बसंत ही देखे थे। कजरी अपनी मां के मरने के बाद अपने पिता को संभाल लिया था और वह अपने बापू को खेत में खाना लेकर जाती थी। कजरी के साथ काली कुतिया भी हुआ करती थी। जो बैंक वालों को देखकर अब भी भौंकने लगती है; और उन्हें काटने को दौड़ती है।

जब कजरी फुदकती, कूदती और मेड़ों को फांदकर जाती, कुकुर दौड़ दौड़ती अपने बापू के पास जाया करती थी। तब अपनी बिटिया कजरी को देखकर शिवलाल जीना चाहता था। शिवलाल कल्पना करने लगता था कि, 'इस साल ओले गिरे तो क्या हुआ, अगले साल में मैं अपनी कजरी को किसी राजकुमार के साथ जो सरकारी नौकरी में होगा उसके साथ विवाह बंधन में बांध दूंगा!'

शिवलाल की कल्पना उसे जीवन देती थी कि, 'कोई भी मेरी रानी बेटी कजरी को देखकर दहेज नहीं मेरी कजरी का हाथ मांग लेगा; हाथ थाम लेगा। सुंदर राजकुमार सा होगा मेरा दामाद, जहां मेरी कजरी राज करेगी!'

उसे क्या पता था कि, यह बैंक लोन मेरा सबकुछ निगल लेगा।

किसान जाएं तो जाएं कहां? इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है।

शिवलाल अभी भी जीवित है और वह काली कुतिया अब बूढ़ी हो गई है। अब शिवलाल को कोई नहीं जानता कि, वह कब और कहां खाता है!

खेतों की मेंड़ें, जहां कजरी के पांव, बिना चप्पल के ही थिरकते थे। अब सूनी आंखों से शिवलाल निहारता रहता है और गांव से आने वालों से पूछता है, "मेरी कजरी मिली है क्या? न जाने आज क्या करने लगी है, और आज कुछ खाने के लिए मुझे लाई ही नहीं है!"

बैंक कर्मचारियों को कोई फर्क नहीं पड़ता वो अब एक दूसरे शिवलाल और कजरी की खोज लगातार कर रहे हैं।

सतीश "बब्बा"

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

रमेश मनोहरा

सर! आपके आशीर्वाद का फल है...

कहानी :

विनोदीलाल को सेवा निवृत हुए 10 साल हो गये। वे सेवा निवृति के अंतिम 5साल अपने ही शहर के हायर सेकेण्डरी स्कूल में हिन्दी के व्याख्याता पद पर पदोन्नति लेकर आये थे। इसी पद पर रहकर वे सेवा निवृत हो गये। वे शुरूआत से ही एक अच्छे साहित्यकार रहे। कविताएँ और लेख लिखते थे। आये दिन पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते थे। और स्कूल में जब भी कोई आयोजन होता वे कविताएँ सुनाते थे। अतः छात्रों में वे प्रसिद्ध हो गये। छात्र/छात्राए भी ऐसे अवसर पर कविताएँ अधिक सुनते थे। स्टाफ में वे कवि के नाम से अधिक चर्चित रहे। फुरसत के क्षणों में स्टाफ भी उनसे कविताएँ सुनना चाहता था। तब वे अपनी नवीनतम कविता सुनाकर उनसे प्रतिक्रियाँ जानना चाहते थे। तब स्टाफ अपनी प्रतिक्रियाँ अवश्य देता था। जिस हायर सेकेण्डरी में व्याख्याता के पहले उच्च श्रेणी शिक्षक रहे। तब भी वे ऐसे ही विद्यालय में रहे। जहाँ लड़कें और लड़कियाँ संयुक्त रूप से पढ़ते थे। जब वे अपने शहर के जिस हायर सेकेण्डरी स्कूल में व्याख्याता पद पर पदोन्नति लेकर आये। वह स्कूल भी लड़के और लड़कियों का संयुक्त स्कूल था। जिस स्कूल में भी वे रहे। उस स्कूल की लड़कियाँ उनसे कविताएँ अधिक सुना करती थी।

मगर सेवा निवृति के 10साल कैसे बित गय े। उन्हें पता भी नहीं चला अब उनका सारा समय लिखने पढ़ने में ही लगा रहता था। मतलब साहित्य सेवा करके सेवा निवृति के समय का सही सदुपयोग कर रहे थे। अभी वे अपने अध्ययन कक्ष में बैठकर एक साहित्यक लेख लिख रहे थे। आगामी 31 जुलाई को महान कथाकार प्रेमचन्द जयन्ती है। इस पर नगर की साहितियक संस्था अक्षरा एक आयोजन कर रही है। बतौर उन्हें भी मुख्य अतिथि के ी रूप में आमंत्रित किया गया है। अतः प्रेमचन्द पर वे अपना आलेख लिखने में जुटे थे। तभी दरवाजे की घंटी बजी उनके लेखन में व्यवधान पड़ा। माया इस वक्त रसोई में लगी है। अतः यह सोचकर दरवाजा खोलने गये। तब दुबारा घंटी बजी। जब उन्होंने दरवाजा खोला सामने सुन्दर लड़की हाथ जोड़ती हुई बाली नमस्ते सर पहचाना। कहकर वह उनके पाँव पड़ गई।

"नहीं" विनोदीलाल ने इंकार से गर्दन हिलाई।

"अरे सर। आपने मुझे नहीं पहचाना। मैं आपकी प्रिय शिष्या" वह लड़की फिर अपना परिचय देती हुई बोली।

"मुझे याद नहीं आ रहा है। 35 साल की नौकरी में कई शिष्य और शिष्याए निकल गई। किसे याद रखूँ। --पहले अन्दर आओ फिर बात करते है। " कहकर विनोदीलाल उस युवती को अन्दर लाकर सौफा पर बिठाते हुए बोले - तुम लक्ष्मी तो नहीं हो। ?

"हाँ मैं वही लक्ष्मी हूँ। ?" उस लड़की ने गर्दन हिलाकर अपने नाम की पुष्टीकर दी।

"बहुत समय हो गया। फिर किस -किस छात्र का ध्यान रखूँ। "

विनोदीलाल बोले - तुम रिंगनोद की रहने वाली तो नहीं हों ?

''हाँ सर। मैं रिंगनोद की रहने वाली हूँ। आपकी कविताएँ मैं बहुत सुनती थी। ''

''हाँ मुझे याद आया। बड़े गौर से सुनती थी। '' विनोदीलाल भी समर्थन करते हुए बोले - और पढ़ने में भी बहुत तेज थी। 12वी में नब्बे प्रतिशत अंक आये थे। जिले में तीसरे नम्बर पर रही थी'' यहाँ किसलिए आना हुआ।

''सर। आपके आशीवार्द से मैंने आई। ए। एस। परीक्षा पास करली। और आपके शहर में एस। डी। ओ। पद पर पदोन्नति लेकर कल ही ज्याइन हुई हूँ।

''हाँ अखबार में पढ़ा था। लक्ष्मी रायकवार करके कोई एस। डी। ओ। ज्याइन हुई। '' समर्थन करते हुए कहाँ - बहुत - बहुत धन्यवाद मैडम।

''मैडम मत कहों सर। आपके लिए तो मैं वही लक्ष्मी हूँ। आपकी शिष्या। आपने ही मुझे आशीर्वाद दिया था। उसी आशीर्वाद का फल है कि मैं एस। डी। ओ। बन सकी फिर मुझे पता कि आप इस शहर में रहते है। तब पता करके आपके पास चली आई'' कहकर लक्ष्मी ने सारी बात कह दी। तब विनोदीलाल बोले - अरे माया सारे काम छोड़कर ड्राईंगरूम में आओ देखो कौंन आया है ?।

क्षण भर में ही माया ड्राईंगरूम में आई। लक्ष्मी माया को नमस्ते कहकर पाँव पड़ी। विनोदीलाल बोले - ये मैडम मेरी शिष्या है। इन्हें चाय नाश्ता करवाओं।

''सर आपने फिर मुझे मैडम कहाँ। आपके लिए तो मैं अब भी लक्ष्मी हूँ। '' लक्ष्मी फिर वही कहा। माया तो चाय नाश्ते का प्रबंध करने अन्दर चली गई। वे बातें में खो गये जब तक चाय नाश्ता न हुआ तब तक वे स्कूल की बातों के अलावा लक्ष्मी से परीक्षा की तैयारी की। जबकि वो अनुसूचित जाति से थी। उसके पिता दयाराम शराब के नशे में घुत रहता था। तब बातों ही बातों में विनोदीलाल बोले - अब तुम्हारे पिता के क्या हाल है ?- क्या वे अब भी पीते है ?

विनोदीलाल के इस प्रश्न को सुनकर लक्ष्मी खामोश हो गई। चेहरे पर अभी तक जो हँसी थी। वो गायब हो गई। चेहरे पर उदासी छा गई। विनोदीलाल को लगा उन्होंने उसकी दुःखती रग पर हाथ फेर दिया। अतः बोला - खामोश क्यों हो लक्ष्मी ? ''सर पापा न रहे। दारू ने उनकी जान ले ली। '' लक्ष्मी ने जब यह कहा तब विनोदीलाल सबकुछ समझ चुके थे। अतः आगे बात करना उन्होंने उचित नहीं समझा। फिर कुछ देर इधर - उधर की बातें होती रही - फिर उठती हुई लक्ष्मी बोली - अब जाने की इजाजत दे सर। मेरे लायक कोई सेवा हो तो निः संकोच कहें। उन्होंने मौन स्वीकृति दे दी। हाथ जोडकर वे बाहर तक छोड़ने आये। बाहर निकलने के बाद लक्ष्मी ने शालीनता से पुनः नमस्कार किया और पैर पैदल चैक तक गई - जहाँ उसकी

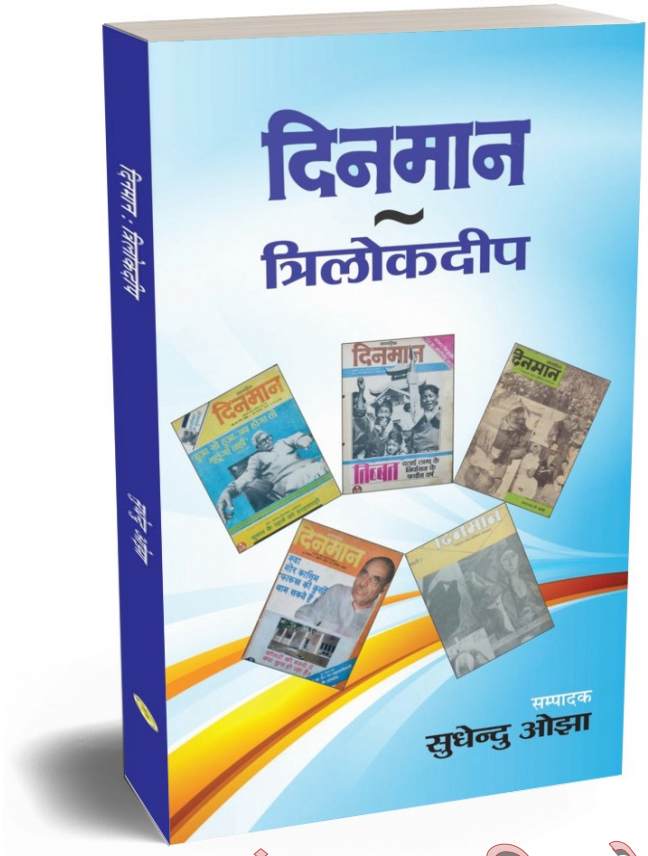

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

जीप खड़ी थी। वे उसे तब तक देखते रहे जब तक जीप स्टार्ड न हो गई। ड्राईंग रूम में आने के बाद विनोदीलाल बोले - माया तुमने एक बात पर गौर किया। ?

"किस बात पर ?" माया ने प्रश्न वाचक दृष्टि से पूछा।

"ये लक्ष्मी मेरी प्रिय शिष्य रही। बहुत गरीब अनुसूचित परिवार से थी आज ये अपनी मेहनत से एस। डी। ओ। बन गई। लेकिन शिक्षक के प्रति कितनी विनम्रता थी।

"संस्कार देने वाले भी हो आप थे। " कहकर माया टेबिल के बर्तन समेटकर जाने लगी। तब विनोदीलाल बोले - माया मेरी शिष्या एस। डी। ओ। बनगई। इस खुशी में एक बार फिर चाय पिलाओं।

"पिलाती हूँ मेरे आका ?" मुस्काती हुई माया बर्तन लेकर भीतर चली गई। तब विनोदीलाल उस अतीत में खो गये ? -- बात 2006 की होगी। वे रिंगनोद के हायर सेकेण्डरी स्कूल में उच्च श्रेणी शिक्षक पद पर कार्यरत थे। वे 9 वी से 12 वी तक हिन्दी पढ़ाया करते थे। पढ़ाई के अतिरिक्त उनके पास छात्रवृत्ति का प्रभार भी था। उन दिनों छात्रवृत्ति आदिम जाति कल्याण विभाग से स्वीकृत करवाना पढ़ती थी। फिर बैंक में राशि जमा करने के लिए बैंक स्क्रोल बैंक को देना पडते थे। वे बैंक स्क्रोल पर सील तथा हस्ताक्षर करके बैंक से दो प्रति में वापस आते थे। तब बैंक स्क्रोल के अनुसार संबंधित छात्र/छात्रा का चेक काटकर दिया जाता था। संबंधित छात्र/छात्रा बैंक जाकर चैक का भुना लिया करते थे। तब छात्रवृति छात्र/छात्राए चेक दीजिए न सर। तब वे अपनी सुविधानुसार चेक काटकर छात्र/छात्राओं को देते थे। चेक पाकर छात्र/छात्राए खुश होते थे। लक्ष्मी रायकवार को उसने 9 वीं क्लास से ही छात्रवृत्ति देना शुरू की वैसे लक्ष्मी पढ़ने में बहुत होशियार थी। पूरी क्लास में उसकी प्रशंसा किया करते थे। विशेषकर लक्ष्मी पर वे सबसे अधिक ध्यान रखते थे। हर समय अधिकारी बनने की प्रेरणा दिया करते थे। आई। एस। की परीक्षा में बैठने की राय जरूर दिया करते थे। मगर उसके पिता 12वीं से आगे पढ़ाने के इच्छुक नहीं थे। उसकी हर समय यथोचित मदद भी करते थे।

जब लक्ष्मी 12 वीं में पढ़ रही थी? वे उस दिन कक्षा 10 वीं को पढ़ाकर जब स्टाफ कक्ष में आये तब लक्ष्मी का पिता दयाराम वही बैठे हुए थे। तब वे तेश में आकर बोले - लक्ष्मी के छात्रवृत्ति का चेक कब मिलेगा। ?

"चार दिन बाद चेक काटना शुरू करूंगा। " विनोदीलाल बेफिक्र होकर बोले - उनके इस उत्तर से दयाराम संतुष्ट न हुए अतः तल्खी से बोले - चार दिन बाद क्यों आज क्यों नहीं। ?

"मुझे अभी फुरसत नहीं है दयाराम जी। " फिर उन्होंनेऐसा ही जवाब दिया।

"मुझे लक्ष्मी का चेक आज ही चाहिए" दयाराम टेबिल पर मुक्का मारते हुए बोले - अगर आज नहीं दोगे न मास्टर जी कलेक्टर को शिकायत कर दूंगा। ?

दयाराम के विगड़ते तेवर देखकर वे नाराज हुए उन्हें लाख समझाया। मगर उसकी समझ में न आया। दयाराम के बिगड़े तेवर के कारण उनको अपने हथियार डालने पड़े। आलमारी खोली। बैंक स्कोल और चेक बुक निकाली। चेक काटा। लक्ष्मी को बुलकार आवश्यक जगह उसके हस्ताक्षर करवाये। प्राचार्य से हस्ताक्षर करवाकर लक्ष्मी को चेक दिया। दयाराम लक्ष्मी को लेकर बैंक पहुँच गया। तब मैंने उस दिन अनुमान लगाया। लक्ष्मी के हाथ पैसा नहीं आयेगा। जैसे ही केशियर लक्ष्मी को पैसे देगा दयाराम तत्काल छीनकर कलाली पहुँच जायेगा। उनका अनुमान सही निकला। दूसरे दिन लक्ष्मी ने बताया। केशियर ने जैसे ही पैसे मेरे हाथ में रखें। पापा ने छीन लिए। बार - बार पूछते रहते है छात्रवृति कब मिलेगी। माँ से भी मांगते रहते है वो नहीं देती है। तब मारते है। दारू को ही उन्होंने अपना जीवन बना लिया। ऐसी विकट परिस्थितियों में लक्ष्मी ने पढ़ाई - करी और एस। डी। ओ। बन गई।

"लीजिए चाय पीजिए। " माय ने यही बात जब तीसरी बार कहीं तब वो वर्तमान में लौटे - अब आगे माया बोली - किस सोच में डूबे हुए थे।

"2006 के आस - पास चला गया था" चाय का कप लेकर एक घूँट पीते हुए बोले - लक्ष्मी गरीबी में पली जिसका बाप दारू पीता था। ऐसे अभाव में पली लक्ष्मी अधिकारी बन गई1

"अभाव ने ही उसे संस्कारित किया। " माया बोली - अब वो अधिकारी है। कह गई है उसके लायक कोई काम हो तो बताना।

मगर विनोदीलाल अनसुनी करते हुए चाय पीते रहे

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

प्रकृति, भारतीयता एवं वैज्ञानिकता से जुड़ा है नवसंवत्सर

नवसंवत्सर का जुड़ाव हमारी प्रकृति से है, सृष्टि से है, ऋतुओं से है, जीवों से है, जीवमण्डल से है और धरती से है। ऋतु परिवर्तन प्रकृति का चक्र है। ऋतु का अर्थ है, जो सदा चलता रहे। यह लय और गति हमें संदेश देती है कि वर्षभर नए नूतन परिवर्तन की ओर सतत अग्रसर रहें। गति का जीवन से अटूट संबंध होता है। यह गति जहाँ ऋतु से जुड़ी है, वहीं ऋतु का अभिन्न जुड़ाव नवसंवत्सर से है।

पौराणिक है संवत्सर की अवधारणा

पौराणिक उल्लेखों के अनुसार -

सर्वर्तुपरितस्तु स्मृतः संवत्सरौ बुधै।

(किसी ऋतु से प्रारंभ करके ठीक उसी ऋतु के पुनः आने तक जितना समय लगता है, वह संवत्सर कहलाता है।)

यह संवत्सर एकप्रकार से पूरा वर्ष है और इसमें 'नव ' शब्द जुड़ने से नवसंवत्सर हो जाता है। यह सृष्टि की वर्षगांठ का नववर्ष है, इसका वर्णन यजुर्वेद के 27 वें तथा 30 वें अध्याय के मंत्र क्रमांक 47 और 15 में अंकित है।

भारतीय संस्कृति में हिंदू नववर्ष का शुभारंभ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से माना गया है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार इस तिथि को ब्रह्मा जी ने सृष्टि - सर्जना आरंभ की थी। इसकी पुष्टि ब्रह्म पुराण के निम्नलिखित श्लोक से होती है -

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमोहनि।

शुक्ल पक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदये सति।।

अर्थात चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से तिथि के सूर्योदय से ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण का कार्य आरंभ किया था। इसी दिन सूर्य देव का उदय हुआ था तथा इसी दिन भगवान राम ने बालि का वध किया था। इसी दिन भगवान राम का राज्याभिषेक हुआ था।

धर्मग्रंथों में इसे 'नवसंवत्सरोत्सव' के रूप में मनाए जाने का विधान है। कालपुरुष के सभी अवयवों के साथ इस दिन मुख्य रूप से स्रष्टा ब्रह्माजी के पूजन का विधान है। अथर्ववेद में उल्लेख के अनुसार वैदिककाल से इसे एक महापर्व के रूप में मनाया जाता रहा है। इससे इसकी प्राचीनता एवं भव्यता का पता चलता है।

एक पौराणिक आख्यान के अनुसार सृष्टि निर्माण के समय सर्वप्रथम भगवान विष्णु ने अवतार लिया था और वह उनका मत्स्यावतार था, जो जल में हुआ था। यह कथानक जल की महत्ता को दर्शाता है, इसकी पुष्टि वैज्ञानिकों द्वारा भी की गई है कि सृष्टि का पहले जीव का

उद्भव जल में हुआ था।

नवसंवत्सर हिंदू - धर्म - दर्शन पर आधारित महोत्सव है। हमारे धर्म में ब्रह्माजी सृष्टि के रचयिता हैं, विष्णु पालनहार हैं और शिव संहारक देव हैं। यह वर्गीकरण कितना वैज्ञानिक है। सृष्टि आवश्यक है, उसका पालन - पोषण भी आवश्यक है और नव - नूतन - सृजन के लिए प्राणी की आयुपूर्ति पर संहार भी आवश्यक है। यह परिवर्तन क्रम सृष्टि का नियम है, जो कि शाश्वत है। नवसंवत इसी कालक्रम का सूचक है।

नवसंवत का ऐतिहासिक महत्व

नवसंवत से जुड़े एक प्राचीन अध्याय के अनुसार महाकाल (शिव) की नगरी अवंतिका (उज्जैन) के सम्राट विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रांता शकों पर विजय प्राप्त की थी। इस स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से विक्रमीय संवत का प्रवर्तन किया था। उत्तर भारत में इसी दिन वासंतिक नवरात्र प्रारंभ होता है तथा लोग माँ आदिशक्ति की घटस्थापना कर नौ दिन पूजा-अर्चना करते हैं और घर वालों की सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। इसी दिवस स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की थी। गणितज्ञ भास्कराचार्य जी ने इसी दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, मास और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की। द्वापर में धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक दिवस होने के अतिरिक्त कलयुग के प्रथम सम्राट परीक्षित के सिंहासनारूढ़ होने का दिवस भी यही है।

इस दिवस का उल्लास महापर्व के रूप में देश के सभी भागों में देखने को मिलता है।, भले ही पर्व के नाम अलग - अलग हों। इस दिवस को महाराष्ट्र में 'गुड़ी पड़वा', कर्नाटक में 'युगादि', आंध्र प्रदेश में 'उगादी', गोवा - केरल में संवत्सर, कश्मीर में 'नवरेह', मणिपुर में 'सजिबु नोंगमा पानबा' तथा सिंधु प्रांत में भगवान झूलेलाल के अवतरण दिवस के रूप में 'चेती चंद्र' (चैत्र का चंद्र) नाम से मनाया जाता है।

नवसंवत्सर का प्रकृति से है गहरा संबंध

चंद्र संवत्सर का शुभारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। ऋग्वेद में ऋतुओं का निर्माता चंद्रमा को माना गया है। चैत्र का चंद्र संवत्सर अगले वर्ष के चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तक चलता है। इसप्रकार यह कालचक्र अनवरत चलता रहता है, जो हमें प्रकृति से जोड़े रखता है और जीवन के तत्त्वों से परिचित करवाता है।

नवसंवत्सर का हमारी प्रकृति से गहरा संबंध है। वसंत ऋतु को ऋतुराज कहा जाता है, जिसमें नवसंवत्सर का प्रारंभ होता है। यह समय शीतकाल की शीतलता और ग्रीष्मकाल की ऊष्णता का मध्य विंदु होता है। इसकारण जलवायु समशीतोष्ण होती है। यही समय है, जब फसलें पककर तैयार रहती हैं और कृषक को अपने परिश्रम का परिणाम प्रत्यक्ष देखकर अपार प्रसन्नता होती है। वातावरण उल्लास और उमंग से भर उठता है और जन - मन नववर्ष का पर्व मनाने को उत्सुक हो उठता है। नवसंवत के आधार पर पंचांग तैयार किया जाता है। लोग इससे शुभ मूहुर्तों की जानकारी प्राप्त करते हैं और नए शुभ कर्म पूर्ण करते हैं।

दो कैलेंडर के रूप में प्रचलित है भारतीय नववर्ष

हिंदी नववर्ष, जिसे प्रायः हिंदू नववर्ष या भारतीय नववर्ष भी कहा जाता है, दो कैलेंडर के रूप में प्रचलित है। एक है शक संवत और दूसरा विक्रम संवत। दोनों में वर्ष का शुभारंभ एक ही दिन, एक ही महीने में होती है, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से। शक संवत कैलेंडर, ग्रेगेरियन कैलेंडर से लगभग 78 वर्ष नया है और विक्रमी संवत कैलेंडर, ग्रेगेरियन कैलेंडर से 57 वर्ष पुराना है।

धूमधाम से मनाएँ भारतीय नववर्ष

अँग्रेजी नववर्ष 2024 को 31 दिसंबर 2023 की रात को या 1 जनवरी 2024 को हम मना चुके हैं, किंतु हमें अपना हिंदू नववर्ष या भारतीय नववर्ष बड़ी धूमधाम से मनाना चाहिए, जो 9 अप्रैल 2024 अर्थात चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ हो रहा है। यह विक्रम संवत 2081 होगा। पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण में फँसे हम आँग्ल नववर्ष तो अत्यंत हर्षोल्लास से मनाते हैं, यहाँ तक कि असंयम का अतिरेक कर देते हैं, टनों शराब गटागट पी जाते हैं, मित्रों के साथ झूमते, नाचते हैं, गाते हैं, हो-हल्ला मचाते हैं, आतिशबाजी करते हैं, महंगे होटलों में या पर्यटन स्थलों पर पार्टियां करते हैं। इसमें भोंड़े प्रदर्शन के अतिरिक्त कहीं भी भारतीयता या शुभ संस्कारों की झलक नहीं मिलती। यह स्थिति अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। हम अपनी प्राचीन गौरवशाली परंपराओं के साथ भारतीय नववर्ष को भी भूल गए हैं। यह नवसंवत्सर का पर्व हमें भारतीय संस्कृति को पुनः अपनाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करता है। अपनी जड़ों की ओर लौटने का यह शुभ अवसर प्रदान करता है। आओ! भारतीय नववर्ष को हम सब मिलजुल कर सादगी और शालीनता से मनाएँ, इसके लिए कुछ इसप्रकार के आयोजन किए जा सकते हैं -

-घरों की छत पर भगवा ध्वज फहराएँ, घरों को कागज की झंडियों और गुब्बारों से सजाएँ, रंगोली बनाएँ तथा दरवाजे पर वंदनवार लगाएँ।

-प्रातःकाल स्नान कर घरों में देव - पूजन करें। मंदिरों में जाकर पूजा-अर्चना, संकीर्तन एवं धर्मग्रंथों का सामूहिक पाठ करें। सायंकाल घरों में एवं देवस्थलों में दीपक जलाएँ।

-भारतीय गणवेश धारण करें, मस्तक पर तिलक - चंदन लगाएँ तथा कलाई में मौली - कलाबा बाँधें।

-एक - दूसरे से मिलने पर हाथ जोड़कर नमस्ते करें तथा जयश्रीराम या वंदेमातरम बोलें।

-मोबाइल से वार्ता के पूर्व हैलो कहने के स्थान पर 'हरि ओम' बोलें।

वृद्धजन के चरणस्पर्श करके आशीर्वाद लें तथा छोटों को स्नेह - दुलार करें।

-वृद्धाश्रम जाकर वृद्धजन से मिलें, उनका हालचाल पूछें तथा मिठाई खिलाएँ। निर्धनों को भोजन कराएँ।

-गोशालाओं में गायों को चारादान करें तथा गुड़ खिलाएँ।

-घर और विद्यालयों में बच्चों को नवसंवत्सर से संबंधित कथाओं **और महापुरुषों के चरित्रों से अवगत कराएँ।**

-देवस्थलों, पार्कों, विद्यालयों और विशिष्ट स्थानों पर संगोष्ठी, वार्ता, कवि गोष्ठी आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। बच्चों के द्वारा साजसज्जा एवं बालछवियाँ प्रस्तुत करने की प्रतियोगिताएं की जा सकती हैं।

-अपने इष्ट - मित्रों को एक - दूसरे से मिलकर या मोबाइल से मंगलमय नववर्ष की शुभकामना एवं बधाई प्रेषित करें।

-हम दुर्गुणों को त्यागकर सद्गुणों तथा भारतीय संस्कृति को अपनाने का संकल्प लें।

भारतीय नववर्ष भारत के नव राष्ट्रवाद के उदय के आलोक में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। यह पर्व नई ऊर्जा, नई ज्योत्स्ना, नव आराधना, नवशक्ति और नई परिकल्पना का है। यह पावन हिंदू पर्व है, जिस पर हमें गौरव और गर्व करते हुए 'वसुधा ही कुटुंब है' अवधारणा के अनुसार जीवमण्डल के सभी जीवधारियों के लिए मंगलकामना करनी चाहिए।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था - " यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अंतर्मन में राष्ट्रभक्ति के बीज को पल्लवित करना है, तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा। गुलाम बनाए रखने वाले परकीयों की दिनांकों पर आश्रित रहने वाला अपना आत्मगौरव खो बैठता है। "

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

सौभाव्य प्रकाशन

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-3-1
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 118
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

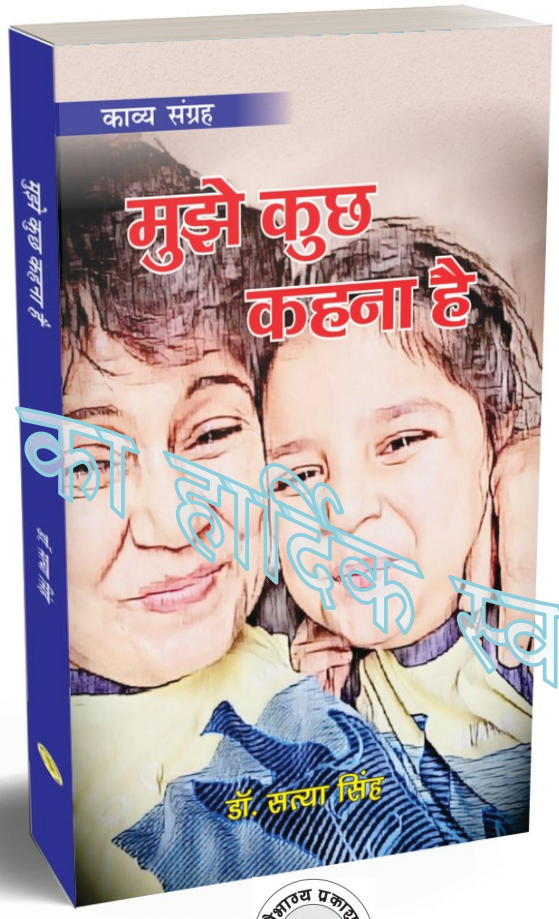

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-8-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 126
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

जल है तो कल है...

विनोद कुमार विक्की

(हास्य- व्यंग्य)

पहाड़ से तिहाड़ तक जल तांडव ने हर घर नल-जल की सरकारी योजना को प्राकृतिक रूप से साकार कर दिया है। नगर निगम शर्म से तो नेताजी कर्म से पानी-पानी हो रहे हैं।डुब-डुब कर पत्रकारिता धर्म का निर्वाह किया जा रहा है। इन्हीं परिस्थितियों के बीच

बाढ़ राहत कार्यो की समीक्षात्मक रिपोर्ट जारी करने के लिए बाढ़ एवं आपदा मंत्रालय ने पार्टी कार्यालय में एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित किया।पेन,पेनड्राइव,कलम,कैमरा आदि लेकर लगभग सभी रिपोर्टर तैरते -डुबते नेताजी के कार्यालय पहुंच गए।

तय समय पर मंत्री जी भी सशरीर उपस्थित हुए।

दोनों हाथों को जोड़कर उपस्थित पत्रकारों का अभिवादन करते तब तक शोरगुल चैनल के रिपोर्टर ने उनके दोनों हाथों के बीच माइक घुसेड़ दिया।

पत्रकार- सर...सर! जैसा कि आप जानते हैं कि प्रति वर्ष आने वाले बाढ़ के कारण प्रदेश का अधिकांश क्षेत्र डूब जाता है फिर भी आपके या आपकी सरकार द्वारा इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है ऐसा क्यों !

नेताजी (भुनभुनाते हुए)- "अजीब बुड़बक हो भाई कौनो मैनर वगैरह है कि नही तुमको !अरे भाई थोड़ा सांस तो लेने दो अभी आए नहीं कि टपक पड़े माइक लेकर...देखिए आपकी जानकारी के लिए आपको बता दें कि हम और हमारी सरकार बाढ़ आने से एक महीना पहले से ही एनडीआरएफ और एसडीआरएफ टीम को अलर्ट मोड पर रखते है।बाढ़ पीड़ितों के लिए हजारों टन चुड़ा-गुड़,मुड़ी रिजर्व रखवाते हैं।पीड़ितों के लिए नाव और अपने क्षेत्र भ्रमण के लिए हेलीकाप्टर तैयार रखते हैं। बाढ़ से बचाव के लिए टीवी एवं अखबार हेतु विज्ञापन तैयार करवाते हैं... और आप कहते हैं कि हर साल आने वाले बाढ़ के उपर हमारी सरकार ध्यान नहीं देती।...हद है मरदे..." शोरगुल चैनल के रिपोर्टर को दुत्कारते हुए नेताजी बोले।

शोरगुल चैनल के पत्रकार की किरकिरी होते देख मन ही मन प्रसन्न हो किंतु उपर से संवेदना भाव व्यक्त कर स्थिति को संभालते हुए चीख़-पुकार लाइव के रिपोर्टर ने कहा-"साॅरी सर दरअसल हमारा आशय यह था कि हर साल आने वाली इस त्रासदी का स्थायी समाधान क्यों

नहीं करते आपलोग"!

"कौन भकचौंधड़ सब पत्रकार को बुलाय लिए हो जी! हमको बोलने ही नहीं दे रहा ससुरा अपने भौंक रहा है" पत्रकार के इस प्रश्न पर नेताजी कुनमुनाते हुए कार्यकर्ता की ओर देखकर धीरे से बुदबुदाए फिर लंबी मुस्कान बिखेरते हुए बोले- देखिए जी करोड़ों की जनसंख्या है,और बिजली,शिक्षा,चिकित्सा,सड़क,अपराध आदि सहित प्रदेश की हजारों स्थायी समस्या है जिस पर ध्यान देते-देते पांच साल कब निकल जाता है, पता ही नहीं चलता और रही बात बाढ़ की, यह तो सीजनल है कभी आया तो कभी नहीं आया। वैसे भी नियमित पार्टी बैठक,पार्टी प्रचार, शिलान्यास और उद्घाटन,सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित विभिन्न कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति,पार्टी परिवार,निजी परिवार आदि की व्यस्तता के कारण पांच साल में अपने विधानसभा क्षेत्र में एकाध बार भी घूमने का समय नहीं मिल पाता।समयाभाव के कारण ही बाढ़ के स्थायी समाधान पर ध्यान नहीं दे पाते हैं...हे हे हे "

नेताजी की बात खतम हुई नहीं कि भड़कदार न्यूज़ के रिपोर्टर ने माइक उचकाते हुए पूछा-सर पक्का बांध का निर्माण क्यों नहीं हो पाया अबतक"!

नेताजी टेढ़ी नजरों से रिपोर्टर को देखकर बोले-बड़ा बकलोल हो जी! दर्शन शास्त्र वगैरह कुछ पढ़े हो कि नही! अरे भाई

नदी की धार प्राकृतिक है और मिट्टी का कच्चा बांध भी प्राकृतिक।प्रकृति का प्रकृति के साथ नैसर्गिक रिश्ता होता है फिर कृत्रिम पक्का बांध बनाकर प्रकृति के विरुद्ध हम क्यों जाए! वैसे भी सीमेंट,बालू और गिट्टी से बना बांध का कौन्हो भरोसा है कब प्रकृति अर्थात मिट्टी के जमीन से नाता तोड़ ले

नेताजी अपनी बात पुरी करते तब तक एक कार्यकर्ता बोल पड़ा "अभी हाल ही में न दु-तीनगो पुल पानी से दह गया है नेताजी"।

नेताजी कार्यकर्ता की ओर उंगली दिखाकर पत्रकारों से बोले-" बड़ा होशियार है राम भरोस, पुरा दिन न्यूज़ देखते रहता है! हाँ त हम कह रहे थे कि प्रकृति का तोड़ सही नही होता।

"बट द लेक ऑफ परमानेंट सालूशन इज डेंजरस फोर फ्लड इफेक्टेड एरिया एंड देयर नेटिव्स" चिल्ल पों इंग्लिश चैनल के रिपोर्टर ने चिल्लाते हुए आगाह किया।

अंग्रेजी सुनकर नेताजी की भौंहों में भाइब्रेशन होने लगा।

पास खड़ा कार्यकर्ता नेताजी के कान में फुसफुसाने लगा।संभवतः वह पत्रकार की बातों का हिन्दी अनुवाद कर रहा था।

नेताजी गले में पड़े पार्टी गमछा के दोनो सिरा पर हाथ फेरते हुए बोले-" या या... आई... अंडरस्टैंड...देखिए बाढ़ हमेशा बुरा नहीं होता!आप बाढ़ का सकारात्मक पहलू देखिए।बाढ़ के दौरान वैसे घरों तक भी पानी पहुंच जाती है जहाँ हमारी सरकारी हर घर जल योजना के तहत भी पानी नहीं पहुंच सकती!लाखों-करोड़ों के खर्च पर स्वीमिंग पुल या वाटर पार्क की बजाय बाढ़ ग्रस्त गड्ढे और खेतों के नेचुरल वाटर पार्क में बच्चे स्वीमिंग का प्राकृतिक आनंद लेते हैं!बाढ़ के महीना में आपके चैनल को टीआरपी बढ़ाने के लिए प्राकृतिक न्यूज़ मिल जाता है और बाढ़ के पश्चात प्रभावित इलाकों का दौरा कर लेने से हमे भी जन प्रतिनिधित्व निभाने का मौका मिल जाता है।अब आप तो जानते ही हैं कि हमारी भोली-भाली जनता नदियों को गंगा मैया, कोसी मैया,गंडक माता के रूप में पूजते हैं, इसलिए उनकी निश्छल आस्था पर माता स्वयं उनके घरों में पधारती और उन्हें धन्य करती है! वो कहते है न कि मन चंगा तो कठौती में गंगा "!

"लेकिन सर हर साल बाढ़ रूपी त्रासदी तो जनता को ही झेलना पड़ता है और कभी बाढ़ पीड़ित जनता ने आपकी इस उदासीनता पर सहनशीलता को त्यागकर हल्ला बोल कर दिया तो..."! हो-हल्ला न्यूज़ का एंकर बोल पड़ा।

"अजी चिंता मत करिए हमारी जनता काफी सहनशील और धैर्यवान है, जब ये लोग डेली के मंहगाई, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी आदि स्थाई प्राब्लम को काफी हिम्मत और हौसला से झेल लेते है तो फिर यह एकाध साल में आने वाला टेम्परी बाढ़ इनकी सहनशीलता का क्या बिगाड़ लेगा जी!

वैसे भी जल है तो कल है। खैर चलिए पुछाताछी बहुते हुआ हमें बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र के हेलीकाप्टर दौरा पर भी निकलना है... और हाँ आपलोग भोजन करके जरुर जाइएगा पीछे हाल में भेज-नानवेज की शानदार व्यवस्था है "।

इतना कह चिर-परिचित अंदाज में हाथ जोड़ नेताजी मुस्कुराते हुए कांफ्रेंस हाल से बाहर निकल गए।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

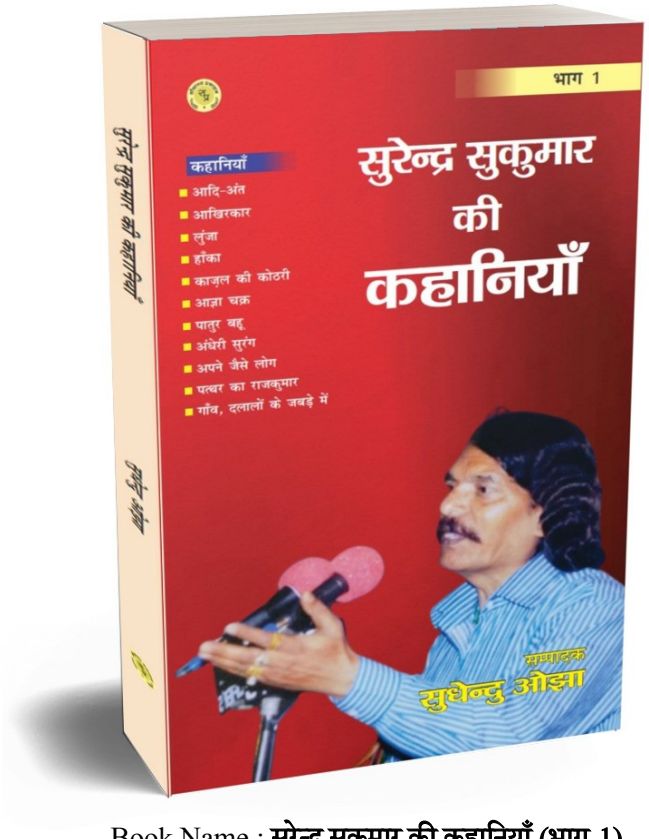

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**
Editor : सुधेन्दु ओझा
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Price : 250/-
Genre Prose

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

रिश्तों का महत्व

अपनापन आज खोता जा रहा,
किनारो पर नाव छोङता जा रहा,
क्या पता रिश्तो को क्या होता जा रहा,
रिश्तो मे सब कुछ खोता जा रहा।

समझ का फेर बदल गया शायद,
रिश्तो की महक से बङा हुआ कद,
हर कोई पार कर रहा अपनी हद,
तभी है रिश्तो मे अपनी अपनी मद।

मजबूरी बन गई रिश्तो को निभाना,
जरूरी ना ऐसे रिश्ते मजबूत दिखाना,
हो अगर मिठास तो बंध को बिठाना,
वरना कच्चे धागो से इसे ना सिलाना।

जिम्मेदारी रिश्तो का कराती अहसास,
वरना ना करता कोई इन पर विश्वास,
तभी जीवन सार का कराता आभास,
रिश्तो को जोङ ना कर इसका उपहास।

संजय जांगिङ 'भिरानी'
6375690941

प्रेम

प्रेम में सब्र है,
आकर्षण है,
सुख का सवेरा है,
तो दुख के बादल भी,
क्योंकि प्रेम लेना नही,
बस देना सिखाता है।
प्रेम के बस में,
कोई भी रह सकता है,
पर प्रेम
हर एक के बस की बात हो
यह जरूरी नही!
फिर चाहे कोई प्रेम में हो,
या न हो, फिर भी
हर किसी की चाहत रहती है,
कि उसके प्रेम का आरंभ
राधे-श्याम सा हो,
और अंत
सीता-राम सा हो।

सोनल मंजू श्री ओमर

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

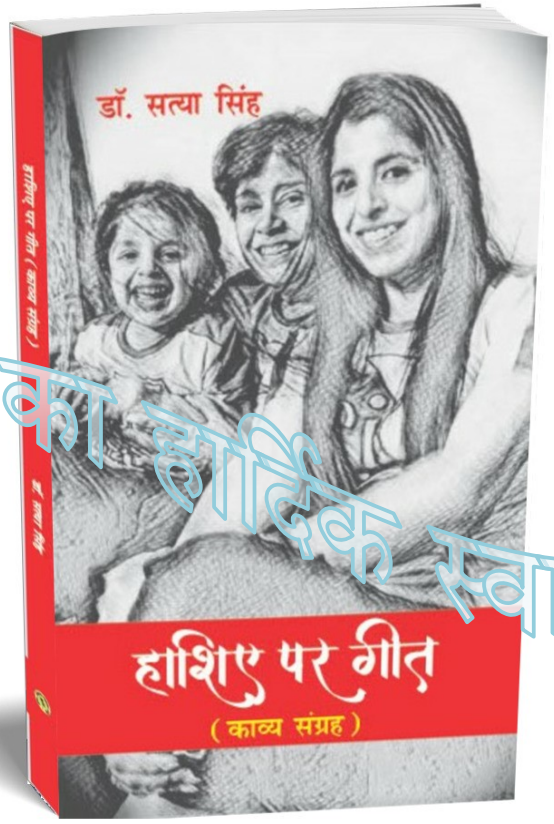

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-963524-7-9
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 120
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

भागो नहीं दुनिया को बदलो...

राहुल सांकृत्यायन जयंती (9 अप्रैल) पर विशेष

21वीं सदी के इस दौर में जब संचार-क्रान्ति के साधनों ने समग्र विश्व को एक 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित कर दिया हो एवम् इण्टरनेट द्वारा ज्ञान का समूचा संसार क्षण भर में एक क्लिक पर सामने उपलब्ध हो, ऐसे में यह अनुमान लगाना कि कोई व्यक्ति दुर्लभ ग्रन्थां की खोज में हजारों मील दूर पहाड़ां व नदियों के बीच भटकने के बाद, उन ग्रन्थों को खच्चरों पर लादकर अपने देश में लाए, रोमांचक लगता है। पर ऐसे ही थे-भारतीय मनीषा के अग्रणी विचारक, साम्यवादी चिन्तक, सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत, सार्वदेशिक दृष्टि एवं घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के महान पुरूष महापण्डित राहुल सांकृत्यायन।

कृष्ण कुमार यादव

उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में निजामाबाद तहसील अन्तर्गत पन्दहा गाँव में अपने नाना पं0 रामशरण पाठक के यहाँ 9 अप्रैल, 1893 को जन्मे राहुल सांकृत्यायन का पैतृक गाँव कनैला रहा, पर इनका लालन-पालन एवं शिक्षा-दीक्षा ननिहाल में ही हुआ। चूँकि नाना पं0 रामशरण पाठक एक अनुशासन प्रिय सैनिक थे, सो राहुल पर अनुशासन का गहरा प्रभाव पड़ा। इनके बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डे था। माता का नाम कुलवन्ती देवी एवं पिता का नाम गोवर्धन पाण्डे था। सन् 1898 में राहुल जी की शिक्षा प्राथमिक पाठशाला, रानी की सराय में आरम्भ हुई एवं सन् 1908 में उर्दू मिडिल की परीक्षा निजामाबाद के मिडिल स्कूल से उत्तीर्ण की। राहुल ने निजामाबाद के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करते हुए लिखा है कि- ''एक समय वह था जब निजामाबाद में सम्राट अकबर ने कई महीने बिताए। अपने जन्म दिन के उपलक्ष्य में सोने के रत्नों के तुलादान किए।'' हिन्दी के युग प्रवर्तक कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की जन्म स्थली और कृष्ण प्रसाद गौड़ (बेढ़ब बनारसी) का ननिहाल भी यहीं रहा है। राहुल का विवाह 11 वर्ष की अल्पायु में ही रामदुलारी से कर दिया गया। 19 वर्ष की आयु में राहुल का सम्पर्क सरसा जिले के एक मठाधीश से हुआ और वो उनके शिष्य होकर साधु बन गये एवं अपना नाम 'रामोदर साधु' रख लिया। इसके बाद ही उन्होंने अपना वैराग्य और घुमक्कड़ी जीवन आरम्भ कर दिया।

मानवेन्द्र नाथ राय और आचार्य नरेन्द्र देव सरीखे दार्शनिक व चिन्तकों की कड़ी के ही एक मजबूत स्तम्भ थे- राहुल सांकृत्यायन। भारतीय अध्यात्म से लेकर मार्क्सवाद तक पर गहरी पकड़ रखने वाले इन मनीषियों की चिन्ता मात्र दुनिया को समझने व उसका विश्लेषण करने तक सीमित नहीं थी, वरन्

अपनी अदभुत मेधा की बदौलत वे दुनिया को बदलने का सपना भी देखते थे। राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'भागो नहीं दुनिया को बदलो' इसी कल्पना को मूर्त रूप देती नजर आती है। भारतीय समाज में व्याप्त अन्तर्विरोधों की व्याख्या करते हुए समाजवादी समाज का विकल्प प्रस्तुत करती यह पुस्तक किसी 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' से कमतर नहीं है एवम् आज भी साम्यवादी और समाजवादी आन्दोलनों से जुड़े तमाम लोग इस पुस्तक से प्रेरणा पाते हैं। यह पुस्तक राहुल की जनसामान्य के प्रति अटूट निष्ठा और तथाकथित अभिजात्य व शिक्षित वर्ग एवं राजनीतिज्ञों के प्रति सन्देह भी व्यक्त करती है। इस पुस्तक की भूमिका में उनके शब्द गौरतलब हैं- ''राजनीति को थोड़े पढ़े-लखे आदमियों के हाथ में देकर अब चुप नहीं बैठा जा सकता। ऐसा करने से जनता को बराबर नुकसान उठाना पड़ा। जनता को वोट देने का अधिकार दे देने से काम नहीं चलेगा, उसे अपनी भलाई-बुराई भी मालूम होनी चाहिये और यह मालूम होना चाहिए कि राजनीति के अखाड़े में कैसे दाँव-पेंच खेले जाते हैं।''

राहुल सांकृत्यायन उस दौर की उपज थे जब ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भारतीय समाज, संस्कृति अर्थव्यवस्था और राजनीति सभी संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहे थे। वह दौर समाज सुधारकों का था एवं काग्रेस अभी शैशवावस्था में थी। इन सब से राहुल अप्रभावित न रह सके एवं अपनी जिज्ञासु व घुमक्कड़ प्रवृत्ति के चलते घर-बार त्याग कर साधु वेषधारी सन्यासी से लेकर वेदान्ती, आर्यसमाजी व किसान नेता एवं बौद्ध भिक्षु से लेकर साम्यवादी चिन्तक तक का लम्बा सफर तय किया। सन् 1930 में श्रीलंका जाकर वे बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गये एवं तभी से वे 'रामोदर साधु' से 'राहुल' हो गये और सांकृत्य गोत्र के कारण सांकृत्यायन कहलाये। उनकी अद्भुत तर्कशक्ति और अनुपम ज्ञान भण्डार को देखकर काशी के पंडितों ने महापंडित की उपाधि दी एवं इस प्रकार वे केदारनाथ पाण्डे से महापंडित राहुल सांकृत्यायन हो गये। सन् 1937 में रूस के लेनिनग्राद में एक स्कूल में उन्होंने संस्कृत अध्यापक की नौकरी कर ली और उसी दौरान ऐलेना नामक महिला से दूसरी शादी कर ली, जिससे उन्हें इगोर राहुलोविच नामक पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। छत्तीस भाषाओं के ज्ञाता राहुल ने उपन्यास, निबंध, कहानी, आत्मकथा, संस्मरण व जीवनी आदि विधाओं में साहित्य सृजन किया परन्तु अधिकांश साहित्य हिन्दी में ही रचा। राहुल तथ्यान्वेषी व जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे सो उन्होंने हर धर्म के ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। अपनी दक्षिण भारत यात्रा के दौरान संस्कृत-ग्रंथों, तिब्बत प्रवास के दौरान पालि-ग्रन्थों तो लाहौर यात्रा के दौरान अरबी भाषा सीखकर इस्लामी धर्म ग्रन्थों का अध्ययन किया। निश्चिततः राहुल सांकृत्यायन की मेधा को साहित्य, अध्यात्म, ज्योतिष, विज्ञान, इतिहास, समाज शास्त्र, राजनीति, भाषा, संस्कृति, धर्म एवम् दर्शन के टुकड़ों में बाँटकर नहीं देखा जा सकता वरन् वह तो समग्र भारतीयता के मूर्त रूप थे। यही कारण था कि उन्होंने भावी भारतीय राष्ट्र एवं वैश्विक व्यवस्था की कल्पना उस दौर में कर ली और सन् 1922-23 में हजारीबाग जेल में निरूद्ध रहने के दौरान उन्होंने अपनी प्रथम पुस्तक 'बाईसवीं सदी' लिखी।

राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व का एक प्रमुख पक्ष भारतीय समाज की विशिष्टताओं को आत्मसात् कर चलना रहा है। जहाँ उचित परम्पराओं को उन्होंने तार्किक-विश्लेषण के आधार पर सिद्ध किया वहीं विभेदकारी और अंधविश्वासी परम्पराओं मसलन-सामंतवाद, ब्राह्मणवाद, जातिवाद, अस्पृश्यतावाद, मायावाद, पुनर्जन्मवाद, धार्मिक अंधविश्वासों इत्यादि का तीव्र विरोध किया। राहुल ने जीवन भर जड़ता के विरूद्ध ऐसी प्रगतिशील-ऐतिहासिक शक्तियों का आह्वान किया जिससे नया मनुष्य और नयी समाज व्यवस्था गढ़ी जा सके। उनका चिन्तन मात्र किताबी नहीं था वरन् जन साधारण को केन्द्र में रखकर उन्होंने समाज को बदलने की कोशिश की। इसीलिए राहुल अपने साहित्य, दर्शन, इतिहास और राजनैतिक चिन्तन को अभिजात्य वर्ग की तरह बौद्धिक बहस के रूप में नही वरन् जीवन-

सापेक्ष बनाकर लोक संस्कृति से जोड़ते हैं। उनका धर्म रूढ़ियों और कर्मकाण्डों पर आधारित न होकर सहज करूणा, प्रेम व मैत्री भाव पर आधारित है।

कभी-कभी राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व पर यह प्रश्नचिन्ह भी लगाया जाता है कि वे जीवन में कभी भी स्थायित्व को न प्राप्त कर सके। चाहे वह उनकी पारिवारिक जिन्दगी में तीन शादियों का सवाल हो (सन् 1949 में राहुल ने तीसरी शादी कमला से की, जिससे उन्हें जया और जेती नामक पुत्री व पुत्र उत्पन्न हुए) या फिर वेदान्ती से साम्यवादी तक का सफर। राहुल के जीवन का मूलमंत्र ही घुमक्कड़ी यानी गतिशीलता रही है। घुमक्कड़ी उनके लिए वृत्ति नहीं वरन् धर्म था। तीसरी कक्षा की पढ़ाई के दौरान ही राहुल ने इस्माइल मेरठी की ये पंक्तियाँ पढ़ीं और उसे अपने जीवन में आत्मसात् कर लिया-

सैर कर दुनिया की गाफिल, जिन्दगानी फिर कहाँ?
जिन्दगी गर कुछ रही, तो नौजवानी फिर कहाँ?

राहुल का समग्र जीवन ही रचनाधर्मिता की यात्रा थी। जहाँ भी वे गए वहाँ की भाषा व बोलियों को सीखा और इस तरह वहाँ के लोगों में घुलमिल कर वहाँ की संस्कृति, समाज व साहित्य का गूढ़ अध्ययन किया। उनका मानना था कि घुमक्कड़ी मानव-मन की मुक्ति का साधन होने के साथ-साथ अपने क्षितिज विस्तार का भी साधन है। उन्होंने कहा भी था कि- ''कमर बाँध लो भावी घुमक्कड़ों, संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है।'' राहुल ने अपनी यात्रा के अनुभवों को आत्मसात् करते हुए 'घुमक्कड़ शास्त्र' भी रचा। वे एक ऐसे घुमक्कड़ थे जो सच्चे ज्ञान की तलाश में था और जब भी सच को दबाने की कोशिश की गई तो वह बागी हो गया। उनका सम्पूर्ण जीवन अन्तर्विरोधों से भरा पड़ा है। वेदान्त के अध्ययन पश्चात जब उन्होंने मंदिरों में बलि चढ़ाने की परम्परा के विरूद्ध व्याख्यान दिया तो अयोध्या के सनातनी पुरोहित उन पर लाठी लेकर टूट पड़े। बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बावजूद वह इसके 'पुनर्जन्मवाद' को नहीं स्वीकार पाए। बाद में जब वे मार्क्सवाद की ओर उन्मुख हुए तो उन्होंने तत्कालीन सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी में घुसे सत्तालोलुप सुविधापरस्तों की तीखी आलोचना की और उन्हें आन्दोलन के नष्ट होने का कारण बताया। सन् 1947 में अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रूप में उन्होंने पहले से छपे भाषण को बोलने से मना कर दिया एवं जो भाषण दिया, वह अल्पसंख्यक संस्कृति एवं भाषाई सवाल पर कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों के विपरीत था। नतीजन पार्टी की सदस्यता से उन्हें वंचित होना पड़ा, पर उनके तेवर फिर भी नहीं बदले। इस कालावधि में वे किसी बंदिश से परे प्रगतिशील लेखन के सरोकारों और तत्कालीन प्रश्नों से लगातार जुड़े रहे। इस बीच मार्क्सवादी विचारधारा को उन्होंने भारतीय समाज की ठोस परिस्थितियों का आकलन करके ही लागू करने पर जोर दिया। अपनी पुस्तक 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' एवं 'दर्शन-दिग्दर्शन' में इस सम्बन्ध में उन्होंने सम्यक प्रकाश डाला। अन्ततः सन् 1953-54 के दौरान पुनः एक बार वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बनाये गये।

एक कर्मयोगी योद्धा की तरह राहुल सांकृत्यायन ने बिहार के किसान-आन्दोलन में भी प्रमुख भूमिका निभाई। सन् 1940 के दौरान किसान-आन्दोलन के सिलसिले में उन्हें एक वर्ष की जेल हुई तो देवली कैम्प के इस जेल-प्रवास के दौरान उन्होंने 'दर्शन-दिग्दर्शन' ग्रन्थ की रचना कर डाली। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के पश्चात जेल से निकलने पर किसान आन्दोलन के उस समय के शीर्ष नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक पत्र 'हुंकार' का उन्हें सम्पादक बनाया गया। ब्रिटिश सरकार ने फूट डालो और राज करो की नीति अपनाते हुए गैर कांग्रेसी पत्र-पत्रिकाओं में चार अंकों हेतु 'गुण्डों से लड़िए' शीर्षक से एक विज्ञापन जारी किया। इसमें एक व्यक्ति गाँधी टोपी व जवाहर बण्डी पहने आग लगाता हुआ दिखाया गया था। राहुल सांकृत्यायन ने इस विज्ञापन को छापने से इन्कार कर दिया पर विज्ञापन की मोटी धनराशि देखकर स्वामी सहजानन्द ने इसे छापने पर

जोर दिया। अन्ततः राहुल ने अपने को पत्रिका के सम्पादन से ही अलग कर लिया। इसी प्रकार सन् 1940 में 'बिहार प्रान्तीय किसान सभा' के अध्यक्ष रूप में जमींदारां के आतंक की परवाह किए बिना वे किसान सत्याग्रहियों के साथ खेतों में उतर हँसिया लेकर गन्ना काटने लगे। प्रतिरोध स्वरूप जमींदार के लठैतों ने उनके सिर पर वार कर लहुलुहान कर दिया पर वे हिम्मत नहीं हारे। इसी तरह न जाने कितनी बार उन्होंने जनसंघर्षों का सक्रिय नेतृत्व किया और अपनी आवाज को मुखर अभिव्यक्ति दी।

भारतीय साहित्य व संस्कृति में राहुल सांकृत्यायन का योगदान अक्षुण्ण है। चाहे वह तिब्बत से तिब्बती, पाली व संस्कृत के हस्तलिखित ग्रन्थों को बाईस खच्चरों पर लादकर भारत लाने की जीवटता हो अथवा दर्शन, इतिहास, संस्कृति व साहित्य जैसे जटिल बौद्धिक विषयों को जन भाषा और सरल शब्दावली में सर्वसुलभ बनाना हो या अतीतोन्मुखी होने की बजाय खुले दिमाग से अतीत के उदात्त व मानवीय पहलुओं को अपनाना हो एवं विचार धाराओं की जड़ता के विपरीत समाज की वस्तुगत परिस्थितियों व जनसाधारण को अपने चिन्तन का केन्द्र-बिन्दु बनाना हो..... ये सभी विशिष्टतायें राहुल सांकृत्यायन की मेधा की समग्रता की परिचायक हैं। उनका मानना था कि बाहरी क्रान्ति से ज्यादा जरूरी मानसिक क्रान्ति की है। वे एक जगह लिखते हैं कि- ''आज जिस तरह का मानव जाति का ढाँचा दिखाई पड़ता है, असल में सब दोष उसी ढाँचे का है। जब तक यह ढाँचा तोड़कर नया ढाँचा नहीं बनाया जाता, तब तक दुनिया नरक बनी रहेगी। ढाँचा तोड़ना भी एक आदमी के बूते का नहीं है, उसके लिए उन सब लोगों को काम करना है जिनको इस ढाँचे ने आदमी नहीं रहने दिया।'' यही कारण था कि परम्परा विमुखता की बजाय उन्होंने परम्पराओं की प्रासंगिकता व उनके सकारात्मक विकास पर जोर दिया। समाज के उपेक्षित वर्गों के प्रति वे काफी भाव-विह्वल दिखे। पितृसत्तात्मक भारतीय समाज में नारी के साथ भेदभाव और ब्राह्मणवादी समाज में दलितों के साथ भेदभाव व शोषण के विरूद्ध उन्होंने लोगों को जनसामान्य की भाषा में लिखे गये नाटकों, गीतों व लेखों के माध्यम से आन्दोलित किया। जहाँ 'मेहरारून के दुर्दशा' नामक भोजपुरी नाटक के बहाने उन्होंने सामंती समाज में स्त्री-शोषण को उकेरा वहीं एक साम्यवादी चिंतक के रूप में 'साम्यवाद ही क्यों' पुस्तक में 'स्त्रियों की परतंत्रता' नामक लेख में नारी की मुक्ति का पथ साम्यवादी समाज में खोजने का प्रयास किया। भारतीय समाज में नारियों, पिछड़ों, दलितों एवं शूद्रों की दुर्दशा सदैव उनके अन्तर्मन को आन्दोलित करती रही। अपने कहानी संग्रह ''सतमी के बच्चे'' में भी उन्होंने ग्रामीण जीवन में व्याप्त शोषण, छुआछूत और विपन्नता को उजागर किया। अपने एक लेख ''अछूतों को क्या चाहिए?'' में राहुल ने अस्पृश्य दलित जातियों के प्रति सवर्ण जातियों के उपेक्षात्मक व्यवहार की कड़ी निन्दा की। कभी-कभी तो राहुल की रचनाएं पढ़कर प्रेमचन्द की रचनाओं का भ्रम होने लगता है। समाज में लड़का-लड़की के जन्म पर व्याप्त भेद को रेखांकित करते हुए उन्होंने भोजपुरी में लिखा - एके माई बाप से एक ही उदरवा में, दूनों के जनमवा भइल रे पुरूखवा।

पूत के जनमवा में नाच आ सोहर होला, बेटी के जनम परे सोग रे पुरूखवा।।

राहुल सांकृत्यायन सदैव घुमक्कड़ ही रहे। उनके शब्दों में- ''समदर्शिता घुमक्कड़ का एकमात्र दृष्टिकोण है और आत्मीयता उसके हरेक बर्ताव का सार।'' यही कारण था कि सारे संसार को अपना घर समझने वाले राहुल सन् 1910 में घर छोड़ने के पश्चात पुनः सन् 1943 में ही अपने ननिहाल पन्दहा पहुँचे। वस्तुतः बचपन में अपने घुमक्कड़ी स्वभाव के कारण पिताजी से मिली डांट के पश्चात उन्होंने प्रण लिया था कि वे अपनी उम्र के पचासवें वर्ष में ही घर में कदम रखेंगे। चूँकि उनका पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा ननिहाल में ही हुआ था सो ननिहाल के प्रति ज्यादा स्नेह स्वाभाविक था। बहरहाल जब वे पन्दहा पहुँचे तो कोई उन्हें पहचान न सका पर अन्ततः लोहार नामक एक वृद्ध व्यक्ति ने उन्हें पहचाना और स्नेहासक्ति रूधे कण्ठ से 'कुलवन्ती के पूत केदार' कहकर राहुल को अपनी बाँहों में भर लिया। अपनी जन्मभूमि पर एक बुजुर्ग की परिचित आवाज ने राहुल को भावविभोर कर दिया। उन्होंने अपनी डायरी में इसका उल्लेख भी किया है- ''लाहौर नाना ने जब यह कहा कि 'अरे ई जब भागत जाय त s भगईया गिरत जाय' तब मेरे सामने अपना बचपन नाचने लगा। उन दिनों गाँव के बच्चे छोटी पतली धोती भगई पहना करते थे। गाँववासी बड़े बुजुर्गो का यह भाव देखकर मुझे महसूस होने लगा कि तुलसी बाबा ने यह झूठ कहा है कि- ''तुलसी तहां न जाइये, जहाँ जन्म को ठांव, भाव भगति को मरम न जाने धरे पाछिलो नांव''

'भागो नहीं दुनिया को बदलो' विचारधारा वाले राहुल सांकृत्यायन सार्वदेशिक दृष्टि की ऐसी प्रतिभा थे, जिनकी साहित्य, इतिहास, दर्शन संस्कृति सभी पर समान पकड़ थी। विलक्षण व्यक्तित्व के अद्भुत मनीषी, चिन्तक, दार्शनिक, साहित्यकार, लेखक, घुमक्कड़, कर्मयोगी व सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत रूप में राहुल ने जिन्दगी के सभी पक्षों को जिया। यही कारण है कि उनकी रचनाधर्मिता शुद्ध कलावादी साहित्य नहीं है, वरन् वह समाज, सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, विज्ञान, धर्म, दर्शन इत्यादि से अनुप्राणित है जो रूढ़ धारणाओं पर कुठाराघात करती है तथा जीवन-सापेक्ष बनकर समाज की प्रगतिशील शक्तियों को संगठित कर संघर्ष एवं गतिशीलता की राह दिखाती है। ऐसे मनीषी को अपने जीवन के अंतिम दिनों में 'स्मृति लोप' जैसी अवस्था से गुजरना पड़ा एवं इलाज हेतु उन्हें मास्को भी ले जाया गया। पर घुमक्कडी को कौन बाँध पाया है, सो मार्च 1963 में वे पुनः मास्को से दिल्ली आ गए और 14 अप्रैल, 1963 को सत्तर वर्ष की आयु में सन्यास से साम्यवाद तक का उनका सफर पूरा हो गया पर उनका जीवन दर्शन और घुमक्कड़ी स्वभाव आज भी हमारे बीच जीवित है।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

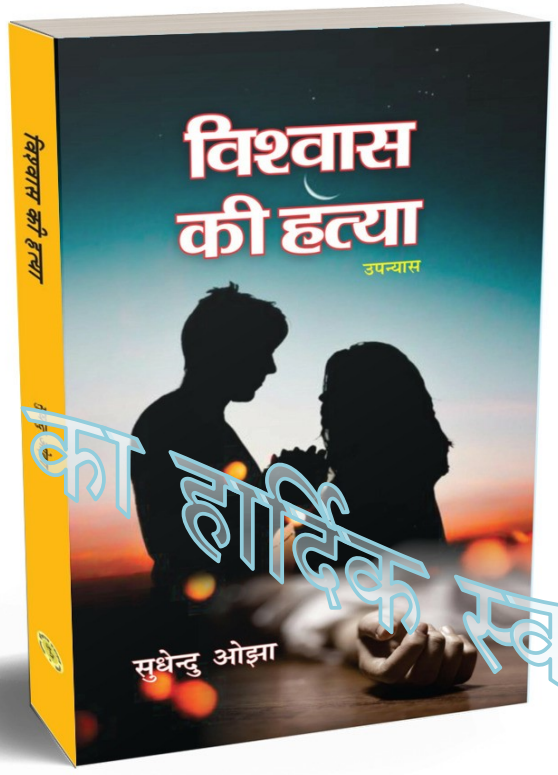

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-8-7**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 198
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

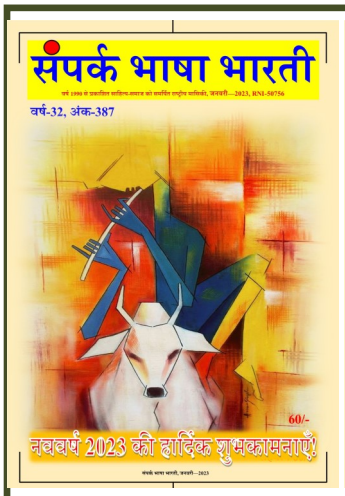

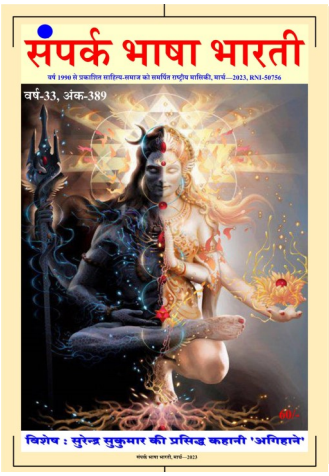

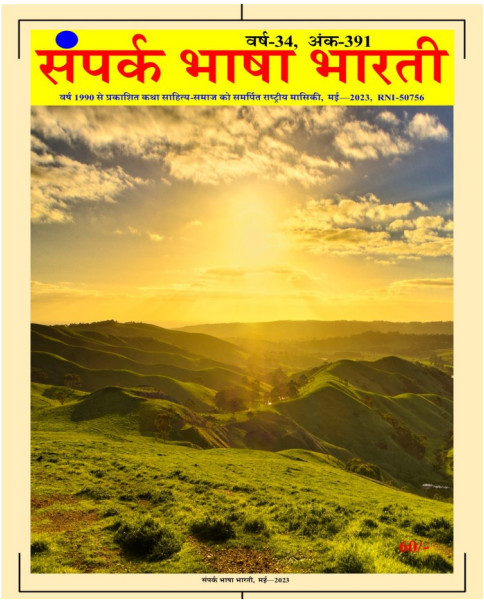

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

सोना समझ गयी

बालकहानी :

"मैं बहुत थक गयी हूँ। अब एक कदम भी नहीं चला जाता है मुझसे। सुबह से शाम तक बस; सिर्फ काम ही काम। सुनिए जी, आज मैं घर पर ही रहूँगी। आप जाइये काम पर।" नन्हीं चींटी सोना ने अपने पति डंबू से कहा।

डंबू ने सोना को चिढ़ाते हुए कहा - "ओह ! तो आज मेरी सोना थक गई है। आराम फरमाएगी। अच्छा...!"

डंबू की बात से सोना तमतमा गयी। कहने लगी- "मैं आपसे ज्यादा वजनदार सामान उठाती हूँ, लेकिन आज थोड़ी थकान महसूस हो रही।" डंबू ने कहा- "ठीक है, आज तुम आराम कर लो। कल साथ में चलेंगे।" सोना ने मुस्कुराते हुए कहा- "लो आप जाइए।" डंबू काम पर चला गया।

दिन भर डंबू काम करता रहा। शाम को घर वापस आया। खाने का कुछ सामान ले आया था। घर के अंदर रखा। सोना से कहा - "सोना ! तुम्हारी तबीयत कैसी है ?"

सोना सेब के टुकड़े को चबाते हुए मजे से बोली- "मैं बिल्कुल अच्छी हूँ। भली चंगी हूँ।"

सोना घर में रहने का बहुत आनंद ले रही थी। डंबू को बात समझ आ गयी। उस समय उसने कुछ नहीं कहा। अगले दिन सुबह डंबू ने सोना से भोजन की व्यवस्था के लिए अपने साथ चलने की बात कही। सोना फिर बहाना मारने लगी। लेकिन डंबू अच्छी तरह समझ गया। सोना को समझाते हुए कहा- "देखो सोना, मुझे पता है कि तुम काम पर नहीं जाना नहीं चाहती। क्यों कर रही हो ऐसा ?"

डंबू का मुँह ताकती हुई सोना उसकी बातें सुन रही थी- "हम चींटीं हैं। हम घर पर बैठ कर आराम नहीं कर सकते। बहाना तो इंसान बनाते हैं; हम चींटियाँ नहीं। जब तक मेहनत नहीं करेंगे, भला हमें भोजन कैसे और कहाँ से मिलेगा ?" तभी बीच में ही सोना का कहना हुआ - "हाँ, तुम सही कह रहे हो। जीवन में मेहनत जरूरी है।"

डंबू बोला - "हाँ बिल्कुल। अब सर्दी का मौसम आ रहा है। भोजन ढूँढना मुश्किल होगा। इस बात को समझो। चीटियाँ कभी हार नहीं मानतीं। जब कोई इंसान कमजोर पड़ने लगता है तो हम से ही मेहनत करने की सीख लेता है कि एक छोटा सा जीव जब हार नहीं मानता है तो हम क्यों हार माने। इंसानों को हमारी मेहनत ,एकता और साहस ही मजबूत बनाता है। धरती में सबसे ज्यादा मेहनतकश प्राणी के रूप हमारी गिनती होती है। तुम ऐसे कमजोर नहीं पड़ सकती।" सोना को डंबू की बातें समझ में आ गयी। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। फिर डंबू और सोना दोनों भोजन की तलाश में निकल पड़े।

प्रिया देवांगन "प्रियू"

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

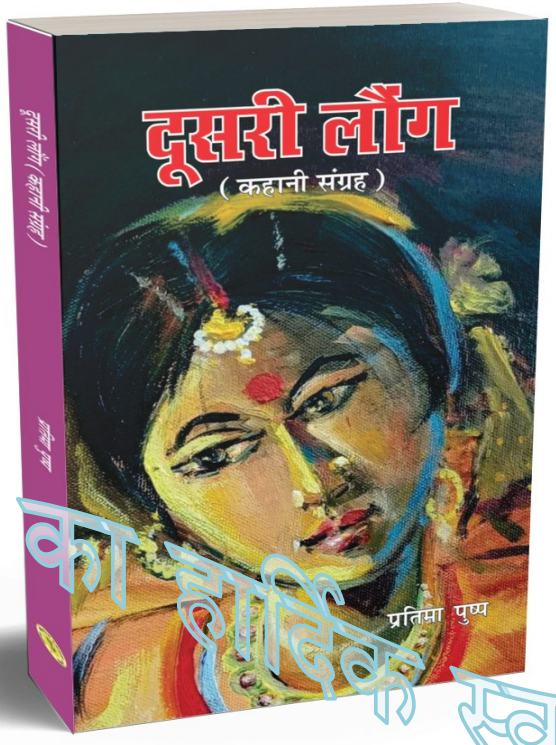

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

अनुकरणीय भगवान् श्री राम

'रमणे कणे कणे इति राम'

जो कण कण में बसे , वही राम है . श्री राम के विषय में सनातन धर्म में अनेक कथायें एवं गाथायें विद्यमान हैं .श्री राम जी के जीवन की अनुपम कथायें , महर्षि वाल्मीकि जी ने अत्यंत सुंदर शब्दों में रामायण मे प्रस्तुत किया है . इसके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी में रामचरितमानस की रचना करके उसे जन जन के हृदय तक पहुंचा दिया .

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम का चरित्र अनुकरणीय है . उनका पूरा जीवन आदर्श और प्रेरणा से पूर्ण है . इस धरा पर अवतरित होकर उन्होंने साधु संतों तथा अपने भक्तौं की रक्षा की तथा सत्य के मार्ग पर चलने का संदेश दिया . उनके बताये मार्ग का अनुकरण करके ही हम लोग अपना , समाज और राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं .और साथ में आपसी एकता और अखंडता को बनाकर रख सकते हैं .

धर्मग्रंथों में भगवान् राम को सबसे आदर्श पुरुष माना गया है . सांसारिक जीवन में आगे बढने ,नाम कमाने यानी यश कीर्ति के लये सद्गुणों और अच्छे कार्यों की भूमिका होती है , क्योंकि गुण और कार्य ही किसी भी इंसान को असाधारण और विलक्षण प्रतिभा का स्वामी बना देते हैं . भगवान् राम का चरित्र और कार्य उन्हीं गुणों को जीवन की घटनाओं के माध्यम से जन मानस के समक्ष रखा गया है .

उन्होंने मानवीय रूप में जन जन का भरोसा और विश्वास अपने आचरण और असाधारण गुणों से ही पाया . उनकी चारित्रिक गुणों के कारण ही वह न केवल लोकनायक बने , वरन् युगान्तर में भी भगवान् के रूप में पूजित हो रहे हैं .

श्री राम कर्तव्यनिष्ठ हैं . पिता की आज्ञा का पालन करने के लिये राजगद्दी को त्याग कर वनगमन को स्वीकार कर लिया .

श्री राम जी का मधुर स्वभाव है एवं सरस भाषी हैं.

श्री राम जी ने माता पिता का सम्मान करने का आदर्श प्रस्तुत किया है . भ्रातृ प्रेम का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करते हुये भरत जी के प्रति उनका अटूट विश्वास और प्रेम उनके चरित्र द्वारा देखने को मिलता है .

राम जी ने गुरु की महत्ता को अपने दैनिक जीवन के द्वारा प्रदर्शित किया है . यहाँ तक कि गुरु ही जीवन के अंधकार को मिटाने का मार्गदर्शन कर सकता है .

राम जी ने कठिन से कठिन परिस्थिति में धैर्य को नहीं खोया है .

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

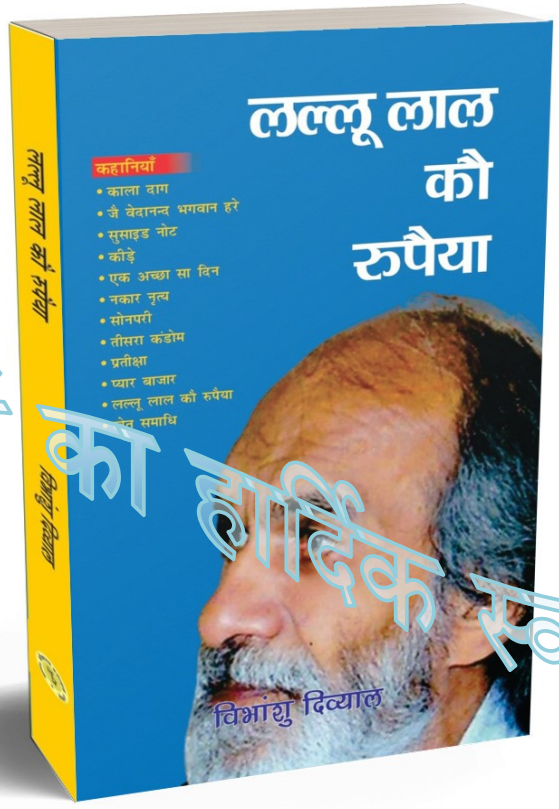

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

मानस में कहा है बड़े भाग मानुस तन पावा .... अर्थात मनुष्य का शरीर बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है क्योंकि इसी जीवन में अपने कर्मों के द्रवारा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं

वर्तमान संदर्भों में भी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के आदर्शों का जनमानस पर गहरा प्रभाव है . त्रेतायुग में भगवान् श्री राम से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं, उनसे उत्तम कोई व्रत नहीं , कोई श्रेष्ठ योग नहीं , कोई उत्कृष्ट अनुष्ठान नहीं . उनके महान् चरित्र की वृत्तियाँ जनमानस के मन को शांति और आनंद उपलब्ध करवाती हैं

संपूर्ण भारतीय समाज के जनमानस में एक समान रूप से आदर्श के रूप में भगवान् श्री राम को उत्तर से दक्षिण तक स्वीकार करके पूज्य माना जाता है . उनका तेजस्वी एवं पराक्रमी स्वरूप भारत की एकता का प्रत्यक्ष चित्र उपस्थित करता है .

आदिकवि वाल्मीकि ने उनके संबंध में लिखा है कि वे गांभीर्य में उदधि के समान और धैर्य में हिमालय के समान हैं . राम जी के चरित्र में पग पग पर मर्यादा , त्याग , प्रेम और लोकव्यवहार के दर्शन होते हैं . राम ने साक्षात परमात्मा होकर भी मानव जाति को मानवता का संदेश दिया . उनका पवित्र चरित्र लोकतंत्र का प्रहरी उत्प्रेरक और निर्माता भी है . इसीलिये भगवान् राम के आदर्शों का जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव है और युगों युगों तक रहेगा .

सर्वोच्च संरक्षक विष्णु के अवतार श्री राम सदा ही हिंदू देवताओं के बीच लोकप्रिय रहे . राम शिष्टाचार और सदाचार के प्रतीक हैं, जो मूल्यों और नैतिकता के उदाहरण हैं . श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं , जिसका अर्थ है.. मर्यादा का पालन करने वाला ..उन्होंने सदा ही मर्यादा का पालन किया . वह सिद्ध पुरुष थे .. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार श्री राम ने उस युग की राक्षसी वृत्तियों अथवा बुरी शक्तियों को नष्ट करने के लिये इस धरती पर जन्म लिया था .

देवता के रूप में .... भगवान् राम स्वामी विवेकानंद के शब्दों में सत्य का अवतार , नैतिकता का आदर्श पुत्र , आदर्श पति और सबसे बढ कर आदर्श राजा हैं , जिनके कर्म उन्हें ईश्वर की श्रेणी में खड़ा करते हैं .

वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण एक महान् हिंदू महाकाव्य है . हिंदू धर्म की मान्यता के अनुसार राम का जन्म त्रेता युग में हुआ था . वाल्मीकि रचित रामायण संस्कृत भाषा में थी ...गोस्वामी तुलसीदास ने इसी कथा को अवधी भाषा में रामचरितमानस के नाम से रच कर जन जन के मानस तक पहुंचा दिया . इस अद्भुत रचना ने महान् हिंदू देवता के रूप में श्री राम को जनमानस पर प्रतिष्ठित कर दिया ...राम जी की लोकप्रियता को बहुत बढा दिया और विभिन्न भक्ति समूहों को जन्म दिया .

राम जी का चरित्र .... श्री राम सद्गुणों की खान थे . वह न केवल दयालु और स्नेही थे वरन् उदार और सहृदयी भी थे . भगवान् राम के पास एक अद्भुत शारीरिक और मनोरम शिष्टाचार था . श्री राम का व्यक्तित्व अतुल्य और भव्य था . वह अत्यंत महान् ,उदार , शिष्ट और निडर थे . वे बहुत सरल स्वभाव के थे .

आदर्श उदाहरण.... भगवान् राम को दुनिया में एक आदर्श पुत्र के रूप जाना जाता है एवं अच्छे गुणों के प्रत्येक पहलू में वह श्रेष्ठ प्रतीत होते हैं . उन्होनें अपने पूरे जीवन में कभी झूठ नहीं बोला ... वह हमेशा विद्वानों और गुरुजनों के प्रति सम्मान की दृष्टि से पेश आते थे .लोग उनसे स्नेह करते थे और उन्होंने सभी लोगों को बहुत प्रेम और आदर दिया . उनका व्यक्तित्व पारलौकिक और उत्कृष्ट था . वे परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को समायोजित कर लेते थे . वह सर्वज्ञ होने के कारण प्रत्येक मनुष्य के हृदय की भावनाओं को जानते और समझते थे . वह राजा के पुत्र थे और उनके अंदर राजा के सभी बोधगम्य गुण थे और वह लोगों के दिलों में वास करते थे .

भगवान् राम अविश्वसनीय अलौकिक गुणों से संपन्न ....भगवान् राम अविश्वसनीय पारमार्थिक गुणों से संपन्न थे .वह गुणों की खान थे . उनमें अदम्य साहस और पराक्रम था . और वह सभी के लिये अप्रतिम भगवान् के रूप में थे . एक सफल जीवन जीने के लिये , श्री राम के जीवन का अनुकरण करना श्रेयस्कर उपाय है . श्री राम का जीवन एक पवित्र अनुपालन का जीवन , अद्भुत बेदाग चरित्र , अतुलनीय सादगी ,प्रशंसनीय संतोष , सराहनीय आत्म बलिदान एवं उल्लेखनीय त्याग का जीवंत उदाहरण है

श्री राम हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार आदर्श पुरुषों में गिने जाते हैं , पुराणों में उन्हें श्रेष्ठ राजा कहा गया है . उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है. वह मनुष्य रूप में जन्मे और ऋषि विश्वामित्र से विद्योपार्जन के उपरांत पृथ्वी पर अनेकानेक राक्षसों का संहार किया . सत्य , धर्म , दया और मर्यादा पर चलते हुये राज किया . उन्होंने जिस तरह राज किया , उसे आज भी रामराज्य कह कर याद किया जाता है . हमारी संस्कृति और सदाचार की जब भी बात होती है तो श्री राम का नाम लिया जाता है . आज भी बड़े बुजुर्ग के मुंह से सुनने को मिलता है कि बेटा हो तो राम जैसा .... राजा हो तो राम जैसा

पद्मा अग्रवाल

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

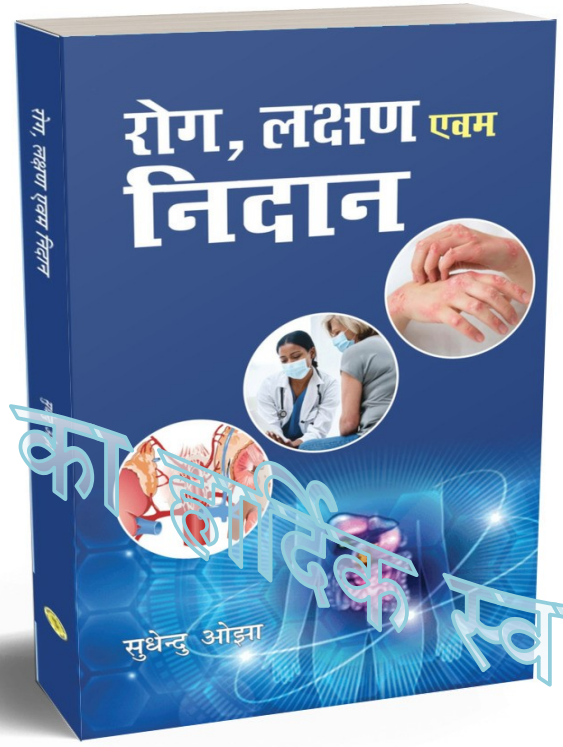

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

चौखट

रामेश्वर महादेव वाढेकर

(कहानी)

कई दिनों से दिल की बात कहनी थी।कैसे बताऊं। समझ नहीं रहा।आज किसी भी हालात में बताऊंगा।तभी दिल को सुकून मिलेगा।वह सिग्नल पर दिखाई दी। इसके पहले कई बार दिखी थी।उसे पहली बार भी वहीं देखा।देखते ही मैं प्रेम में डूब गया।मेरे बारे में उसके क्या विचार है पता नहीं।उसे देखने हर दिन यहां आता। किन्तु बोलने की हिम्मत अभी तक नहीं हुई।सामने खड़ी है नज़रों के। उतने में सिग्नल छूटा। पीछे से गाड़ियां के हॉर्न बज रहे थे। मुझे सुनाई या दिखाई नहीं दिया। उसके बिना। ट्राफिक पुलिस ने गाड़ी साइड में लगाने का इशारा किया। कुछ समय बाद गुस्से में कहा। "आपको नियम समझ नहीं आता।"

- "सर। मुझ से गलती हो गई। मैं फाइन भरने को तयार हूं।"
- "जल्दी फाइन भरो। यहां से रफा-दफा हो।"

दिल में इच्छा न होकर भी गाड़ी शुरू की। धीरे-धीरे गाड़ी चला रहा था। उसके तरफ देखकर।गाड़ी की तरफ वह आती दिखाई दी। मैंने गाड़ी खड़ी की। गाड़ी में बैठा रहा। उसने गाड़ी का शीशा खटखटाया।मैंने दरवाजे का शीशा नीचे किया। बाद में नीचे उतरा।उसके तरफ देखता रहा।वह बोली जा रही थी। मैं सिर्फ सुनता रहा।

उसने जोर से कहा। "मैं आपको बहुत दिनों से देखती हूं।आप अनेक बार सिग्नल छूटने के पश्चात भी वहीं खड़े रहते हैं। आपसे पुलिस वाला किस तरह बातें करता है। यह मैंने सुना। देखा।आप संस्कारी व्यक्ति दिखते हैं। दूबारा ऐसा मत करो।"

मैं देखता ही रहा।कुछ समय बाद मैंने कहा। "जी। दूबारा गलती नहीं होगी।जोरों से सांस ली और कुछ कहने की हिम्मत जुटा रहा था। लेकिन कह नहीं पाया।"

उसने कहा। "आप को कुछ कहना है।"

- "जी। कैसे बताऊं। समझ नहीं आ रहा।"
- "जो दिल में है। बता दो। मुझे बुरा नहीं लगेगा। आदत पड़ी है सुनने की।"
- "खुशी। मुझे आप से प्रेम है।"
- "आप क्यां कह रहे हैं। पता है आप को। होश में हैं आप।"
- "हां। मैं होश में हूं। मुझे कई दिनों से दिल की बात बतानी थी। मैं डर के मारे नहीं बता पाया। मुझे समाज। परिवार का डर नहीं था। आप को कैसा लगेगा इस बात का डर था।"
- "स्वराज। मैं आप से प्रेम नहीं करती।"
- "क्यों?मुझ में कमियां हैं। होगी भी!हर मनुष्य में कुछ कमियां रहती हैं। मैं आपको पसंद नहीं हूं। तो आप को भूलाने की कोशिश करूंगा।"

- "ऐसा कुछ नहीं।आप को कोई भी लड़की पसंद करेगी।आप में कई अच्छे गुण हैं। मैं ही आपके लायक नहीं हूं।"
- "मुझे आप पसंद हैं। मैं आपसे विवाह करना चाहता हूं। सोचने के लिए समय चाहिए। तो आप लीजिए। मुझे आपके हां का इंतजार रहेगा।"
- "स्वराज। मैं हिजड़ा। छक्का। किन्नर। नपुंसक। थर्ड जेंडर। तृतीय पंथी आदि नामों से प्रसिद्ध हूं।मुझे मेरे परिवार ने नहीं स्वीकारा। तो समाज। आपका परिवार कैसे स्वीकार करेंगा।"
- "खुशी। आप कौन हो? यह मुझे मायने नहीं रखता।आप मुझे पसंद है। मैं तुम्हें दिल से चाहता हूं। मैं आपके बिना नहीं जी सकता।"
- "मैं ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं हूं।"
- "मुझे कोई दिक्कत नहीं।मैं आपको पढ़ाऊंगा।मेरी मां समाजसेविका है।हमारे रिश्तें को स्वीकार करेगी।मां भी तृतीय पंथियों के लिए निरंतर कार्य करती आई है।"
- "मुझे अभी से डर लग रहा है कि आपकी मां ने शादी को अनुमति नहीं दी तो।"
- "मैं मां। परिवार को मनाऊंगा।मैं आपके साथ हूं।रही बात समाज की। इससे मुझे कोई मतलब नहीं।"
- "आप मुझे पत्नी के रूप में स्वीकार कर रहें हो। मैं भाग्यशाली हूं।आप मेरे लिए इतना कर रहें हैं। मुझे बहुत ख़ुशी हुई। मैं तयार हूं शादी के लिए। किन्तु मेरा साथ कभी मत छोड़ना।साथ छोड़ा तो। मैं जी नहीं सकती। पूरी तरह टूटकर बिखर जाऊंगी।"
- "साथ कभी नहीं छोडूंगा।"
- "स्वराज। तृतीय पंथियों के बुरे हालात है।उनका जीवन नरक बना है। समाज बुरी नजरों से देखता है उनके तरफ। वे जीकर भी। मरे हुए हैं।वेश्या से भी बत्तर ज़िंदगी है उनकी।मैंने भी बहुत वेदना सही है। लोग क्या-क्या कहते हैं और क्या-क्या करते हैं। मुझे मालूम है।मैं बया भी नहीं कर सकती। हम सिंग्नल। रेल में शौक से खड़े नहीं रहते। हमारी मजबूरी है।उन्हें कोई काम पर रखता नहीं।रख भी लिया। तो शोषण ही करता। शारीरिक और मानसिक।मैं उनके के लिए कार्य करना चाहती हूं।"
- "तुम्हारा साथ निरंतर दूंगा। मैं भी उनके अधिकार के लिए संघर्ष करता रहूंगा।"
- "स्वराज। अभी तक तृतीय पंथियों के लिए कई कानून। बील पास हुए। किन्तु कोई फायदा नहीं।अप्रैल। 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने किन्नर को तीसरे लिंग के रूप में पहचान दी। किन्नर को जन्म प्रमाणपत्र। राशनकार्ड। पासपोर्ट। ड्राइविंग लाइसेंस आदि में तीसरे लिंग के तौर पर पहचान हासिल करने का अधिकार मिला। विवाह करना। तलाक देना। संतान को गोद लेना आदि अधिकार प्राप्त हुए। कुछ वर्ष पश्चात यानी 2016 में "ट्रांसजेंडर पर्सन्स"बील पास हुआ। जिससे उन्हें शिक्षा। सामाजिक। आर्थिक आदि क्षेत्र में खुलकर जीने का अधिकार मिला।कालांतर से यानी 2019 में "ट्रांसजेंडर व्यक्ति अधिनियम" बना। इससे तृतीय पंथी के अधिकार का संरक्षण होने वाला था।इन तिन्हों घटना पर प्रकाश डालने के पश्चात समझ आता है कि तृतीय पंथियों की समस्या कम नहीं हुई। बढ़ी है।"
- "खुशी। आप सही कह रही हैं। कानून सिर्फ कागज़ पर है। अस्तित्व में नहीं।कानून का अमल हो। इस लिए हम संघर्ष करते रहेंगे।"
- "स्वराज। तृतीय लिंग को सही मायने में मान्यता ही नहीं मिली।बस। रेल। विमान आदि में सफ़र करने के लिए आरक्षित सीट करने की सुविधा उपलब्ध रहती हैं। उसमें थर्ड जेंडर पर्याय ही नहीं।इन उदाहरण से उनका अस्तित्व समझ आता हैं।"
- "सही है खुशी। मैंने भी थर्ड जेंडर के संदर्भ में जानकारी हासिल की है।उनकी दयनीय अवस्था है।भारत में वर्ष 2009 में लगभग थर्ड जेंडर वर्ग की संख्या पांच लाख थी। यह मैंने एक रिपोर्ट में पढ़ा है।उन्हें न्याय दिलाना ही हमारा मकसद हैं। बहुत समय बीता;हम रास्ते पर खड़े हैं।गहन विषय पर चर्चा हुई।अच्छा लगा। चलता हूं। मां राह देखती होगी। मां को सब बताता हूं। हमारे संदर्भ में। कुछ ही दिनों में मां आप से मिलने आएगी।"

खुशी प्रसन्न थी। मन ही मन हंसते घर जा रही थी। स्वराज की मां कब आएगी। मैं उनकी अच्छी बहू बनूंगी। परिवार में घूलमिलकर रहूंगी।स्वराज को शिकायत करने का मौका नहीं दूंगी।इन सपनों में खुशी घूलमिल गयी।घर कब आया पता भी नहीं चला।हर दिन स्वराज के मां का इंतजार करती।बहुत दिन गुजरे। स्वराज की मां नहीं आई।स्वराज भी दिखाई नहीं दिया। ख़ुद को ही समझाती। होंगे कुछ काम में।

एक दिन सुबह-सुबह बस्ती में एक स्त्री आई। नाम। घर का पता पूछने लगी।मैं दूर से सब देख रही थी।वह घर की तरफ आती दिखाई दी।मैंने ख़ुद को ठीक ठाक किया। बेल बजी। मैंने दरवाजा खोला।तो सामने महिला दिखाई दी। मैंने नमस्कार किया। अंदर बुलाया।चाय पानी की। कुछ समय बाद खुशी ने पूछा। "आपका नाम! क्या काम है?"
"स्त्री ने कहा। " मैं स्वराज की मां।"
"ओह!आप। नमस्कार मां जी।"खुशी ने प्यार से कहा।
- "आप क्या करती है?"
- "स्वराज ने बताया नहीं।"
-" बताया।तेरे मुंह से सुनना है।"
-" मैं ग्रेजुएट हूं। लेकिन।।। "
- "लेकिन क्या?बताओ।"
- "मैं किन्नर हूं।"
- " तेरी मेरे बेटे से शादी।।। यह सोच भी कैसे सकती है।"
- "हम दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। साथ रहना चाहते है।"
- "यह कभी संभव नहीं।"
- "आखिर क्यों मां जी?"
- "हम ठहरे बड़े खानदान के। तू है की...। "

- "इसमें मेरा क्या कसूर।आप तो तृतीय पंथियों के लिए कार्य करती हैं।और विचार ऐसे।"
- "विचार। कार्य छोड़ दो। मैं क्या कहती हूं। गौर से सूनो। मेरे बेटे के ज़िंदगी से दूर जाने के लिए तूझे क्या चाहिए?"
- "मां जी। मुझे स्वराज चाहिए। और कुछ नहीं।"
- "उसे छोड़कर। कुछ भी !"
- "मां जी। आप जैसे कहेगी। वैसे मैं रहूंगी। मुझे आपके बेटे से अलग मत कीजिए। मैं उसके बिना जी नहीं सकती।"
- "तू सब कुछ करेगी। मेरे परिवार और उसके लिए।लेकिन मेरे बेटे को पिता होने का सुख कभी नहीं दे सकती।"

यह सुनकर खुशी कुछ देर नि:शब्द रही।उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।सिर्फ स्वराज के मां तरफ देखती रही।बेहोश हुई।घर में शांतता फैल गई। जैसे घर में कोई मरा हो।कुछ देर बाद स्वराज की मां चली गई।

मां शादी को अनुमति देगी या नहीं। यह सवाल स्वराज को सता रहा था।घर पर अकेला था वह। चिंता में डूबा। इतने में घर के बाहर गाड़ी की आवाज आई।वह जाग गया। खिड़की से बाहर देखा। तो मां की गाड़ी दिखाई दी। कुछ समय बाद मां ने बेल बजाई। स्वराज ने जल्द से दरवाजा खोला।मां कुछ भी न बोले हॉल में जाकर बैठ गई। चेहरे पर गुस्सा था। स्वराज ने कहा। "मां पानी लाऊ।"

-" कोई जरूरत नहीं।"

-"मां। आप शांत हो जाइए।मुझसे कोई गलती हुई?"

-"तुम से नहीं। मुझ से हुई। संस्कार देने में।"

-"मां क्या हुआ? साफ-साफ बताईए।"

-"तुझे लड़की नहीं मिली। प्रेम करने।"

-"मां। मुझे पता था। आप ऐसे ही बोलेगी।इन कारणवश बताया नहीं था मैंने।"

-"स्वराज। दूसरी लड़की से शादी कर।"

-"नहीं! मैं उसी से शादी करूंगा। अन्यथा किसी से नहीं।"

-"परिवार की इज्जत मिट्टी में मिलानी है तुझे। यही ठान लिया है न।"

-" मां। तुझे जो समझना है समझ। मैं कोई गलत कार्य नहीं कर रहा।"

-"तुझे शादी उसी से करनी है। तो घर से निकल जा। कभी चेहरा मत दिखाना मुझे।मेरी मृत्यु हो जाएगी। तब भी मत आना।"

-"मां। ख़ुद का ख्याल रखना। हो सके तो मुझे माफ़ करना क्योंकि मैं तूम्हारे नज़र में गुन्हेंगार हूं।"

स्वराज घर से निकल पड़ा। खुशी के बस्ती की तरफ। पैदल। समय रात का था।दो बजे घर पहुंचा। दरवाजा खटखटाया। देर से दरवाजा खुला। सामने स्वराज देखकर खुशी घबरा गई। उसे लगा कि स्वराज मां से झगड़ा करके ही आया है। उन्हें अंदर लिया। पानी दिया। कुछ सम के पश्चात खुशी ने पूछा। "क्या हुआ?इतनी रात आप।। । "

-"खुशी। मैंने जो सोचा था वैसे कुछ नहीं हुआ। मां ने शादी को नकारा। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं। इसी वजह से। मैं मां का घर छोड़कर आया हूं।"

- "यह आपने अच्छा नहीं किया। मां को दु:खाना नहीं चाहिए था।"
- " मेरे पास दूसरा कोई रास्ता नहीं था। मैं घर छोड़कर आया हूं। मां के प्यार को नहीं।सब ठीक ठाक होने के पश्चात घर जाऊंगा।खुशी। आपकी अनुमति हो। तो हम कल कोर्ट मैरेज करेंगे।"
- "जो आपको सही लगे।"

दोस्तों की सहायता से शादी हुई।ज़िंदगी की नई शुरुआत की।किराए के घर में रहने लगे। कुछ वर्ष बाद स्वराज डाक्टर बना। दूसरों के अस्पताल में जॉब करने लगा।खुशी ने भी आगे की पढ़ाई जारी रखी। कालांतर से बैंक में शाखा प्रमुख पद पर विराजमान हुई। काम से समय निकालकर तृतीय पंथियों के लिए निरंतर कार्य करती रही। कार्य में स्वराज भी सहयोग देता रहा।देखते- देखते दोनों ने बहुत प्रगति की। स्वराज ने ख़ुद का अस्पताल बनाया। खुशी ने तृतीय पंथियों के लिए "समानता ट्रस्ट"नामक संस्था की स्थापना की।वहां कई तृतीय पंथी रहने लगे। जिन्हें कोई स्वीकार नहीं करता। उन्हें समानता ट्रस्ट स्वीकारता था। छूट्टी के दिन खुशी वही रहती।

खुशी के शादी को दस वर्ष हुए थे।घर में संतान न होने से खुशी दु:खी रहने लगी।किसी को बता भी नहीं पाती। एक दिन स्वराज से हिम्मत करके कहने लगी। "ज़िंदगी में संतान आवश्यक है।आपको कभी नहीं लगा। संतान हो।"

- "खुशी। समाज में अनेक स्त्रिया है। जो बच्चें को जन्म नहीं दे सकती। स्त्री होकर भी।तू दु:खी क्यों होती है।तेरी शरीर रचना ही ऐसी है। तू जन्मता: संतान देने में असमर्थ हैं। इसमें तूम्हारा क्या दोष। हम अनाथालय से संतान लाएंगे। वह भी लड़की। माता-पिता का दायित्व निभाएंगे।"

-"आप बहुत समझदार है। साथ ही परिवर्तन वादी भी! मैं समाज की चौख़ट में कैद थी।मेरी जैसी अनेक हैं।कई परंपरा ने गुलाम बनाया था मुझे। अंधश्रद्धा के नाम पर। आपने सामाजिक चौख़ट तोड़कर। मुझ से शादी की। ख़ुद के पैरों पर मुझे खड़ा किया।व्यक्तित्व को पहचान दिलाई।आज मैं जो कुछ हूं। आपके खातिर।"

खुशी। मुझे जो अच्छा लगा। मैंने किया। मुझसे पहले भी कई लोगों ने तृतीय पंथियों से विवाह किया है। इसमें नया कुछ नहीं।यह समय की मांग है। समाज की मानसिकता बदलनी चाहिए। मुझे आप जैसे कई व्यक्तियों का सहारा बनना है। उन्हें काबिल बनाना है।भले ही समाज की मानसिकता न बदले। मैं निरंतर कार्य करूंगा।

भविष्य में तृतीय पंथियों को समाज में मान-सम्मान मिलेगा। उन्हें उनके अधिकार मिलेंगे। तृतीय पंथियों को संविधान ने अधिकार देने के बावजूद भी समाज अधिकार क्यों नहीं दे रहा। इसे जिम्मेदार कौन है? और ऐसा क्यों हो रहा हैं।। । ?

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : **978-81-964179-7-0**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 154
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

भ्रष्टाचार

(लघुकथा)

मोहन रोज घर से कार्यालय तक का लगभग बीस किलोमीटर का सफर बस द्वारा तय करता था। पिछले दो सालों से वह एक ही बस में सफर कर रहा था। यही बस उसे सुबह कार्यालय के लिए शूट भी करती थी।

बस का किराया बीस रुपए था।

परंतु कंडक्टरों के साथ परिचय होने के कारण और रोज की सवारी होने के कारण वह दस रुपए में काम चला लेता था।

आज जब वह बस में चढ़ा तो कंडक्टर नया था।

बस कंडक्टर ने मोहन से बीस रुपए मांगे तो मोहन को कुछ अटपटा लगा। उसने कहा -"भाई साहब मैं रोज दस रुपए में सफर करता हूं। पिछले दो साल से इसी बस में आता जाता हूं।"

कंडक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा-" सर बीस रुपए ही लगेंगे।"

बीस रुपए सुनते ही मोहन का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उसने जेब से बीस रुपए निकालकर कंडक्टर को थमा दिए।

कंडक्टर ने पैसे थैले में डाले और दूसरी टिकटें काटने में लग गया। उसने उसे टिकट नहीं दिया।

मोहन ने साथ बैठी सवारी के साथ देश में व्याप्त भ्रष्टाचार पर भाषण झड़ना शुरू कर दिया।

थोड़ी देर बाद जब कंडक्टर टिकट काटकर वापस आया तो उसने उसे बड़े रौब से कहा-"भाई पैसे तो बीस रुपए ले लिए टिकट भी दे दो। "

मोहन के चेहरे पर आए हुए गुस्से को भांपते हुए कंडक्टर ने टिकट की जगह दस रुपए मोहन के हाथ पर रख दिए।

मोहन के चेहरे का रंग एकदम बदल गया।

थोड़ी देर पहले जो साथ वाली सवारी के साथ देश में व्याप्त भ्रष्टाचार पर भाषण झाड़ रहा था ,अब उसके भाषण का टॉपिक बदल गया था।

अशोक दर्द

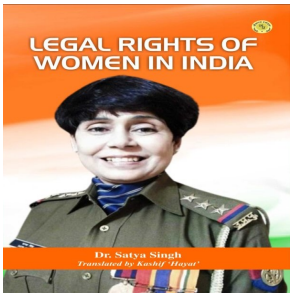

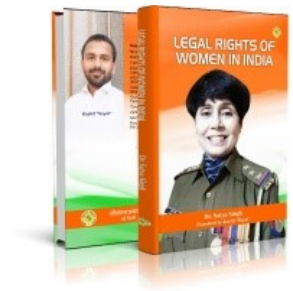

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982